



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 104]

नई दिल्ली, शुक्रवार, मार्च 29, 2019/चैत्र 8, 1941

No. 104]

NEW DELHI, FRIDAY, MARCH 29, 2019/CHAITRA 8, 1941

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(व्यापार एवं उपचार महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 29 मार्च, 2019

अंतिम जांच परिणाम

विषय: इंडोनेशिया के मूल की अथवा वहां से निर्यातित "सैकरिन" के आयातों के संबंध में पाटनरोधी शुल्क जांच।

क. मामले की पृष्ठभूमि

1. **फा. सं. 6/13/2018- डीजीएडी** : समय- समय पर यथा संशोधित सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (इसके बाद इसे अधिनियम के रूप में भी कहा गया है) और समय- समय पर यथा संशोधित तत्संबंधी सीमा शुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 (इसके बाद इसे नियम के रूप में भी कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए, निर्दिष्ट प्राधिकारी (इसके जिसे बाद प्राधिकारी भी कहा गया है) ने इंडोनेशिया के मूल की अथवा वहां से निर्यातित "सैकरिन" (इसके बाद जिसे संबद्ध वस्तु भी कहा गया है) के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश की थी।
2. यतः मैसर्स स्वाती पेट्रो प्रोडक्ट्स प्रा० लि० (इसके बाद इसे "याचिकाकर्ता" अथवा "आवेदक" के रूप में भी कहा गया है) ने निर्दिष्ट प्राधिकारी (इसके बाद इन्हें "प्राधिकारी" के रूप में भी कहा गया है) के समक्ष एक याचिका दाखिल की है, जिसमें इंडोनेशिया (इसके बाद इसे संबद्ध देश के रूप में भी कहा गया है) के मूल की अथवा वहां से निर्यातित "सैकरिन" (इसके बाद इसे संबद्ध वस्तु के रूप में भी कहा गया है) के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाने के लिए समय- समय पर यथा संशोधित सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (इसके बाद इसे अधिनियम के रूप में भी कहा

गया है) और समय- समय पर यथा संशोधित तत्संबंधी सीमा शुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एक संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 (इसके बाद इसे नियम के रूप में भी कहा गया है) के अनुसार पाटनरोधी जांच शुरू करने और पाटनरोधी शुल्क लगाने की मांग की गई है।

3. और, यतः प्राधिकारी ने, याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत किए गए पर्याप्त साक्ष्य के आधार पर भारत के राजपत्र में प्रकाशित दिनांक 14 जून, 2018 की अधिसूचना सं. 6/13/2018- डीजीएडी के तहत संबद्ध देश के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के कथित पाटन की मौजूदगी, मात्रा और उसके प्रभाव का निर्धारण करने तथा पाटनरोधी शुल्क की ऐसी मात्रा की सिफारिश करने के लिए, जो शुल्क यदि लगाया जाता है तो घरेलू उद्योग की कथित क्षति को दूर करने के लिए पर्याप्त होता, उपरोक्त नियमावली के नियम 5 के अनुसार संबद्ध जांच शुरू करने के लिए एक सार्वजनिक सूचना जारी की है।

ख. प्रक्रिया :

4. संबद्ध जांच के संबंध में प्राधिकारी द्वारा नीचे दी गई प्रक्रिया का अनुसरण किया गया है :

- क) प्राधिकारी ने भारत में संबद्ध देश के दूतावास को, उपरोक्त नियम 5 के उप नियम (5) के अनुसार जांच शुरू करने के लिए कार्यवाही शुरू करने से पूर्व वर्तमान पाटनरोधी आवेदन प्राप्त होने के संबंध में अधिसूचित किया था।
- ख) प्राधिकारी ने संबद्ध वस्तुओं के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच शुरू करने के लिए भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित दिनांक 14 जून, 2018 की एक सार्वजनिक सूचना जारी की थी।
- ग) प्राधिकारी ने भारत में संबद्ध देश के दूतावास, संबद्ध देश से ज्ञात उत्पादकों / निर्यातकों, ज्ञात आयातकों / प्रयोक्ताओं और घरेलू उद्योग के साथ- साथ अन्य घरेलू उत्पादकों को आवेदकों द्वारा उपलब्ध कराए गए पतों के अनुसार अधिसूचना जारी करने की एक प्रति भेजी भी और उन्हें जांच शुरू करने की अधिसूचना जारी होने के 40 दिनों के भीतर लिखित में अपने विचार भेजने का अनुरोध किया था।
- घ) प्राधिकारी ने कथित नियमावली के नियम 6 (3) के अनुसार भारत में संबद्ध देश के दूतावास और ज्ञात उत्पादकों / निर्यातकों को आवेदन के अगोपनीय अंश की एक प्रति भेजी थी।
- ङ) भारत में संबद्ध देश के दूतावास को निर्धारित समय- सीमा के भीतर प्रश्नावली का उत्तर भेजने के लिए उनके देशों से निर्यातकों / उत्पादकों को परामर्श देने का भी अनुरोध किया गया था। उत्पादकों / निर्यातकों को भेजे गए पत्र तथा प्रश्नावली की एक प्रति भी उन्हें संबद्ध देश से ज्ञात उत्पादकों / निर्यातकों के नाम व पतों सहित भेजी गई थी।
- च) प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के नियम 6 (4) के अनुसार संबद्ध देश में निम्नलिखित ज्ञात उत्पादकों / निर्यातकों को संगत सूचना प्राप्त करने के लिए निर्यातक प्रश्नावली भेजी :
 - (i) पी टी गोल्डन सारी
 - (ii) पी टी बतांग एलूम इंडस्ट्री
- छ) इसके उत्तर में संबद्ध देश से निम्नलिखित निर्यातकों / उत्पादकों ने निर्धारित फॉर्मेट में निर्यातक प्रश्नावली उत्तर दाखिल किए हैं :
 - (i) पी टी गोल्डन सारी
 - (ii) पी टी बतांग एलूम इंडस्ट्री
- ज) प्राधिकारी ने नियमावली के नियम 6 (4) के अनुसार आवश्यक सूचना के लिए भारत में संबद्ध वस्तुओं के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों / प्रयोक्ताओं को आयातक प्रश्नावली भेजी थी :
 - (i) ईगल ट्रेडिंग कंपनी

- (ii) कोलगेट पाल्मोलिव इंडिया लि०
 - (iii) जनरल इंपोर्ट कं. इंडिया
 - (iv) जगमोहनदास एंड संस
 - (v) सी जे शाह एंड कं.
 - (vi) नेक्टर ड्रग्स प्रा० लि०
 - (vii) प्रोक्टर एंड गैबल हाइजीन एंड हेल्थ
 - (viii) नीरू मार्केटिंग प्रा० लि०
 - (ix) स्पेशिलिटी केमिकल्स
 - (x) नंदलाल बंकतलाल प्रा० लि०
 - (xi) सन शाइन कॉस्मेटिक्स लि०
 - (xii) ग्रीन एंड वेल इंडिया लि०
- झ) इसके उत्तर में किसी भी आयातक / प्रयोक्ता ने कोई भी उत्तर नहीं दिया है और आयातक प्रश्नावली उत्तर भी दाखिल नहीं किया है। तथापि, मैसर्स संदीप आर्गेनिक्स लि० द्वारा विधिक रूप में अनुरोध दाखिल किए गए हैं।
- ज) प्राधिकारी ने हितवद्ध पक्षकारों द्वारा निरीक्षण किए जाने के लिए रखी गई एक सार्वजनिक फाइल के रूप में विभिन्न हितवद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य का अगोपनीय अंश उपलब्ध कराया है।
- ट) विगत तीन वर्षों और जांच की अवधि के लिए संबद्ध वस्तुओं के आयातों के सौदा- वार ब्यौरे प्रदान करने के लिए वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डी जी सी आई एंड एस) तथा प्रणाली महानिदेशालय को अनुरोध किया गया था, जो प्राधिकारी को प्राप्त हो गए थे। प्राधिकारी ने आयातों की मात्रा की गणना करने के लिए तथा सौदों की विधिवत जांच करने के बाद आवश्यक विश्लेषण करने के लिए वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डी जी सी आई एंड एस) के डाटा पर भरोसा किया है।
- ठ) सामान्यतः सहमत लेखांकन सिद्धांतों (जी ए ए पी) तथा पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध- III के आधार पर, घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना के आधार पर उत्पादन की लागत और भारत में संबद्ध वस्तुओं के निर्माण एवं बिक्री की लागत के आधार पर गैर क्षति कीमत (एन आई पी) की गणना की गई है ताकि यह पता लगाया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग की क्षति को दूर करने के लिए पर्याप्त होगा।
- ड) प्राधिकारी द्वारा आवेदक घरेलू उद्योग द्वारा प्रदान की गई सूचना का जितना आवश्यक समझा गया, स्थल पर सत्यापन करके वास्तविक निरीक्षण किया गया था। वर्तमान अंतिम जांच परिणाम के प्रयोजन से केवल ऐसी सत्यापित सूचना पर यथा लागू आवश्यक सुधार के साथ भरोसा किया गया है।
- ढ) उत्पादकों / निर्यातकों द्वारा प्रदान की गई सूचना का प्राधिकारी द्वारा आवश्यकता के अनुसार सत्यापन किया गया था और वर्तमान अंतिम जांच परिणाम के प्रयोजन से उस पर भरोसा किया गया है।
- ण) वर्तमान पाटनरोधी जांच के प्रयोजन से जांच की अवधि 01 अप्रैल, 2017 से लेकर 31 मार्च, 2018 तक (12 माह) की है। तथापि, क्षति जांच की अवधि पर वर्ष 2014-15, 2015-16, 2016-17 की अवधि और जांच की अवधि के रूप में विचार किया गया है।
- त) पाटनरोधी नियमावली के नियम 6 (6) के अनुसार, प्राधिकारी ने दिनांक 11 सितम्बर, 2018 को हुई एक सुनवाई में अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए सभी हितवद्ध पक्षकारों को भी अवसर प्रदान किए थे। सभी हितवद्ध पक्षकारों, जिन्होंने मौखिक सुनवाई में भाग लिया था, को मौखिक रूप से प्रस्तुत किए गए अपने विचार लिखित में भी दाखिल करने का परामर्श दिया गया था। हितवद्ध पक्षकारों को प्रतिवादी हितवद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए लिखित अनुरोधों के लिए प्रत्युत्तर अनुरोध दाखिल करने के लिए भी एक अवसर प्रदान किया गया था।

- थ) हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त लिखित अनुरोध / प्रत्युत्तर अनुरोध में किए गए तर्कों पर वर्तमान अंतिम जांच परिणाम में विचार किया गया है।
- द) इस जांच की अवधि के दौरान हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों को, जहां वे संगत पाए गए, उन्हें प्राधिकारी द्वारा इस अंतिम जांच परिणाम में शामिल किया गया है। हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रदान की गई सूचना की, गोपनीयता के दावे की पर्याप्तता के संबंध में जांच की गई थी। प्राधिकारी ने इससे संतुष्ट होने पर आवश्यकतानुसार गोपनीयता के दावों को स्वीकार किया है और ऐसी सूचना को गोपनीय माना है तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों को प्रकट नहीं किया है। जहां कहीं भी संभव हुआ, गोपनीय आधार पर सूचना प्रदान करने वाले पक्षकारों को गोपनीय आधार पर दाखिल की गई सूचना का पर्याप्त अगोपनीय अंश प्रदान करने का निदेश दिया गया था।
- ध) जहां कहीं भी हितबद्ध पक्षकार ने आवश्यक सूचना प्रदान करने से मना कर दिया अथवा वर्तमान जांच के दौरान आवश्यक सूचना प्रदान नहीं की अथवा जांच को काफी बाधित किया है, प्राधिकारी ने ऐसे पक्षकारों को असहयोगी माना है और उपलब्ध तथ्यों के आधार पर अंतिम जांच परिणाम में दर्ज किया है।
- न) प्राधिकारी द्वारा संबद्ध जांच के लिए अपनाई गई विनियम दर 01 यू एस डॉलर = 65.33 रूपए है।

ग. विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु :

ग.1. घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध :

5. विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध और प्राधिकारी द्वारा संगत पाए गए अनुरोध इस प्रकार हैं :

- क) सैकरिन एक गैर- पोषक मिठास है और गन्ने की चीनी के लिए एक कम कैलोरी का विकल्प है। यह एक सफेद क्रिस्टलीय पाउडर के रूप में होता है और गंधहीन होता है। सैकरिन में चीनी से 500 गुणा से भी अधिक मिठास होती है। सैकरिन को दो प्रकार से विभाजित किया जा सकता है, अर्थात् घुलनशील सैकरिन और अघुलनशील सैकरिन ।
- ख) सैकरिन का दो भौतिक रूपों में उत्पादन किया जाता है, अर्थात् दानेदार सैकरिन और पाउडरयुक्त सैकरिन । दानेदार रूप में सोडियम सैकरिन का उपयोग ऐसी स्थिति में किया जाता है, जहां सैकरिन को घोला जाना हो, जिसे पाउडर रूप में बनाने के लिए ग्राइंड करके और स्प्रे ड्राई किया गया है जिसका उपयोग ड्राई मिक्स तथा फार्मास्यूटिकल्स में किया जाता है।
- ग) सैकरिन का उपयोग अनेक उद्योगों के लिए किया जा सकता है, जैसे खाद्य और पेय, व्यक्तिगत देख रेख के उत्पादों, टेबल टॉप मिठास, इलेक्ट्रो प्लेटिंग ब्राइटनर, इत्यादि । औद्योगिक प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त सैकरिन और खाद्य एवं पेय पदार्थों के लिए प्रयुक्त सैकरिन में अंतर सैकरिन की शुद्धता का होता है।
- घ) सैकरिन को उप शीर्ष 29251100 के तहत सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 में अध्याय 29 के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है।
- ङ) जबकि संबद्ध देश भिन्न था, लेकिन पूर्व जांच में प्रदान किए गए उत्पाद संबंधी विवरण वही रहे। विचाराधीन उत्पाद के लिए आयात की मात्रा बहुत ही कम देखी गई, लेकिन विशिष्ट प्रकार के उत्पादों के लिए ऐसा नहीं था। वर्तमान मामले में, दोनों ही प्रकार के सैकरिन अर्थात् घुलनशील सैकरिन और अघुलनशील सैकरिन विचाराधीन उत्पाद के ही भाग हैं। इसके अलावा, भारत में आयात और घरेलू उद्योग का उत्पादन दोनों में ही अघुलनशील सैकरिन शामिल है और इस प्रकार उन्हें इससे बाहर करने का कोई आधार नहीं है।

- च) घरेलू उद्योग सभी मेश साइज के सैकरिन का उत्पादन करता है। ऐसा कोई साक्ष्य सामने नहीं लाया गया है कि घरेलू उद्योग द्वारा तैयार किए गए उत्पाद का पेय उद्योग द्वारा उपयोग नहीं किया जा सकता।
- छ) ब्ल्यू सर्कल विभिन्न देशों में पेय उद्योग के लिए संबद्ध वस्तुओं का निर्यात करता आ रहा है।
- ज) ऐसा नहीं है कि इंडोनेशिया के उत्पादकों द्वारा प्रयुक्त उत्पादन प्रक्रिया छोटी है, लेकिन यह ऐसा मामला है कि वास्तव में इंडोनेशिया के उत्पादक सैकरिन का उत्पादन ही नहीं कर रहे हैं और केवल अंतिम अवस्था में उत्पाद का आयात कर रहे हैं और मामूली सा मूल्य बढ़ाकर भारत को निर्यात कर रहे हैं। यह इंडोनेशिया के उत्पादक द्वारा किए गए मूल्य वर्धन से स्पष्ट हो जाता है।

ग.2 अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध :

- 6 विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु के संबंध में निर्यातकों, आयातकों, उपभोक्ताओं और अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध और प्राधिकारी द्वारा संगत पाए गए अनुरोध इस प्रकार हैं :
 - क) सोडियम / घुलनशील सैकरिन और अघुलनशील सैकरिन की दिखावट, गुणवत्ता, उपयोग और कीमत में अंतर होता है, क्योंकि सोडियम घुलनशील में 15 प्रतिशत पानी होता है और यह 15 प्रतिशत तक सस्ता होता है। इंडोनेशिया से अघुलनशील सैकरिन का आयात जांच की अवधि में शून्य रहा है। इस प्रकार अघुलनशील सैकरिन को वर्तमान जांच के दायरे से बाहर किया जाना चाहिए।
 - ख) पी टी गोल्डन सारी के मेश साइज में अंतर होता है और यह पी टी गोल्डन सारी द्वारा उत्पादित ऐसा मेश साइज है जिसे पेय उद्योग में अधिमानता दी जाती है।
 - ग) इंडोनेशिया के निर्यातकों की उत्पादन प्रक्रिया छोटी होती है, क्योंकि वे अर्ध प्रसंस्कृत कच्ची सामग्री का उपयोग करते हैं।

ग.3. प्राधिकारी द्वारा जांच :

7. वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद इंडोनेशिया के मूल की अथवा वहां से निर्यातित "सभी प्रकार की सैकरिन" है। "सैकरिन एक गैर- पोषक मिठास है और इसे गन्ने की चीनी के विकल्प के रूप में कम कैलोरी वाला माना गया है। प्राथमिक तौर पर सैकरिन दो प्रकार का होता है अर्थात् घुलनशील और अघुलनशील। बाजार के तात्पर्य से घुलनशील सैकरिन को सोडियम सैकरिन कहा जाता है जबकि अघुलनशील सैकरिन को सैकरिन अथवा सैकरिन एसिड कहा जाता है। सोडियम सैकरिन के अलावा, सैकरिन के अन्य प्रकार भी हो सकते हैं जैसे कैल्सियम और जिंक सैकरिन । सैकरिन के दो भौतिक रूप होते हैं अर्थात् दानेदार और पाउडर । सोडियम सैकरिन दानेदार रूप में ऐसी स्थिति में उपयोग में लाई जाती है, जहां सैकरिन को घोला जाना हो, जिसे पाउडर रूप में बनाने के लिए ग्राइंड करके और स्त्रे ड्राई किया गया है जिसका उपयोग ड्राई मिक्स तथा फार्मास्यूटिकल्स में किया जाता है। सैकरिन का उपयोग अनेक उद्योगों में किया जाता है जैसे खाद्य एवं पेय, व्यक्तिगत देख रेख के उत्पादों, टेबल टॉप मिठास, इलेक्ट्रो प्लेटिंग ब्राइटनेस, फार्मास्यूटिकल्स इत्यादि। सैकरिन में चीनी से 500 गुणा अधिक मिठास होता है। सभी प्रकार के सैकरिन वर्तमान जांच के दायरे में आते हैं..... "
8. प्राधिकारी द्वारा यह नोट किया गया है कि चीन से संबद्ध वस्तुओं के आयात पहले भी 2017 में समाप्त की गई पिछली निर्णायक समीक्षा जांच में पाटनरोधी शुल्क के अध्याधीन रहे हैं। विचाराधीन उत्पाद का दायरा वही रखने का प्रस्ताव है जो पिछली समाप्त हुई जांचों में रखा गया था। प्राधिकारी ने दिनांक 30 दिसंबर, 2017 की अधिसूचना सं० 15/23/2016 - डीजीएडी के तहत यह नोट किया है कि :

" वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद चीन जन. गण. के मूल की अथवा वहां से निर्यातित "सभी प्रकार की सैकरिन" है। "सैकरिन एक गैर- पोषक मिठास है और इसे गन्ने की चीनी के विकल्प के रूप में कम कैलोरी वाला माना गया है। प्राथमिक तौर पर सैकरिन दो प्रकार का होता है अर्थात् घुलनशील सैकरिन और अघुलनशील सैकरिन । बाजार की भाषा में घुलनशील सैकरिन को सोडियम सैकरिन कहा जाता है जबकि अघुलनशील सैकरिन को सैकरिन अथवा

सैकरिन एसिड कहा जाता है। सोडियम सैकरिन के अलावा, सैकरिन के अन्य प्रकार भी हो सकते हैं जैसे कैल्सियम और जिंक सैकरिन। सैकरिन के दो भौतिक रूप होते हैं अर्थात् दानेदार सैकरिन और पाउडर सैकरिन। सोडियम सैकरिन दानेदार रूप में ऐसी स्थिति में उपयोग में लाई जाती है, जहां सैकरिन को घोला जाना हो, सैकरिन का उपयोग अनेक उद्योगों में किया जाता है जैसे खाद्य एवं पेय, व्यक्तिगत देख रेख के उत्पादों, टेबल टॉप मिठास, इलेक्ट्रो प्लेटिंग ब्राइटनेस, फार्मास्युटिकल्स इत्यादि। सैकरिन में चीनी से 500 गुणा अधिक मिठास होता है। सभी प्रकार के सैकरिन वर्तमान जांच के दायरे में आते हैं..... " एक निर्णायक समीक्षा होने के कारण विचाराधीन उत्पाद वही है जो पूर्व जांचों में था।

सैकरिन को उप शीर्ष सं. 29251100 के तहत सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 के अध्याय 29 के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है। घरेलू उद्योग ने विभिन्न अन्य टैरिफ उप शीर्षों के तहत भी संबद्ध वस्तुओं के आयातों का दावा किया है, जिसकी नीचे जांच की गई है। तथापि, सीमा शुल्क वर्गीकरण केवल संकेतात्मक हैं और जांचों के दायरे पर बाध्यकारी नहीं हैं।"

9. समान वस्तु के संबंध में पाटनरोधी नियमावली के नियम 2 (घ) के प्रावधान इस प्रकार हैं :

"समान वस्तु" से ऐसी वस्तु अभिप्रेत है जो भारत में पाटने के कारण जांच के अंतर्गत वस्तु के सभी प्रकार से समरूप या समान है अथवा ऐसी वस्तु के न होने पर अन्य वस्तु जोकि यद्यपि सभी प्रकार से समनुरूप नहीं है परंतु जांचाधीन वस्तुओं के अत्यधिक सदृश विशेषताएं रखती हैं;

10. जहां तक विचाराधीन उत्पाद के दायरे से अधुलनशील सैकरिन को बाहर करने के दावे का संबंध है प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि दोनों ही उत्पादों को अन्ततः मिठास के उपयोग के लिए प्रयोग में लाया जाता है। इस प्रकार मामूली से इस अंतर के अलावा, कि एक सैकरिन धुलनशील है और दूसरा अधुलनशील है, दोनों के प्रकारों में अन्य कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। इसके अलावा, संबद्ध प्रकार के असल उपयोगकर्ता सैकरिन के इन रूपों में कोई अंतर नहीं करते। इस प्रकार से विचाराधीन उत्पाद के दायरे से अधुलनशील सैकरिन को बाहर करने की मांग में कोई दम नहीं है।
11. इस तर्क के संबंध में कि पी टी गोल्डन सारी द्वारा उत्पादित मेश साइज अलग हैं और इसका उपयोग पेय पदार्थों के उद्योग में किया जाता है, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग सभी मेश साइज की संबद्ध वस्तुओं का उत्पादन करता है। इसके अलावा, घरेलू उद्योग ने दुनिया भर में पेय पदार्थों के उद्योगों के लिए संबद्ध वस्तुओं के निर्यातों को दर्शाने वाले साक्ष्य प्रदान किए हैं।
12. इस दावे के संबंध में कि इंडोनेशिया के उत्पादकों द्वारा प्रयुक्त प्रक्रिया भारत के उत्पादकों की प्रक्रिया से छोटी है। प्राधिकारी ने यह पुष्टि की है कि इंडोनेशिया के उत्पादकों द्वारा अपनाई गई उत्पादक प्रक्रिया छोटी है, क्योंकि वे सैकरिन के उत्पादन के लिए मध्यवर्ती उत्पादों का आयात कर रहे हैं।
13. रिकार्ड में उपलब्ध सूचना पर विचार करने के बाद प्राधिकारी ने यह पाया कि संबद्ध देश से निर्यातित विचाराधीन उत्पाद और घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध उत्पाद में कोई ज्ञात अंतर नहीं है। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तुएं भौतिक एवं रासायनिक विशिष्टताओं, कार्यों और उपयोगों, उत्पाद विनिर्देशनों, वितरण एवं विपणन तथा वस्तुओं के टैरिफ वर्गीकरण जैसी विशिष्टताओं के संदर्भ में तुलनीय है। दोनों ही तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से एक दूसरे के स्थान पर उपयोग में लाए जा सकते हैं। उपभोक्ता दोनों को ही एक दूसरे के स्थान पर उपयोग में ला रहे हैं।
14. प्राधिकारी यह मानने का प्रस्ताव करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तुएं पाटनरोधी नियमावली के अनुसार संबद्ध देश के निर्यातित विचाराधीन उत्पाद के समान वस्तुएं हैं।

घ. घरेलू उद्योग का दायरा और आधार :

घ.1. घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध :

15. घरेलू उद्योग के दायरे के संबंध में जांच की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध और आधार इस प्रकार हैं :

- क) मैसर्स स्वाति पेट्रो प्रोडक्ट्स प्रा० लि० द्वारा श्री वरदायिनी केमिकल्स इंडस्ट्री प्रा० लि०, ब्ल्यू सर्कल और ए एस कीमोफार्मा प्रा० लि० के समर्थन से आवेदन दाखिल किया गया था। इसके अलावा, दिनांक 10 अगस्त, 2018 के पत्र के तहत मै० ब्ल्यू सर्कल ऑर्गेनिक्स लि० की पूरी सूचना भी दाखिल की गई थी और इस प्रकार से इसे आवेदक घरेलू उद्योग का ही एक भाग माना जाना चाहिए।
- ख) घरेलू उद्योग ने न तो विचाराधीन उत्पाद का आयात किया है और न ही यह भारत में किसी आयातक अथवा संबद्ध देश के किसी निर्यातक से संबद्ध है। सूचना प्रदान करने वाले घरेलू उत्पादकों के उत्पादन में कुल भारतीय उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा शामिल है। इस प्रकार वे पात्र घरेलू उत्पादक होते हैं और पाटनरोधी नियमावली के तात्पर्य से आधार की अपेक्षा को पूरा करते हैं। चूंकि घरेलू उत्पादकों के उत्पादन में कुल भारतीय उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा शामिल है। अतः वे घरेलू उद्योग होने के लिए पात्र हैं।
- ग) मैसर्स वरदायिनी केमिकल्स वर्तमान जांच में एक याचिकाकर्ता नहीं है। इसलिए कंपनी द्वारा यदि कोई खरीद की गई है, तो वह इस जांच के लिए महत्वहीन है। यह दर्शाने के लिए ऐसा कोई भी साक्ष्य नहीं रखा गया है वरदायिनी ने अन्य हितबद्ध पक्षकारों से संबद्ध वस्तुओं की खरीद की है।
- घ) याचिकाकर्ताओं के पास कुल भारतीय उत्पाद का लगभग 80 प्रतिशत उत्पादन है। वरदायिनी ने याचिका का समर्थन किया है और अपनी विक्री तथा उत्पादन के ब्यौरे प्रदान किए हैं, जो इस बात को दर्शाता है कि इसके उत्पादन में गिरावट आई है। वरदायिनी के उत्पादन में कमी कम से कम क्षति को तो प्रमाणित करती है।
- ङ) यह मैसर्स विष्णु केमिकल्स पर है कि वह यह निर्णय करे कि उसे याचिका का समर्थन करना है अथवा नहीं। तथापि, यह तथ्य कि कंपनी ने याचिका का समर्थन नहीं किया है, यह साबित नहीं करता कि याचिकाकर्ताओं को क्षति का सामना करना पड़ा है।

घ.2. अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध :

16. अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं :

- क) वरदायिनी ने एक हितबद्ध पक्षकार से घुलनशील सोडियम की खरीद की है। इंडोनेशिया से सैकरिन के 4 आयातकों में से 01 आयातक ने आयात बंद कर दिया है।
- ख) निर्यातक / आयातक / घरेलू उद्योग का सत्यापन किया जाना है, क्योंकि वरदायिनी उत्पादन नहीं करता और विष्णु घरेलू उद्योग का समर्थन नहीं करता।

घ.3. प्राधिकारी द्वारा जांच

17. नियम 2 (ख) में प्रावधान इस प्रकार हैं :

“घरेलू उद्योग” का तात्पर्य ऐसे समग्र घरेलू उत्पादकों से है जो समान वस्तु के विनिर्माण और उससे जुड़े किसी कार्यकलाप में संलग्न हैं अथवा उन उत्पादकों से है, जिनका उक्त वस्तु का सामूहिक उत्पादन उक्त वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा बनता है, परन्तु जब ऐसे उत्पादक कथित पाटित वस्तु के निर्यातकों या आयातकों से संबंधित होते हैं या वे स्वयं उसके आयातक होते हैं। ऐसे मामले “घरेलू उद्योग” शेष उत्पादकों को समझा जाएगा।

18. वर्तमान आवेदन मैसर्स स्वाति पेट्रो प्रोडक्ट्स प्रा० लि० द्वारा मैसर्स श्री वरदायिनी केमिकल इंडस्ट्री इंडस्ट्री प्रा० लि०, मैसर्स ब्ल्यू सर्कल आर्गेनिक्स प्रा० लि० और मैसर्स ए एस कीमोफार्मा प्रा० लि० के समर्थन से दाखिल किया गया था। जांच के दौरान मैसर्स ब्ल्यू सर्कल आर्गेनिक्स ने दिनांक 10 अगस्त, 2018 के पत्र के तहत अपनी पूरी सूचना दाखिल की है। मैसर्स स्वाति पेट्रो प्रोडक्ट्स प्रा० लि० और मैसर्स ब्ल्यू सर्कल आर्गेनिक्स लि० का उत्पादन मिलकर कुल भारतीय उत्पादन का 75 प्रतिशत होता है और इस प्रकार से कुल भारतीय उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा होता

है। यह भी नोट किया जाता है कि मैसर्स ब्ल्यू सर्कल आर्गेनिक्स लि० ने 23.65 मी. टन संबद्ध वस्तुओं का आयात किया है, जो कि कुल भारत की मांग का 1 प्रतिशत से भी कम होता है और वह भी अग्रिम अधिकरण की योजना के तहत है। अतः प्राधिकारी ने इसे अस्वीकार करने का निर्णय लिया है और उन्हें घरेलू उद्योग का भाग माना है। कोई भी याचिकाकर्ता कंपनी भारत में किसी आयातक अथवा संबद्ध देश में किसी निर्यातक से संबद्ध नहीं है। इस प्रकार मैसर्स स्वाती पेट्रो प्रोडक्ट्स प्रा० लि० और मैसर्स ब्ल्यू सर्कल आर्गेनिक्स लि० पाटनरोधी नियमावली के नियम 2 (ख) के तहत घरेलू उद्योग हैं।

19. जहां तक मैसर्स वरदायिनी केमिकल इंडस्ट्री प्रा० लि० द्वारा गैर- उत्पादन के मामले पर दावा उठाए जाने का संबंध है, प्राधिकारी मैसर्स वरदायिनी केमिकल इंडस्ट्री प्रा० लि० द्वारा दाखिल किए गए समर्थन पत्र से यह नोट करते हैं कि विचाराधीन उत्पाद का अभी भी उत्पादन किया जा रहा है, तथापि, उसमें गिरावट आई है। जहां तक मैसर्स विष्णु केमिकल्स द्वारा की गई याचिका का समर्थन करने के अभाव में उठाए गए दावे का संबंध है, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि देश में संबद्ध उत्पाद के सभी ज्ञात उत्पादकों से सूचना मांगी गई थी, तथापि, उन्होंने सूचना प्रस्तुत नहीं की है। इसके अलावा, भागीदार उत्पाद पाटनरोधी नियमावली के तहत पात्रता और आधार की पात्रा के संदर्भ में 25 प्रतिशत और 50 प्रतिशत की पात्रता को पूरा करते हैं।

ड. गोपनीयता से संबंधित मुद्दे

घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध नीचे दिए गए अनुसार हैं :

20. पीटी. बटांग एल्स इंडस्ट्री और पीटी. गोल्डन सारी के प्रश्नावली के अगोपनीय उत्तरों का नियम 7 के अनुसार गोपनीय पाठ का कोई सार नहीं है।

अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध नीचे दिए गए अनुसार हैं :

21. प्रस्तुत किए गए आवेदन ने उद्योग से संबंधित सांकेतिकों के संबंध में कोई अगोपनीय आंकड़ा उपलब्ध नहीं कराया और संरचित मूल्य को पूरा करने के लिए उत्पादन की लागत की संगणना करने हेतु उपयोग किए गए मर्कों को गोपनीय रखा गया था। सूचना प्रकट करने के संबंध में कुछ शेष है जो वाणिज्यिक रूप से संवेदनशील है और लगाए गए आरोप के तात्पर्य को समझने के लिए किसी हितबद्ध पक्षकार को अनुमति दे रहा है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

22. सूचना की गोपनीयता के संबंध में पाटनरोधी नियमावली के नियम-7 में निम्नानुसार व्यवस्था है:-

गोपनीय सूचनाएं:-

(1) नियम 6 के उपनियमों (2), (3) और (7), नियम 12 के उपनियम (2), नियम 15 के उपनियम (4) और नियम 17 के उपनियम (4) में अंतर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी जांच की प्रक्रिया में नियम 5 के उपनियम (1) के अंतर्गत प्राप्त आवेदनों के प्रतियां या किसी पक्षकार द्वारा गोपनीय आधार पर निर्दिष्ट प्राधिकारी को प्रस्तुत किसी अन्य सूचना के संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी उसकी गोपनीयता से संतुष्ट होने पर उस सूचना को गोपनीय मानेंगे और ऐसी सूचना देने वाले पक्षकार से स्पष्ट प्राधिकार के बिना किसी अन्य पक्षकार को ऐसी किसी सूचना का प्रकटन नहीं करेंगे।

(2) निर्दिष्ट प्राधिकारी गोपनीय अधिकारी पर सूचना प्रस्तुत करने वाले पक्षकारों से उसका अगोपनीय सारांश प्रस्तुत करने के लिए कह सकते हैं और यदि ऐसी सूचना प्रस्तुत करने वाले किसी पक्षकार की राय में उस सूचना का सारांश नहीं हो सकता है तो वह पक्षकार निर्दिष्ट प्राधिकारी को इस बात के कारण संबंधी विवरण प्रस्तुत करेगा कि सारांश करना संभव क्यों नहीं है।

(3) उप नियम (2) में किसी बात के होते हुए भी यदि निर्दिष्ट प्राधिकारी इस बात से संतुष्ट है कि गोपनीयता का अनुरोध अनावश्यक है या सूचना देने वाला या तो सूचना को सार्वजनिक नहीं करना चाहता है या उसकी सामान्य रूप में या सारांश रूप में प्रकटन नहीं करना चाहता है तो वह ऐसी सूचना पर ध्यान नहीं दे सकते हैं।

23. गोपनीयता के संबंध में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों और प्राधिकारी द्वारा संगत माने गए अनुरोधों की जांच की जाती है और उसका समाधान तदनुसार किया जाता है। गोपनीय आधार पर हितबद्ध पक्षकारों द्वारा

उपलब्ध कराई गई सूचना की जांच गोपनीय के रूप में उन्हें मानने की आवश्यकता के संबंध में की गई थी। संतुष्ट होने पर प्राधिकारी ने सभी पक्षकारों से गोपनीयता संबंधी दावे को स्वीकार किया है और तदनुसार इस प्रकार की सूचना को अन्य हितबद्ध पक्षकारों को प्रकट नहीं किया है। जहां भी संभव हुआ, गोपनीय आधार पर सूचना उपलब्ध कराने वाले पक्षकारों को यह निदेश दिया गया था कि वे गोपनीय आधार पर इस सूचना का अगोपनीय सार उपलब्ध करायें। प्राधिकारी ने सार्वजनिक फाइल के रूप में विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत किए गए साक्ष्य का अगोपनीय पाठ उपलब्ध कराया।

ड. सामान्य मूल्य निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन का निर्धारण :

24. धारा 9 क (i) (ग) के तहत किसी वस्तु के संबंध में "सामान्य मूल्य" का तात्पर्य है :

- (i) व्यापार की सामान्य प्रक्रिया के समान वस्तु की तुलनीय कीमत जब वह उप नियम (6) के तहत बनाए गए नियमों के अनुसार यथा निर्धारित निर्यातक देश या क्षेत्र में खपत के लिए नियत हो, अथवा
- (ii) जब निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में समान वस्तु की बिक्री न हुई हो अथवा जब निर्यातक देश या क्षेत्र की बाजार विशेष की स्थिति अथवा उसके घरेलू बाजार में कम बिक्री मात्रा के कारण ऐसी बिक्री की उचित तुलना न हो सकती हो तो सामान्य मूल्य निम्नलिखित में से कोई एक होगा :

(क) समान वस्तु की तुलनीय प्रतिनिधिक कीमत जब उसका निर्यात उप धारा (6) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार निर्यातक देश या क्षेत्र से या किसी उचित तीसरे देश से किया गया हो; अथवा

(ख) उपधारा (6) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार यथा निर्धारित प्रशासनिक, बिक्री औथ सामान्य लागत एवं लाभ हेतु उचित वृद्धि के साथ उदगम वाले देश में उक्त वस्तु की उत्पादन लागत;

परंतु यदि उक्त वस्तु का आयात उदगम वाले देश से भिन्न किसी देश से किया गया है और जहां उक्त वस्तु को निर्यात के देश से होकर केवल स्थानांतरण किया गया है अथवा ऐसी वस्तु का उत्पादन निर्यात के देश में नहीं होता है, अथवा निर्यात के देश में कोई तुलनीय कीमत नहीं है, वहां सामान्य मूल्य का निर्धारण उदगम वाले देश में उसकी कीमत के संदर्भ में किया जाएगा।

ड.1. घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध :

25. घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं :

- क) घरेलू उद्योग संबद्ध देश में संबद्ध वस्तुओं के संबंध में कोई भी सूचना अथवा वस्तुओं की कीमत के संबंध में कोई भी साक्ष्य प्राप्त करने में समर्थ नहीं रहा है और संबद्ध देश में उत्पादन की लागत, खपत मानक और घरेलू उद्योग की कच्ची सामग्री की कीमतें निर्धारित की गई हैं। विद्युत की लागत संबद्ध देश में विद्युत की दरों पर आधारित होती हैं।
- ख) उत्पादकों / निर्यातकों द्वारा दाखिल किए गए प्रश्नावली उत्तरों में काफी कमियां हैं और उन्होंने विभिन्न तथ्यों को गलत तरीके से प्रस्तुत किया है तथा अत्यधिक गोपनीयता की मांग की गई है।
- ग) सैकरिन के उत्पादन के लिए सी बी एस प्रमुख कच्ची सामग्री है, तथापि, चीन एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था होने के कारण, उत्पादकों द्वारा चीन से किए गए आयातों के संबंध में प्राधिकारी द्वारा पर्याप्त रूप से जांच किए जाने की जरूरत है। कीमतें उचित बाजार कीमतें नहीं हैं। ऐसी स्थिति में, जहां प्रमुख कच्ची सामग्री उचित कीमत पर नहीं है प्राधिकारी सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए ऐसी कीमतों को अस्वीकार करते हैं।
- घ) इंडोनेशिया के उत्पादकों की लागत संशोधित की जानी चाहिए क्योंकि चीन से कच्ची सामग्री काफी कम कीमतों पर उपलब्ध हैं। प्राधिकारी से यह भी अनुरोध किया जाता है कि यदि उत्पादक ने सी बी एस की खरीद चीन से की है तो उसकी जांच की जाए क्योंकि इससे इस बात का साक्ष्य मिलेगा कि यह चीन के निर्यातकों की एक कृत्रिम उत्पादन सुविधा है।

- ड) याचिकाकर्ताओं ने निर्यात कीमत के निर्धारण के लिए वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डी जी सी आई एंड एस) द्वारा प्रदान किए गए आयात संबंधी डाटा पर भरोसा किया है। याचिकाकर्ताओं ने समुद्री माल भाड़ा, समुद्री बीमा, कमीशन, स्वदेशी माल भाड़ा व्यय, बंदरगाह व्यय और बैंक प्रभारों के लिए निर्यात कीमत का समायोजन किया है ताकि कारखाना बाह्य निर्यात कीमत निकाली जा सके।

ड.2. अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा अनुरोध :

26. अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा कोई अनुरोध नहीं किया गया है।

ड.3. प्राधिकारी द्वारा जांच :

27. धारा 9 क (i) (ग) के तहत किसी वस्तु के संबंध में "सामान्य मूल्य" का तात्पर्य है –

- (क) व्यापार की सामान्य प्रक्रिया के समान वस्तु की तुलनीय कीमत जब वह उप नियम (6) के तहत बनाए गए नियमों के अनुसार यथा निर्धारित निर्यातक देश या क्षेत्र में खपत के लिए नियत हो; अथवा
- (ख) जब निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में समान वस्तु की बिक्री न हुई हो अथवा जब निर्यातक देश या क्षेत्र की बाजार विशेष की स्थिति अथवा उसके घरेलू बाजार में कम बिक्री मात्रा के कारण ऐसी बिक्री की उचित तुलना न हो सकती हो तो सामान्य मूल्य निम्नलिखित में से कोई एक होगा;
- (i) समान वस्तु की तुलनीय प्रतिनिधिक कीमत जब उसका निर्यात उप धारा (6) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार निर्यातक देश या क्षेत्र से या किसी उचित तीसरे देश से किया गया हो; अथवा
- (ii) उप धारा (6) के अंतर्गत बनाए गए नियमों के अनुसार यथानिर्धारित प्रशासनिक, बिक्री और सामान्य लागत एवं लाभ हेतु उचित वृद्धि के साथ उदगम वाले देश में उक्त वस्तु की उत्पादन लागत;
- ग) प्राधिकारी ने संबद्ध देश से ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावली भेजी थी, जिसमें उन्हें यह परामर्श दिया गया था कि निर्धारित रूप से और निर्धारित ढंग से सूचना प्रदान करें। तथापि, निम्नलिखित उत्पादकों और निर्यातकों को छोड़कर संबद्ध देश से किसी भी अन्य उत्पादक / निर्यातक ने निर्धारित प्रश्नावली उत्तर दाखिल करके इस जांच में सहयोग नहीं दिया है :
- (i) पी टी गोल्डन सारी
- (ii) पी टी बतांग एलूम इंडस्ट्री

28. मैसर्स बतांग एलूम इंडस्ट्री ने किसी भी वित्त वर्ष के लिए लेखा परीक्षित लेखा प्रदान नहीं किया है। सत्यापन के समय प्रस्तुत संशोधित परिशिष्ट 7 और 8 को व्यापार सूचना सं. 05/ 2018, दिनांक 28 फरवरी, 2018 के तहत यथा आवश्यक पेशेवर लेखाकार द्वारा प्रकाशित नहीं किए गए थे, अतः कंपनी द्वारा प्रस्तुत निर्यातक प्रश्नावली उत्तर सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत की गणना के लिए अस्वीकार कर दिए गए हैं।
29. मैसर्स गोल्डन सारी ने विचाराधीन उत्पाद और गैर विचाराधीन उत्पाद के बीच व्यय के आवंटन में प्रमुख परिवर्तनों के साथ सत्यापन के समय संशोधित परिशिष्ट दिए हैं। यहां तक कि सत्यापन के बाद भी उन्होंने विचाराधीन उत्पाद और गैर विचाराधीन उत्पाद के बीच व्यय के आवंटन में पुनः कुछ बदलाव किए हैं। संशोधित परिशिष्ट पर लेखांकन विभाग के प्रमुख द्वारा हस्ताक्षर किए गए थे, जो कि कंपनी का एक कर्मचारी है लेकिन दिनांक 28 फरवरी, 2018 की व्यापार सूचना सं. 05/ 2018 के तहत यथा अपेक्षित पेशेवर लेखाकार द्वारा सत्यापित नहीं है।
30. इसके अलावा, कंपनी ने सत्यापन के समय जांच की अवधि के लिए केवल लाभ व हानि लेखा का सार प्रदान किया है। लेखा परीक्षित लेखों का अंग्रेजी में अनुवाद किया पाठ यह कहते हुए मैसर्स गोल्डन सारी द्वारा प्रदान नहीं किया गया था कि इसका अनुवाद मानव संसाधन की कमी के चलते नहीं हो पाया। अब सत्यापन के बाद उन्होंने अंग्रेजी में

अनुदित कलेंडर 2017 और जनवरी से मार्च, 2018 तक की अवधि के दौरान के लेखा परीक्षित लेखे प्रस्तुत किए हैं। तथापि, जांच की अवधि के लिए पूरे डाटा कंपनी के लेखा परीक्षित लेखों के साथ मिलान करके प्रदान नहीं किए गए हैं और इसीलिए परिशिष्टों में दिए गए डाटा को अधिकृत / सत्यापित नहीं किया जा सका। इसके अलावा, पेशेवर लेखाकार द्वारा ऐसे परिशिष्टों का सत्यापन नहीं किया गया है।

31. इसके अलावा, कंपनी ने यह स्वीकार किया है कि वे लेखांकन के लिए तथा उत्पाद कर लागत निकालने के लिए एम एस एक्सल का ही उपयोग कर रहे हैं और कोई अन्य लेखांकन सॉफ्टवेयर / सिस्टम उनके द्वारा प्रयोग में नहीं लाए जा रहे हैं।
32. कंपनी अमोनिया का प्रयोग कर रही है, जो कि सैकरिन के उत्पादन के लिए सोडियम साइक्लेमेट (गैर- विचाराधीन उत्पाद) का एक उप उत्पाद है। जबकि कंपनी ने आर एम खपत के रूप में अमोनिया की मात्रा दर्शाई है, लेकिन कच्ची सामग्री की खपत के लिए उसके मूल्य पर विचार नहीं किया है। इसके अलावा, विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन और बिक्रियों के लिए संबद्ध पक्ष सौदे से संबंधित परिशिष्ट- II अथवा उसके किसी भी इनपुट को दिनांक 28 फरवरी, 2018 की व्यापार सूचना सं. 05/ 2018 के संदर्भ में पेशेवर लेखाकार द्वारा प्रमाणित किया जाना है, तथापि, इस मामले में परिशिष्ट- II को पेशेवर लेखाकार द्वारा प्रमाणित नहीं किया गया है।
33. सत्यापन के दौरान कंपनी ने इंडोनेशिया सरकार द्वारा जारी क्षमता प्रमाण पत्र प्रदान किया है, जिसमें निम्नलिखित संस्थापित क्षमता दर्शाई गई हैं -
 - 1) सोडियम साइक्लेमेट – 4000 मी. टन
 - 2) सोडियम सैकरिन – 800 मी. टन
34. जबकि सैकरिन की उत्पादन क्षमता निर्यातक प्रश्नावली उत्तर में 620 मी. टन दर्शाई गई है।
35. सत्यापन के दौरान उन्होंने यह कहा है कि कारोबारी लायसेंस में सूचित की गई क्षमता और वर्तमान क्षमता समय के साथ- साथ बदल सकती है। सरकार क्षमता में किसी भी कमी अथवा वृद्धि को स्वीकृत नहीं करती। प्रश्नावली में प्रदान की गई क्षमता सही है। अतः निर्यातक प्रश्नावली उत्तर में दी गई क्षमता पर भी भरोसा नहीं किया जा सकता। अतः कंपनी द्वारा प्रस्तुत किए गए निर्यातक प्रश्नावली उत्तर को सामान्य मूल्य तथा निर्यात मूल्य की गणना करने के लिए अस्वीकार किया गया है।

च. पाटन मार्जिन का निर्धारण :

सभी गैर- सहयोगी उत्पादकों / निर्यातकों के लिए समान मूल्य / निर्यात कीमत :

36. संबद्ध देश में संबद्ध वस्तुओं की कीमत की कोई भी सूचना अथवा साक्ष्य न होने पर प्राधिकारी ने सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना अर्थात् प्रमुख वस्तुओं की अंतर्राष्ट्रीय कच्ची सामग्री कीमतों, कच्ची सामग्री के खपत मापदंडों और सक्षम घरेलू उत्पादक की परिवर्तन लागत के आधार पर संबद्ध देश में सामान्य मूल्य का निर्धारण किया है। इंडोनेशिया में सभी असहयोगी उत्पादकों / निर्यातकों के लिए प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य का निर्माण *** यूएस डॉलर / मी. टन के रूप में किया है।
37. प्राधिकारी ने वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डी जी सी आई एंड एस) सौदा- वार डाटा के आधार पर इंडोनेशिया के उत्पादकों / निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत का निर्धारण किया है। कथित कीमत सी आई एफ आयात कीमत है। तदनुसार, इंडोनेशिया से सभी निर्यातकों के संबंध में कारखाना बाह्य स्तर पर भारित औसत निवल कीमत का निर्धारण समुद्री माल भाड़ा, समुद्री बीमा, बंदरगाह व्यय, बैंक प्रभार, कमीशन तथा स्वदेशी माल भाड़ा का उपलब्ध सूचना के आधार पर विधिवत समायोजन करने के बाद किया गया है। प्राधिकारी ने निवल निर्यात कीमत का निर्धारण *** यूएस डॉलर / मी. टन के रूप में किया गया है।

च.1. पाटन मार्जिन सारणी :

38. संबंधित देशों से सभी निर्यातकों / उत्पादकों के लिए जांच की अवधि के दौरान पाटन मार्जिन का निर्धारण किया गया है, जो कि नीचे दी गई सारणी में प्रदान किया गया है -

क्र. सं.	उत्पादक देश	उत्पादक	सामान्य मूल्य यू एस डॉलर/ मी. टन	निर्यात मूल्य यू एस डॉलर/ मी. टन	पाटन मार्जिन यू एस डॉलर/ मी. टन	पाटन मार्जिन %	पाटन मार्जिन रेंज %
1.	इंडोनेशिया	कोई भी	***	***	***	***	20 - 30

छ. क्षति आकलन और कारणात्मक संबंध :**छ.1. घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध :**

39. घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध इस प्रकार हैं :

- i. विचाराधीन उत्पाद के लिए मांग में क्षति की अवधि के दौरान वृद्धि हुई है।
- ii. संबद्ध देश से आयातों में पूर्ण रूप से वृद्धि हुई है। उत्पादन और खपत के संबंध में आयातों में जांच की अवधि के दौरान काफी वृद्धि हुई है। यद्यपि आधार वर्ष की तुलना में वर्ष 2015 -16 के दौरान संबद्ध देश से आयातों में गिरावट आई है, लेकिन उसके बाद जांच की अवधि में तीव्र वृद्धि हुई है।
- iii. संबद्ध देशों से आयात की कीमत में जांच की अवधि के दौरान कच्ची सामग्री की लागतों में तदनुसूची गिरावट के बिना काफी गिरावट आई है। यह घरेलू उद्योग को हुई क्षति के लिए प्राथमिक कारण रहा है। आयातों की कीमतों में कमी को भी संदीप आर्गेनिक प्रा० लि० द्वारा स्वीकार किया गया है।
- iv. यह आवश्यक है कि क्या इंडोनेशिया से आपूर्तिकर्ता ने कीमत में कटौती की है, जो चीन द्वारा कीमतों में कमी किए जाने अथवा अन्यथा किसी अन्य कारण से है। यह तथ्य कि चीन और इंडोनेशिया, दोनों से ही आयात की कीमत तीव्र गति से नीचे आई हैं, जो स्पष्ट तौर पर यह दर्शाता है कि इंडोनेशिया में उत्पादक ने आयात की कीमत में तेजी से गिरावट का सहारा लिया है।
- v. आयातों से घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती हुई है, जिसमें जांच की अवधि में काफी वृद्धि हुई है।
- vi. आयातों की गिरती कीमतों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों में गिरावट आई है।
- vii. क्षति की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की क्षमता, उत्पादन और बिक्रियों में वृद्धि हुई है। तथापि, यह सुधार बिक्री की कीमतें कम करने की वजह से आया है, ये बिक्री कीमतें इतनी कम थीं कि घरेलू उद्योग की बिक्री की लागत से भी काफी कम करनी पड़ी थी।
- viii. यद्यपि मांग बढ़ रही थी लेकिन अधिक मालसूची (इन्वेन्ट्री) के लिए घरेलू उद्योग को उत्पादन और बिक्रियों में वृद्धि देखने में नहीं आई है।
- ix. संबद्ध आयातों के बाजार अंश में 2015-16 तक गिरावट बढ़ती रही लेकिन जांच की अवधि के दौरान इसमें काफी वृद्धि आई है। घरेलू उद्योग के बाजार अंश में 2015-16 तक वृद्धि हुई लेकिन जांच की अवधि में काफी गिरावट आई है।
- x. वर्ष 2016-17 के दौरान लाभ में काफी वृद्धि हुई लेकिन जांच की अवधि में नकारात्मक रही। नकदी लाभ और आर ओ सी ई में भी लाभों की तरह की प्रवृत्ति रही है।

- xi. जांच की अवधि में मालसूची (इन्वेन्ट्री) के स्तर में काफी वृद्धि हुई, जिसमें घरेलू उद्योग पर्याप्त मांग होने के बावजूद अपने उत्पादों की बिक्री करने में असमर्थ रहा है।
- xii. क्षति अवधि के दौरान रोजगार के स्तर और मजदूरी के भुगतान में वृद्धि हुई है, तथापि, ऐसे मापदंडों से घरेलू उद्योग पर पाटन के प्रभाव दिखाई नहीं देते।
- xiii. याचिकाकर्ता की मौजूदा क्षमता का अधिकतर उपयोग नहीं हो पाया। वर्तमान क्षमता का उपयोग न हो पाने से और घरेलू उद्योग को नुकसान उठाने से याचिकाकर्ता की पूंजी बढ़ाने की क्षमता कमजोर हुई है।
- xiv. घरेलू उद्योग का पाटित वस्तुओं का प्रभाव प्रतिकूल रहा है।
- xv. क्षति के लिए कोई स्वतः प्रवृत्त होने वाले कारक जिम्मेदार नहीं हैं। खपत के पैटर्न में कोई बदलाव नहीं है। यद्यपि मांग में वृद्धि हुई है। बाजार में प्रतिस्पर्धा यदि पूरी तरह से प्रभावित हुई है, तो वह इंडोनेशिया से कम कीमत पर आयात होने के कारण से है।
- xvi. चीन से आयातों पर जनवरी, 2018 तक पाटनरोधी शुल्क रहा था। चीन से आयातों की पहुंच कीमत पाटनरोधी शुल्क को जोड़कर, इंडोनेशिया से आयात कीमत से अधिक थी। अतः दिसंबर, 2017 तक इंडोनेशिया से आयात की कीमत, अवधि सबसे कम थी, फिर भी उसमें गिरावट आई है।
- xvii. घरेलू उद्योग के कचरा प्रबंधन के संबंध में लगाए गए आरोप ग्रीन एसिड के संबंध में हैं। ग्रीन एसिड की घरेलू उद्योग द्वारा भी बिक्री की जा रही है।
- xviii. संबद्ध देशों से आयात की कीमत में काफी गिरावट आई है और कच्ची सामग्री की लागतों में उसके अनुसार गिरावट आए बिना जांच की अवधि में उसमें तेजी आई है। वास्तविक निर्यात कीमत के प्रभाव की तुलना में कोई भी सीमा शुल्क न होने का प्रभाव पर्याप्त नहीं है। घरेलू उद्योग को क्षति होने के कारणों में यह प्राथमिक कारण रहा है।
- xix. यह तथ्य कि पी टी गोल्डन सारी अन्य देशों को निर्यात करती है और इसके विभिन्न प्रभाव हैं, यह असंगत है। तथापि, इसका अधिकांश निर्यात भारत को है।
- xx. यह तथ्य कि याचिकाकर्ताओं ने राजस्व आसूचना निदेशालय (डी आर आई) के समक्ष शिकायत की है, वास्तव में इस बात से प्रमाणित हो जाता है कि उन्होंने प्राधिकारी के समक्ष अपने बयान में यह कहा है कि निर्यातक सी बी एस (कच्ची सामग्री) से उत्पादों का उत्पादन कर रहे हैं। इंडोनेशिया के उत्पादन के नाम पर कुछ नहीं हैं, यह मात्र चीन के उत्पादन का दिखावटी उत्पादन सी बी एस की अवस्था में मूल्य वर्धन ब्ल्यू सर्कल द्वारा की गई उत्पादन की पूरी प्रक्रिया की तुलना में काफी कम है।
- xxi. संबद्ध देशों के अलावा अन्य देशों से आयात या तो नगण्य हैं या आयात की कीमतें काफी अधिक हैं और इनके घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हो रही है।
- xxii. घरेलू उद्योग के निष्पादन और उसकी क्षति होने के संबंध में यथा संभव घरेलू बिक्री प्रचालनों की दृष्टि से जांच की गई है। अतः घरेलू उद्योग के निर्यात निष्पादन में संभावित गिरावट होना घरेलू उद्योग को क्षति का संभव कारण नहीं है।
- xxiii. विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन के लिए प्रौद्योगिकी और उत्पादन की प्रक्रिया में कोई महत्वपूर्ण बदलाव नहीं आया है। प्रौद्योगिकी में संभावित बदलाव घरेलू उद्योग को क्षति का कारण नहीं हो सकता।
- xxiv. याचिकाकर्ता द्वारा उत्पादन किए जा रहे और बिक्री किए जा रहे अन्य उत्पादों का निष्पादन घरेलू उद्योग को क्षति का संभावित कारण नहीं है। किसी भी स्थिति में याचिकाकर्ता यह मानते हैं कि विचाराधीन उत्पाद के संबंध में सूचना ही वर्तमान प्रयोजन के लिए संगत सूचना है और याचिकाकर्ताओं ने यह सूचना घरेलू उद्योग के रूप में प्रदान की है।

- xxv. ऐसी कोई व्यापार प्रतिबंध प्रक्रिया नहीं है, जिससे कि घरेलू उद्योग को क्षति हुई होगी।
- xxvi. विचाराधीन उत्पाद की खपत की पद्धति में कोई महत्वपूर्ण बदलाव नहीं आया है।
- xxvii. संबद्ध देश से उत्पादकों ने भारतीय बाजार में कम कीमत पर बिक्री की है। इसके परिणाम स्वरूप आयातों की मात्रा, जो वर्ष 2016-17 तक कम हो रही थी, उसके जांच की अवधि में काफी वृद्धि हो गई।
- xxviii. आयात की कीमतों में महत्वपूर्ण कमी होने के चलते, घरेलू उद्योग द्वारा कीमतों में कटौती करने का कारण संबद्ध देश से निर्यातकों द्वारा कम कीमत पर बिक्री करना है।
- xxix. इस प्रकार से कीमतों में कटौती होने के कारण कीमतों में मंदी आई है और इसके परिणाम स्वरूप बाजार में कम कीमत पर बिक्री करनी पड़ी है।
- xxx. आयात कीमतें घरेलू उद्योग के उत्पादन की लागत के स्तर से काफी कम हैं।
- xxxi. कीमत कटौती के परिणाम स्वरूप, घरेलू उद्योग के निष्पादन लाभ में, नकदी लाभ (नकदी प्रवाह) और निवेशों के प्रतिफल की दृष्टि से गिरावट आई है। इस प्रकार घरेलू उद्योग के निष्पादन में गिरावट आई है, जो देश में उत्पाद के पाटन के कारण से है।
- xxxi. घरेलू उद्योग की वस्तु सूची (इन्वेंट्री) में काफी वृद्धि हुई है और हर समय उच्च स्तर पर रही है।

छ.2. अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा अनुरोध :

40. अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निम्नलिखित अनुरोध किए गए :

- i. याचिकाकर्ता निष्पादन में गुणवत्ता, बिक्री मूल्य, बाजार अंश, उत्पादन व उत्पादकता की दृष्टि से सुधार आया है। घरेलू उद्योग पूरी तरह से मजबूत है और **व्यापार एवं उपचार महानिदेशालय** (डी जी टी आर) समग्र आर्थिक मापदंडों की जांच करने में विफल रहा है।
- ii. याचिका में उल्लिखित कीमत संबंधी प्रभाव मुख्यतः चीन की निर्यात कीमत के कारण से है। यहां तक कि वैश्विक स्तर पर भी न्यून निर्यात कीमतें चीन के बाजार विस्तार के कारण से हैं।
- iii. विचाराधीन उत्पाद के आयातों से याचिकाकर्ता के निष्पादन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा लेकिन अन्य स्वतः प्रवृत्त कारक क्षति के लिए जिम्मेदार हैं। चीन से सैकरिन का आयात कथित क्षति के लिए जिम्मेदार प्रमुख कारणों में है। **व्यापार एवं उपचार महानिदेशालय** (डी जी टी आर) को याचिकाकर्ता की उत्पादन सुविधा, बाजार में प्रतिस्पर्धा की स्थिति और खपत के पैटर्न में बदलाव इत्यादि जैसे कारकों की भी जांच करनी चाहिए।
- iv. चीन पर पाटनरोधी शुल्क हटाने के प्रभावों पर भी विचार किया जाना चाहिए।
- v. इंडोनेशिया के पास सामान पाटित करने की क्षमता नहीं है।
- vi. घरेलू उद्योग के समक्ष प्रदूषण और कचरा प्रबंधन की समस्या है, उसके व्यय को भी कारकों में ध्यान में रखा जाए।
- vii. जांच की अवधि में ऐसा कोई आयात शुल्क नहीं है, जो आयातकों द्वारा पहले भुगतान किए जाने हों। इससे कीमतों में कमी में मदद मिली है। जांच की अवधि में अन्य कर भी समाप्त कर दिए गए थे।
- viii. पी टी गोल्डन सारी ने अन्य तृतीय देशों को भी निर्यात भी किया है और विभिन्न अन्य प्रमाण हैं।
- ix. घरेलू उद्योग ने पहले राजस्व आसूचना निदेशालय (डी आर आई) को मिथ्या शिकायतें की हैं, जो इंडोनेशिया से सैकरिन के आयातों के संबंध में हैं। सैकरिन की वैश्विक / चीन की कीमतें और कच्ची सामग्री की कीमतें भी देखने की जरूरत है।

- x. इंडोनेशिया की सी आई एफ कीमतें चीन की सी आई एफ कीमतों से काफी अधिक हैं। जबकि चीन से आयातों पर कोई शुल्क नहीं है। अतः तर्कसंगत रूप से देखा जाए तो इंडोनेशिया के आयातों पर भी कोई शुल्क नहीं होना चाहिए। इंडोनेशिया की सी आई एफ कीमतें जांच की अवधि में सामान्य रही हैं। जबकि वास्तव में उन्होंने जांच की अवधि से पूर्व सामान्य कीमतों से काफी अधिक वृद्धि की थी।

छ.3. प्राधिकारी द्वारा जांच

41. प्राधिकारी ने हितवद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों पर ध्यान दिया है और हितवद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों पर विधिवत विचार करने के बाद पाटनरोधी नियमावली के अनुसार विभिन्न मापदंडों की जांच की है।
42. अनुबंध-III के पाटित पाटनरोधी नियमावली के नियम 11 में यह प्रावधान है कि किसी क्षति निर्धारण में ऐसे कारकों की जांच शामिल होगी, जिसमें घरेलू उद्योग को क्षति दर्शाई गई हो सकती है, ” सभी संगत आयातों की मात्रा, घरेलू बाजार में समान वस्तुओं के लिए कीमतों पर उनके प्रभाव तथा ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों के परिणामी प्रभाव शामिल हैं.....।” कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव दर विचार करते हुए, यह जांच करना आवश्यक समझा गया है कि क्या भारत में समान वस्तु की कीमत की तुलना में पाटित आयातों से महत्वपूर्ण कीमत कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव कीमतों को महत्वपूर्ण मात्रा में अन्यथा कम करने अथवा कीमत वृद्धि को रोकने के लिए है, जो इतनी अधिक मात्रा में अन्यथा नहीं होती। भारत में घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच करने के लिए, उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री की मात्रा स्टॉक, लाभप्रदता, निवल बिक्री वसूली, पाटन की प्रमात्रा और मार्जिन इत्यादि जैसे संकेतक, जिनका उद्योग की स्थिति से संबंध होता है, पर पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध- II के अनुसार विचार किया गया है।
43. घरेलू उद्योग और अन्य हितवद्ध पक्षकारों द्वारा जांच की अवधि के दौरान क्षति और कारणात्मक संबंध के बारे में अनुरोध और प्राधिकारी द्वारा संगत जाए गए अनुरोधों की जांच की गई है और उन पर इस प्रकार कार्रवाई की गई है :

छ.4. घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का मात्रात्मक प्रभाव :

(क) मांग की आकलन / स्पष्ट खपत

44. प्राधिकारी ने वर्तमान जांच, मांग, अथवा भारत में उत्पाद की स्पष्ट खपत के प्रयोजन से सभी स्रोतों से भारतीय उत्पादकों और आयातों की घरेलू बिक्रियों को जोड़कर विचार किया है। इस प्रकार से आकलित मांग यह दर्शाती है कि क्षति की जांच अवधि के दौरान मांग में वृद्धि हुई है। मांग में 2015-16 की तुलना में वर्ष 2016-17 के दौरान मामूली गिरावट आई है, लेकिन इसमें जांच की अवधि में वृद्धि आई है।

विवरण	इकाई	2014-15	2015-16	2016-17	जांच की अवधि
घरेलू उद्योग की बिक्री	मी. टन	***	***	***	***
अन्य भारतीय उत्पादकों की बिक्रियां	मी. टन	***	***	***	***
संबद्ध देश से आयात	मी. टन	421	213	262	543
अन्य देशों से आयात	मी. टन	501	675	323	610
कुल मांग/ खपत	मी. टन	***	***	***	***

(ख) संबद्ध देश से आयात की मात्रा :

45. आयातों की मात्रा के संबंध में प्राधिकारी को यह विचार करना अपेक्षित है कि क्या संबद्ध से आयातों में निरपेक्ष रूप से अथवा भारत में उत्पादन या खपत के संबंध में सापेक्ष रूप से पर्याप्त वृद्धि हुई है।

विवरण	इकाई	2014-15	2015-16	2016-17	जांच की अवधि
संबद्ध देश	मी. टन	421	213	262	543

अन्य देश	मी. टन	501	675	323	610
कुल आयात	मी. टन	922	888	585	1,153

46. यह देखा गया है कि संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं के आयातों में वर्ष 2015-16 के दौरान गिरावट आई है। उसके बाद इसमें वर्ष 2016-17 के दौरान मामूली वृद्धि दर्शाई गई है। तथापि, जांच की अवधि में संबद्ध देश से आयातों में निरपेक्ष दृष्टि से महत्वपूर्ण वृद्धि हुई है।

(ग) **सापेक्ष दृष्टि से संबद्ध देश के आयात :**

आयात के संबंध में	इकाई	2014-15	2015-16	2016-17	जांच की अवधि
भारतीय उत्पादन	%	***	***	***	***
भारतीय मांग	%	***	***	***	***

47. यह देखा गया है कि भारतीय उत्पादन के संबंध में संबद्ध आयातों में वर्ष 2015-16 तक गिरावट आई है लेकिन तब से जांच की अवधि तक दोगुणा से अधिक हो गया है। मौजूदा मांग के संबंध में आयातों में वर्ष 2015-16 के दौरान गिरावट आई है लेकिन उसके बाद काफी वृद्धि देखने में आई है। अतः सापेक्ष संदर्भ में आयातों में जांच की अवधि में काफी वृद्धि दर्शाई गई है।

छ.5. घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के कीमत प्रभाव :

48. कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में यह विश्लेषण किया जाना जरूरी है कि क्या भारत में समान उत्पादों की कीमत की तुलना में कथित पाटित आयातों से महत्वपूर्ण कीमत कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमतों में अन्यथा मंदी आई है अथवा कीमतों में वृद्धि में रूकावट आई है, जो सामान्य अवधि में अन्यथा नहीं होती। संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों पर प्रभाव की कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री, कीमत ह्रास और कीमतों का दमन, यदि कोई हो, के संदर्भ में है। इस विश्लेषण के प्रयोजन से जांच की गई घरेलू उद्योग के उत्पादन की लागत, निवल बिक्री प्राप्त (एन एस आर) तथा गैर-क्षतिकारी कीमत (एन आई पी) की संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं के आयातों की भारित औसत पहुंच कीमत से तुलना की गई है।

(क) **कीमत कटौती :**

49. कीमत कटौती के विश्लेषण के प्रयोजन से घरेलू उद्योग की निवल बिक्री कीमत की संबद्ध देश से आयातों के पहुंच मूल्य के साथ तुलना की गई है। घरेलू उद्योग की निवल बिक्री कीमत की गणना करते समय सभी करों, छूटों, कटौतियों, और कमीशन को कम किया गया है और पाटित आयातों के पहुंच मूल्य की तुलना करने के लिए कार्य बाह्य स्तर पर बिक्री प्राप्त की गई है।

तदनुसार संबद्ध देश से पाटित आयातों के कटौती के प्रभाव इस प्रकार निकाले गए हैं :

विवरण	इकाई	2014-15	2015-16	2016-17	जांच की अवधि
आयातों की पहुंच कीमत	रु./ मी. टन	4,90,936	5,78,365	6,53,472	4,75,374
निवल बिक्री मूल्य	रु./ मी. टन	***	***	***	***
कीमत कटौती	रु./ मी. टन	***	***	***	***
कीमत कटौती	%	***	***	***	***
रेंज (कीमत कटौती)	%	10-20	5-15	नकारात्मक	15-25

50. उपरोक्त सारणी से यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देश से आयातों से घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती हो रही है और कीमत कटौती का स्तर काफी है। आयातों के पहुंच मूल्य में जांच की अवधि में काफी गिरावट दर्ज की गई है।

(ख) कीमत ह्रास और दमन :

51. यह निर्धारित करने के लिए कि क्या पाटित आयातों से घरेलू कीमतों का दमन हो रहा है और क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमतों में काफी मात्रा में दमन हो रहा है अथवा कीमत वृद्धि में रूकावट आई है, जो सामान्य अवस्था में अन्यथा नहीं होती। क्षति की अवधि के दौरान लागतों और कीमतों में परिवर्तन की तुलना इस प्रकार की गई थी :

विवरण	इकाई	2014-15	2015-16	2016-17	जांच की अवधि
आयातों की पहुंच कीमत	रु./ मी. टन	4,90,936	5,78,365	6,53,472	4,75,374
सूची		100	118	133	97
बिक्री की लागत	रु./ मी. टन	***	***	***	***
सूची		100	112	108	111
बिक्री की मूल्य	रु./ मी. टन	***	***	***	***
सूची		100	113	116	104

52. उपरोक्त सारणी से यह देखा जा सकता है कि वर्ष 2015-16 के दौरान बिक्री की लागत में वृद्धि हुई है, वर्ष 2016-17 के दौरान कमी आई है और उसके बाद जांच की अवधि में वृद्धि हुई है। घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में वर्ष 2016-17 तक वृद्धि हुई है लेकिन जांच की अवधि में काफी कमी हुई है। तथापि, वर्ष 2016-16 तक बिक्री की कीमत में वृद्धि बिक्रियों की लागत के स्तर से नीचे है। इसके अलावा, यद्यपि जांच की अवधि में बिक्रियों की लागत में वृद्धि हुई लेकिन बिक्री कीमत में जांच की अवधि में गिरावट आई है। आयातों की पहुंच कीमत वर्ष 2016-17 को छोड़कर घरेलू उद्योग की लागत और बिक्री की कीमत के स्तर से कम रही है। इस प्रकार से घरेलू उद्योग की कीमतें पर आयातों का दमनकारी प्रभाव रहा है।

(ग) कम कीमत पर बिक्री :

53. घरेलू उद्योग की गैर क्षतिकारी कीमत (एन आई पी) निर्धारित की गई है और संबद्ध वस्तुओं के पहुंच मूल्य से तुलना की गई है ताकि कम कीमत पर बिक्री निकाली जा सके। विधाराधीन उत्पाद की गैर क्षतिकारी कीमत (एन आई पी) का निर्धारण पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध- III में यथा उल्लिखित सिद्धांतों के आधार पर जांच की अवधि के लिए उत्पादन की लागत के संबंध में सत्यापित सूचना / डाटा अपनाकर किया गया है। विश्लेषण यह दर्शाता है कि जांच की अवधि के दौरान संबद्ध आयातों की पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की गैर क्षतिकारी कीमत से कम था, जैसा कि नीचे दी गई सारणी से देखा जा सकता है, जिसमें कम कीमत पर बिक्री के प्रभाव को दर्शाया गया है :

विवरण	रु./ मी. टन	यूएस डॉलर/ मी. टन
गैर क्षतिकारी कीमत	***	***
पहुंच मूल्य	4,75,374	7,276.44
कम कीमत पर बिक्री	***	***
कम कीमत पर बिक्री %	***	***
रेंज %	20-30	20-30

6. घरेलू उद्योग के आर्थिक मापदंड :

54. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध- II में यह अपेक्षा की गई है कि क्षति के निर्धारण में ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव की एक उद्देश्यपरक जांच शामिल होगी। ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव के संबंध में पाटनरोधी नियमावली में यह भी प्रावधान है कि घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में सभी संगत आर्थिक कारकों का एक उद्देश्यपरक और निष्पक्ष मूल्यांकन शामिल होना चाहिए तथा उद्योग की स्थिति से संबंध रखने वाले संकेतक शामिल होने चाहिए, जिनमें बिक्रियों, लाभ, आउटपुट,

बाजार अंश, उत्पादकता, निवेशों पर प्रतिफल अथवा क्षमता के उपयोग में वास्तविक और संभावित गिरावट; घरेलू कीमतों, पाटन के मार्जिन की मात्रा को प्रभावित करने वाले कारक, नकदी प्रवाह, माल सूची, रोजगार, मजदूरी, विकास, पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता से संबंधित संभावित नकारात्मक प्रभाव शामिल हैं।

55. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों द्वारा अपने अनुरोध में दिए गए विभिन्न तथ्यों और तर्कों को ध्यान में रखकर क्षति संबंधी मापदंडों की उद्देश्यपरक जांच की है।

(क) उत्पादन, क्षमता, क्षमता उपयोग और बिक्रियां :

56. क्षति की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्रियों का विवरण नीचे सारणी में दिया गया है :

विवरण	इकाई	2014-15	2015-16	2016-17	जांच की अवधि
संस्थापित क्षमता	मी. टन	1920	1920	1920	2820
सूचीबद्ध		100	100	100	147
उत्पादन	मी. टन	***	***	***	***
सूचीबद्ध		100	173	230	241
क्षमता उपयोग	%	***	***	***	***
सूचीबद्ध		100	173	230	165
घरेलू बिक्रियां	मी. टन	***	***	***	***
सूचीबद्ध		100	156	160	196

57. उपरोक्त सारणी से यह नोट किया गया है कि :

- क) घरेलू उद्योग ने संबद्ध वस्तुओं की बढ़ती मांग को देखते हुए अपनी क्षमता में वृद्धि की है।
- ख) घरेलू उद्योग के उत्पादन में क्षति की अवधि के दौरान वृद्धि हुई है। तथापि, यह संस्थापित क्षमता के स्तर और घरेलू बाजार में मांग से काफी कम है। घरेलू उद्योग की क्षमता उपयोग में गिरावट आई है और यह अनुकूलतम स्तर से काफी नीचे है।
- ग) क्षति की अवधि के दौरान घरेलू बिक्रियों में वृद्धि हुई है। तथापि, प्रचालित मांग और घरेलू उद्योग की क्षमता को देखते हुए यह पाया गया है कि मौजूदा बिक्री संबंधी आंकड़े अभी भी कम हैं।

(ख) लाभप्रदता, निवेश पर प्रतिफल और नकदी लाभ :

58. क्षति की अवधि के दौरान लाभप्रदता, निवेश पर प्रतिफल और नकदी लाभ नीचे सारणी में दिया गया है :

विवरण	इकाई	2014-15	2015-16	2016-17	जांच की अवधि
कुल पी बी आई टी	रु. लाख में	***	***	***	***
सूचीबद्ध		(100)	(160)	121	(443)
नकदी लाभ	रु. लाख में	***	***	***	***
सूचीबद्ध		(100)	(170)	201	(208)
शामिल पूंजी के औसत % के रूप में पी बी आई टी	%	***	***	***	***
सूचीबद्ध		(100)	(107)	114	(121)

59. उपरोक्त सारणी से यह नोट किया गया है कि :

- क) घरेलू उद्योग आधार वर्ष 2015-16 के दौरान हानि उठा रहा था तथा उसके बाद वर्ष 2016-17 के दौरान लाभ अर्जित किया है। तथापि, घरेलू उद्योग ने जांच की अवधि के दौरान पुनः हानि उठाई है। यह नोट किया गया है कि संबद्ध आयातों से वर्ष 2016-17 को छोड़कर अन्य वर्षों में घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों में कटौती हो रही थी। यह उसी अवधि के दौरान था जब घरेलू उद्योग को मामूली लाभ हुआ था।
- ख) आर ओ सी ई और नकदी लाभ में लाभ की तरह की ही प्रवृत्ति रही थी। जांच की अवधि के दौरान आर ओ आई काफी हद तक नकारात्मक है।

(ग) रोजगार, उत्पादकता और मजदूरी :

60. क्षति अवधि के दौरान रोजगार, उत्पादकता और मजदूरी का विवरण नीचे तालिका में दिया गया है :

विवरण	इकाई	2014-15	2015-16	2016-17	जांच की अवधि
कर्मचारियों की संख्या	संख्या	***	***	***	***
सूचीबद्ध		100	113	133	164
प्रति दिन उत्पादकता	मी. टन प्रति दिन	***	***	***	***
सूचीबद्ध		100	172	229	241

61. यह नोट किया जाता है कि प्रति दिन की उत्पादकता और कर्मचारियों में उत्पादन में वृद्धि के अनुसार क्षति की अवधि से दौरान वृद्धि हुई है।

(ग) माल सूची:

62. क्षति की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के पास वस्तु के साथ माल सूची (इन्वेंट्री) का विवरण नीचे सारणी में दिया गया है :

विवरण	इकाई	2014-15	2015-16	2016-17	जांच की अवधि
प्रारंभ में	मी. टन	***	***	***	***
अंत में	मी. टन	***	***	***	***
औसतन	मी. टन	***	***	***	***
सूचीबद्ध		100	141	220	325

63. यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग की माल सूची (इन्वेंट्री) में उत्पादन में वृद्धि होने के बावजूद काफी वृद्धि हुई है।

(ड.) विकास :

64. उत्पादन और घरेलू बिक्रियों के संबंध में घरेलू उद्योग का विकास सकारात्मक रहा है। तथापि, यह देखा गया है कि केवल वर्ष 2016-17 के दौरान ही बिक्रियों की लागत, बिक्री कीमत, लाभ / हानि, नकदी लाभ और आर ओ आई के संदर्भ में विकास सकारात्मक रहा है लेकिन जांच की अवधि में काफी नकारात्मक रहा है। यह देखा गया है कि अनुदित कीमत वाले आयातों के कारण जांच की अवधि में घरेलू उद्योग पर एक प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

विवरण	यू ओ एम	2014-15	2015-16	2016-17	जांच की अवधि
विकास (वर्ष दर वर्ष)					
उत्पादन	%	-	73	33	5
घरेलू बिक्रियां	%	-	56	2	23
बिक्रियों की लागत	%	-	12	(4)	3

बिक्री कीमत	%	-	13	3	(11)
निवेश पर प्रतिफल	%	-	(8)	112	(1013)

(च) पूंजीगत निवेश जुटाने की क्षमता :

65. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग के पास उपलब्ध भारी उपयुक्त क्षमताओं और घरेलू उद्योग के समक्ष आ रही हानियों के देखते हुए निवेशों के लिए आगे और पूंजी जुटाने की क्षमता से समझौता किया गया है।

(छ) घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक :

66. संबद्ध देश से आयात की कीमतों, लागत संरचना में परिवर्तन / घरेलू बाजार में प्रतिस्पर्धा, पाटित आयातों के अलावा अन्य ऐसे कारकों की जांच की गई है जो घरेलू बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों को प्रभावित कर रहे होंगे। आंकड़े यह दर्शाते हैं कि संबद्ध देश से आयातित संबद्ध वस्तुओं का पहुंच मूल्य बिक्री कीमत से और घरेलू उद्योग की गैर क्षतिकारी कीमत से कम है, जिसके कारण घरेलू बाजार में कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री हो रही है। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि सामान्यतः विचाराधीन उत्पाद की कीमतें प्रमुख कच्ची सामग्री की कीमतों के अनुसार रहनी चाहिए। घरेलू उद्योग ने यह दावा किया है कि वे अपनी कीमतों को बाजार की ऐसी कीमतों के अनुसार रखने के लिए मजबूर हैं, जो संबद्ध देश से विदेशी उत्पादकों / निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत की गई कीमतों से संचालित होती हैं। इस प्रकार से संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं का पहुंच मूल्य घरेलू कीमतों के निर्धारण के लिए एक महत्वपूर्ण कारक होता है। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग पाटित कीमतों पर संबद्ध वस्तुओं के आयात से प्रभावित हो रहा है।

ज. वास्तविक क्षति की आशंका :

ज.1. घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध :

67. इस संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित अनुरोध किए गए थे :
- संबद्ध देश से आयातों में अत्यधिक वृद्धि होने के कारण घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति होने का आशंका है।
 - संबद्ध देशों में उत्पादकों के पाट भारी मात्रा में असानी से उपयोग की जाने वाली क्षमताएं हैं। इंडोनेशिया के उत्पादकों को चीन के उत्पादकों के वास्तविक विस्तार के रूप में माना जाना चाहिए। इसके अलावा, इंडोनेशिया चीन से भी विचाराधीन उत्पाद का भारी मात्रा में आयात कर रहा है जो स्पष्ट साक्ष्य है कि क्षमताएं केवल निर्यात बाजारों के लिए स्थापित की गई हैं।
 - निर्यातकों के पास महत्वपूर्ण क्षमताएं हैं, जैसा कि उनके उत्तरों से और सुनवाई में प्रकाशित हुआ है। भारत में कुल मांग करीब 2000 मी. टन है। इंडोनेशिया से विश्व में आगे का निर्यात यह दर्शाता है कि इंडोनेशिया में निर्यातक निर्यात अभिमुखी है।
 - संबद्ध देशों से कीमत कटौती महत्वपूर्ण है और भारतीय बाजार आकर्षक है जिसमें आयातों में आगे वृद्धि होने और हास / दमनकारी प्रभाव पड़ने की संभावना है।
 - माल सूचियां प्राप्त नहीं की जा सकीं लेकिन संबद्ध देश में उपलब्ध महत्वपूर्ण क्षमताओं को देखते हुए यह माना जा सकता है कि उत्पादक अल्प समय में ही अपना उत्पादन बढ़ा सकते हैं।

ज.2 अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा अनुरोध :

68. अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा इस संबंध में निम्नलिखित अनुरोध किए हैं :
- इंडोनेशिया के पास वस्तुओं का पाटन करने की क्षमता नहीं है।

ज.3. प्राधिकारी द्वारा जांच :

69. वास्तविक क्षति की आशंका के संबंध में प्रावधान इस प्रकार हैं :

(vi) वास्तविक क्षति की आशंका का निर्धारण तथ्यों पर आधारित होगा और न कि आरोप, निराधार कल्पना या सुदूर संभावना के आधार पर होगा। परिस्थितियों में परिवर्तन जिनसे ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है जिनमें पाटन से क्षति होगी, स्पष्ट रूप से दिखने चाहिए और आसन्नवर्ती होने चाहिए। वास्तविक क्षति की आशंका की मौजूदगी के संबंध में निर्धारण करते समय निर्दिष्ट प्राधिकारी अन्य बातों के साथ-साथ ऐसे कारकों पर विचार करेंगे और;

(क) भारत में पाटित आयातों में वृद्धि की अधिक दर जिससे आयातों में पर्याप्त वृद्धि की संभावना का संकेत मिलता हो।

(ख) निर्यातक की क्षमता में पर्याप्त मुक्त रूप से निपटान योग्य, या आसन्नवर्ती, पर्याप्त वृद्धि जिनसे किसी अतिरिक्त निर्यात को खपाने के लिए अन्य बाजारों की उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए भारतीय बाजार में पाटित निर्यातों में पर्याप्त वृद्धि की संभावना का संकेत मिलता हो।

(ग) क्या आयात ऐसी कीमतों पर हो रहे हैं, जिनसे घरेलू कीमतों पर काफी ह्रासकारी या दमनकारी प्रभाव पड़ेगा और इनसे अधिक उत्पादों की मांग बढ़ने की संभावना है तथा

(घ) उस वस्तु की वस्तु सूची की जांच की जा रही हो।"

70. वास्तविक क्षति की आशंका एक ऐसी स्थिति है, जहां घरेलू उद्योग ने क्षति की अवधि के दौरान सामना नहीं किया है लेकिन यदि मौजूदा परिस्थितियां जारी रहती हैं तो घरेलू उद्योग को क्षति अवश्यंभावी है। वास्तविक क्षति की आशंका से तात्पर्य क्षति की स्पष्ट रूप से और अवश्यंभावी आशंका है। वास्तविक क्षति की आशंका का निर्धारण तथ्यों के आधार पर होना चाहिए न कि केवल आरोपों, अनुमानों, कल्पनाओं और सुदूर संभावनाओं के आधार पर होना चाहिए।

71. वास्तविक क्षति की आशंका के संबंध में प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि :

क) संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं के आयातों में भारी वृद्धि हुई है, जो कि जांच की अवधि में भारत में उत्पादन और खपत के संबंध में निरपेक्ष और सापेक्ष दृष्टि से है।

ख) उत्पादकों द्वारा दाखिल किए गए उत्तरों से इन उत्पादकों के पास भारी क्षमताएं होने का पता चलता है। यह भी देखा गया है कि क्षमता का प्रयोग व्यापक तौर पर निर्यातों के लिए किया जा रहा है। इस प्रकार से उत्पादकों के पास भारी निर्यात संभावनाएं हैं।

ग) संबद्ध देश से आयातों की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग की लागत और बिक्री कीमत से काफी कम है और इस प्रकार इससे घरेलू बाजार में आगे कीमत ह्रास / दमन होने की संभावना है।

झ. क्षति की मात्रा और क्षति मार्जिन :

72. प्राधिकारी ने अनुबंध- III के साथ पाटित पाटनरोधी नियमावली, जो समय- समय पर यथा संशोधित है, में विनिर्दिष्ट सिद्धांतों के आधार पर घरेलू उद्योग की गैर क्षतिकारी कीमत का निर्धारण किया है। विचाराधीन उत्पाद की गैर क्षतिकारी कीमत (एन आई पी) का निर्धारण जांच की अवधि के लिए उत्पादन की लागत के संबंध में सत्यापित सूचना / डाटा को अपनाकर किया गया है। घरेलू उद्योग की गैर क्षतिकारी कीमत (एन आई पी) की गणना की गई है और इसे क्षति मार्जिन की गणना के लिए प्रत्येक संबद्ध देश से पहुंच कीमत की तुलना करने के लिए विचार किया गया है। एन आई पी का निर्धारण करने के लिए क्षति की अवधि के दौरान घरेलू उद्योग द्वारा कच्ची सामग्री के सर्वोत्तम उपयोग करने पर विचार किया गया है। जांच की अवधि में उत्पादन की गणना सर्वोत्तम क्षमता उपयोग मानकर की गई है और उसी उत्पादन पर प्रति इकाई निर्धारित लागत निकालने के लिए विचार किया गया है। यह सुनिश्चित किया गया है कि उत्पादन की लागत के लिए कोई असाधारण अथवा गैर- आवृत्ति व्यय प्रभावित नहीं किया

गया था। विचाराधीन उत्पाद के लिए शामिल औसतन पूंजी (अर्थात् औसतन निवल निर्धारित परिसम्पत्ति + औसतन कार्यशील पूंजी) पर एक तर्क संगत प्रतिफल (पूर्व- कर 22 प्रतिशत की दर से) की अनुमति पूर्व- कर लाभ के लिए दी गई थी, ताकि अनुबंध- III में निर्धारित और अनुसरण की जा रही गैर क्षतिकारी कीमत (एन आई पी) निकाली जा सके। इस प्रकार से निर्धारित गैर क्षति कीमत की संबद्ध देशों से आयातों की पहुंच कीमत के साथ तुलना की गई है, ताकि निम्नलिखित अनुसार क्षति मार्जिन निर्धारित किया जा सके:

क्र.सं.	उत्पादक देश	उत्पादक	पहुंच मूल्य यू एस डॉलर/ मी. टन	एन आई पी यू एस डॉलर/ डॉलर/ मी. टन	पाटन मार्जिन यू एस डॉलर/ डॉलर/ मी. टन	क्षति मार्जिन %	रेंज
1.	इंडोनेशिया	कोई भी	***	***	***	***	20-30

ट. प्राधिकारी द्वारा जांच

73. पाटनरोधी नियमावली के अनुसार प्राधिकारी को अन्य के साथ- साथ पाटित आयातों के अलावा किसी अन्य ज्ञात कारक की जांच करनी अपेक्षित है, जो उसी समय घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचा रहा है ताकि इन अन्य कारकों के कारण से हुई क्षति के कारण पाटित आयात न आ सके। इस संबंध में जो कारक संगत हो सकते हैं उनमें अन्य के साथ शामिल हैं, ऐसे आयातों की मात्रा और कीमत, जो पाटित कीमतों पर नहीं बेचे गए हों, मांग में कमी अथवा खपत के पैटर्न में परिवर्तन, व्यापार प्रति बंधात्मक प्रक्रिया और विदेशी तथा घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा, प्रौद्योगिकी में विकास और निर्यात निष्पादन तथा घरेलू उद्योग को उत्पादकता। यह जांच की गई थी कि क्या पाटनरोधी नियमावली के तहत सूचीबद्ध मापदंडों के अलावा अन्य ज्ञात कारक हैं, जो घरेलू उद्योग को क्षति के लिए जिम्मेदार हैं।

क) तीसरे देशों से आयातों की मात्रा और कीमत :

74. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि चीन के अलावा अन्य देशों से आयात नगण्य हैं। इसके अलावा, प्राधिकारी चीन से संबद्ध वस्तुओं के आयातों के संबंध में समानान्तर जांच कर रहे हैं।

ख) निर्यात निष्पादन :

75. प्राधिकारी द्वारा क्षति विश्लेषण केवल घरेलू प्रचालनों को ध्यान में रख कर किया गया है। अतः निर्यात बाजार में निष्पादन से वर्तमान क्षति विश्लेषण प्रभावित नहीं हुआ है।

ग) प्रौद्योगिकी का विकास :

76. किसी भी हितबद्ध पक्षकार ने घरेलू उद्योग को क्षति होने के कारण के रूप में प्रौद्योगिकी के विकास का मामला नहीं उठाया है।

घ) कंपनी के अन्य उत्पादों का निष्पादन :

77. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि याचिकाकर्ता द्वारा उत्पादित किए जा रहे और बेचे जा रहे अन्य उत्पादों का निष्पादन घरेलू उद्योग को क्षति के एक संभव कारक के रूप में प्रतीत नहीं होता।

ड.) विदेशी और घरेलू उत्पादकों के बीच व्यापार प्रतिबंध प्रक्रिया और प्रतिस्पर्धा :

78. संबद्ध वस्तुओं के आयात पर किसी भी तरीके से प्रतिबंध नहीं है और इनका देश में आसानी से आयात किए जा सकते हैं। घरेलू उत्पादन संबद्ध वस्तुओं की पहुंच कीमतों से प्रतिस्पर्धा करते हैं। घरेलू उद्योग की कीमत संबद्ध वस्तुओं की

पहुंच कीमत से काफी हद तक प्रभावित हैं। इसके अलावा, किसी भी हितबद्ध पक्षकार के ऐसा कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया है, जो यह सुझाव दे कि विदेशी और घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थितियों में कोई परिवर्तन हुआ है।

च) मांग में संकुचन और खपत के पैटर्न में परिवर्तन :

79. यह नोट किया जाता है कि संबद्ध वस्तुओं की मांग में आधार वर्ष की तुलना में जांच की अवधि में काफी वृद्धि हुई है। इसके अलावा खपत के पैटर्न में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है।

ट.1. कारणात्मक संबंध के लिए संगत कारक :

80. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि :

- क) भारत में उत्पादन और खपत के संदर्भ में निरपेक्ष तथा सापेक्ष दृष्टि से संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं के आयातों में काफी वृद्धि हुई है।
- ख) जांच की अवधि में आयातों में पहुंच कीमत में काफी गिरावट आई है। जांच की अवधि में संबद्ध देश से कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री सकारात्मक है।
- ग) पाटित आयातों से घरेलू उद्योग की कीमतों का दमन हो रहा है।
- घ) घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग में 2016 -17 तक वृद्धि हुई लेकिन जांच की अवधि में गिरावट दर्ज की गई तथा समग्र क्षति अवधि के दौरान अनुकूल स्तर से कम रही है।
- ङ) घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में जांच की अवधि के दौरान काफी गिरावट आई है। इसी प्रकार से जांच की अवधि के दौरान पी बी आई टी, नकदी लाभ तथा आर ओ सी ई में भी गिरावट आई है।

ट.2. भारतीय उद्योग का हित और अन्य मामले :

- 81. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्कों का प्रयोजन सामान्यतः पाटन की अनुचित व्यापार प्रक्रियाओं से घरेलू उद्योग को हुई क्षति को दूर करना है ताकि भारतीय बाजार में खुली और साफ सुथरी प्रतिस्पर्धा की स्थिति पुनः स्थापित हो, जो कि देश के सामान्य हित में है।
- 82. जांचों के दौरान निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा संकलित तथा वर्तमान अंतिम जांच परिणाम में प्राधिकारी द्वारा विश्लेषण किए गए जांच के अनिवार्य तथ्यों को हितबद्ध पक्षकारों को प्रकट किया जा रहा है, ताकि हितबद्ध पक्षकार इन तथ्यों पर अपनी टिप्पणियां दे सकें।
- 83. प्राधिकारी इस अंतिम जांच परिणाम के संबंध में हितबद्ध पक्षकारों की टिप्पणियां प्राप्त करने के बाद मामले का समापन करेंगे।

ठ. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रकटन पश्चात् की गई टिप्पणियां

84. प्रकटन पश्चात् किए गए अनुरोध हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त हुए हैं। उनमें उठाये गये मुद्दों को जांच की प्रक्रिया के दौरान पूर्व में उठाया गया है और उसका समाधान भी उपयुक्त रूप से किया गया है। हालांकि, स्पष्टता के वास्ते, हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किये गये अनुरोधों की जांच उस सीमा तक जिस सीमा तक उसे संगत माना गया है, नीचे दिए गए अनुसार की जा रही है :

ठ. 1. घरेलू उद्योग द्वारा अनुरोध

85. प्रकटन पश्चात् टिप्पणियों में घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित दृष्टिकोण व्यक्त किए गए थे :-

- i. विचाराधीन उत्पाद इण्डोनेशिया के मूल के अथवा वहां से निर्यात किए गए सैकरिन "इसके सभी रूपों में सैकरिन" है। यह एक गैर-पोषक स्वीटनर है और इसे कैन सुगर के लिए कम कैलोरी वाला प्रतिस्थानापन्न के रूप में माना जाता है। इसका वर्गीकरण उप-शीर्षक सं. 29251100 के अंतर्गत सीमा प्रशुल्क अधिनियम,

1975 के अध्याय 29 के अंतर्गत किया जाता है और वह केवल सांकेतिक है और वह किसी भी प्रकार से इस जांच के कार्यक्षेत्र पर बाध्यकारी नहीं है।

- ii. संबद्ध देश से निर्यात किए गए संबद्ध वस्तुओं और भारत में उत्पादन किए गए वस्तुओं के बीच कोई ज्ञात अंतर नहीं है। संबद्ध वस्तुओं का केवल रूप और मेस का आकार यह संसुचित नहीं करता है कि उन्हें जांच के कार्यक्षेत्र से बाहर रखा जाए क्योंकि विचाराधीन उत्पाद के विभिन्न रूपों का उच्चतम अंतिम उपयोग एक जैसा है। भारतीय उत्पाद संबद्ध देश द्वारा निर्यात किए गए संबद्ध वस्तुओं की समान वस्तु है।
- iii. इण्डोनेशिया के उत्पादकों द्वारा लागू की गई प्रक्रिया अपेक्षाकृत छोटी है क्योंकि वे सैकरिन का उत्पादन करने के लिए मध्यवर्ती उत्पादों का आयात कर रहे हैं। जबकि पीटी. गोल्डन सारी चीन के सी बी एस से इस उत्पाद का उत्पादन करता है, पीटी. बटंग चीन के ओ टी एस से इस उत्पादन का उत्पादन करता है। इस प्रकार से, इण्डोनेशिया के दोनों उत्पादक चीन के उत्पादकों का स्थानापन उत्पादन के अलावा कुछ नहीं है। सी बी एस अथवा ओ टी एस के चरण से मूल्यवर्धन किए जाने के लिए अपेक्षित उत्पादन की पूरी प्रक्रिया की तुलना में पूर्ण रूप से कम है।
- iv. यह याचिका मैसर्स स्वाति पेट्रो प्रोजेक्ट प्राईवेट लिमिटेड द्वारा दायर किया गया था और इसका समर्थन मैसर्स श्री वरदायनि केमिकल इंडस्ट्री प्राईवेट लिमिटेड, मैसर्स ब्लू सर्कल ऑर्गेनिक प्रा. लिमि. और मैसर्स ए. एस. केमोफार्मा प्राईवेट लिमिटेड द्वारा किया गया था। जांच की प्रक्रिया के दौरान मैसर्स ब्लू सर्कल ऑर्गेनिक प्रा. लिमि. द्वारा पूर्ण सूचना दायर की गई थी और इस प्रकार से प्राधिकारी द्वारा घरेलू उद्योग के एक भाग के रूप में उसे माना गया है। आवेदकों ने संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं का आयात नहीं किया गया है और वे भारत में संबद्ध वस्तुओं के किसी आयातक अथवा संबद्ध देश के किसी निर्यातक के संबंधित नहीं हैं। आवेदक पाटनरोधी नियमावली के अंतर्गत घरेलू उद्योग होते हैं।
- v. कमियों के कारण और सूचना को प्रकट न किए जाने के कारण उत्तर देने वाले दो निर्यातकों को प्राधिकारी द्वारा असहयोगी माना गया है और इस कारण से प्राधिकारी ने संबद्ध देश में सामान्य मूल्य की संरचना की कार्रवाही की है। उन मामलों के संबंध में भी संदर्भ लिया गया है जिनमें प्राधिकारी ने विगत में सही सूचना को प्रकट न किए जाने के कारण उत्तरों को अस्वीकार कर दिया है।
- vi. इन आयातों का इस देश में घरेलू उद्योग पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।
- vii. इस देश में क्षति की अवधि की तुलना में मांग में वृद्धि हुई है। 2015-16 की तुलना में 2016-17 में मामूली गिरावट हुई लेकिन जांच की अवधि में इसमें वृद्धि हुई।
- viii. आयातों में 2015-16 में गिरावट आई परंतु तब से उसमें केवल वृद्धि हुई है और उसने जांच की अवधि में अधिकतम वृद्धि दर्ज की है। सापेक्ष मामलों में आयातों ने इस प्रकार से जांच की अवधि में अत्यधिक वृद्धि दर्शायी है।
- ix. संबद्ध वस्तुओं की पहुंच कीमत में जांच की अवधि में बहुत अधिक गिरावट आई। इसके कारण मार्जिन में बहुत अधिक कटौती हुई। बिक्री की लागत 2015-16 में बढ़ गई, 2016-17 में इसमें कमी आई और पुनः जांच की अवधि में एक बार फिर इसमें वृद्धि हुई। घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में 2016-17 तक वृद्धि हुई लेकिन कम कीमत पर आयातों का सामना करने के लिए जांच की अवधि के दौरान इसमें बहुत अधिक कमी आई। आयातों की पहुंच कीमत 2016-17 को छोड़कर घरेलू उद्योग की बिक्री की लागत और बिक्री की कीमत के स्तर से कम रही। इस प्रकार से इन आयातों का घरेलू उद्योग की कीमतों पर न्यूनकारी प्रभाव पड़ा है।
- x. संबद्ध आयातों की पहुंच कीमतें घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत से बहुत कम थी और उसके माध्यम से कम कीमत पर बिक्री का बहुत अधिक मार्जिन हुआ है।

- xi. बढ़ती हुई मांग को देखते हुए घरेलू उद्योग की क्षमता में जांच की अवधि में वृद्धि हुई जिसके फलस्वरूप उत्पादन में वृद्धि हुई। इसके अलावा, घरेलू उद्योग की बिक्री में वृद्धि हुई लेकिन उपयोगिता में कमी आई और यह आदर्शतम स्तरों से बहुत कम है।
- xii. घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में 2016-17 तक वृद्धि हुई और जांच की अवधि में वह एक समान रही जबकि संबद्ध आयातों के बाजार हिस्से में 2015-16 तक गिरावट आई लेकिन उसके बाद उसमें वृद्धि हुई और जांच की अवधि में कुल भारतीय मांग का एक बहुत बड़ा हिस्सा प्राप्त कर लिया।
- xiii. बढ़ी हुई बिक्री के बावजूद, घरेलू उद्योग के माल भंडार में भी क्षति की अवधि की तुलना में वृद्धि हुई है।
- xiv. घरेलू उद्योग को हानि होती रही है। नकदी का प्रवाह और निवेश पर आय नकारात्मक वृद्धि दर्शाती रही है। घरेलू उद्योग केवल 2016-17 में जब कटौती मार्जिन नकारात्मक था, लाभप्रद रहा।
- xv. रोजगार में घरेलू उद्योग द्वारा क्षमता में वृद्धि और बढ़े हुए उत्पादन के परिणामस्वरूप वृद्धि हुई है। इसके फलस्वरूप, उत्पादकता में वृद्धि हुई। हालांकि, कुल मिलाकर घरेलू उद्योग का विकास नकारात्मक रहा है जिसने नये निवेशों के लिए और अतिरिक्त पूंजी प्राप्त करने की घरेलू उद्योग की क्षमता को प्रभावित किया।
- xvi. पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन बहुत अधिक और सकारात्मक रहा है।
- xvii. वास्तविक क्षति का खतरा भी मौजूद है क्योंकि स्वतंत्र आंकड़ों तथा सापेक्ष आंकड़ों दोनों में आयातों में बहुत अधिक वृद्धि हुई है; प्रस्तुत किया गया उत्तर संबद्ध उत्पादकों/ निर्यातकों के पास उपलब्ध बहुत अधिक क्षमताओं को दर्शाता है; उपलब्ध क्षमता का व्यापक रूप से उपयोग निर्यातों के लिए किया जा रहा है और उनका एक उच्च निर्यात उन्मुखीकरण है, आयातों की पहुंच कीमत लागत और बिक्री की कीमत की तुलना में बहुत अधिक कम है और इसके कारण आगे कीमत ह्रास/ न्यूनीकरण होने की संभावना है।
- xviii. यह केवल संबद्ध वस्तुओं की कीमतें हैं जो नकारात्मक रूप से घरेलू उद्योग की कीमतों पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहा है और पाटित आयातों के अलावा किसी अन्य कारकों का घरेलू उद्योग पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा है और उससे घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई है।

ठ. 2. अन्य हितबद्ध पक्षकारों का दृष्टिकोण

86. प्रकटन पश्चात् टिप्पणियों में अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निम्नलिखित दृष्टिकोण व्यक्त किए गए थे -

- i. भारतीय घरेलू उद्योग को अपने अधिकांश मानदंडों पर सकारात्मक वृद्धि हुई और यह कि डी जी टी आर इन उद्योगों के समग्र कार्य निष्पादन की जांच नहीं कर पाये। आधार वर्ष की तुलना में जांच की अवधि में उत्पादन में 141 प्रतिशत तक तेजी से सुधार हुआ था। याचिकाकर्ता अपनी संस्थापित क्षमता का विस्तार कर पाने में भी सक्षम थे।
- ii. घरेलू उद्योग के आर्थिक मानदंडों ने इस वृद्धि को दर्शाया है। उत्पादन में आधार वर्ष की तुलना में जांच की अवधि में 141 प्रतिशत तक सुधार हुआ। क्षमता, उत्पादकता, घरेलू बिक्री और रोजगार जैसे मानदंडों में वृद्धि हुई है जबकि क्षमता के उपयोग में गिरावट आई।
- iii. डी जी टी आर का जांच परिणाम ए डी ए के अनुच्छेद 3.1 का पालन करने में असफल रहा और उद्देश्यपरक जांच यह दर्शाती है कि याचिकाकर्ता का कार्य निष्पादन अच्छा रहा।
- iv. घरेलू उद्योग को क्षति अन्य कारकों से होती है। उपयोगिता में कमी क्षमता में वृद्धि के कारण हुई थी जो स्पष्ट रूप से यह दर्शाता है कि क्षमता में वृद्धि प्रभावी नहीं थी: इसके अलावा इसमें घरेलू उद्योग के लिए लागतों में भी वृद्धि की।

- v. प्रदूषण की कमी और अपशिष्ट सुविधा न होने जैसे अन्य कारकों की भी जांच की जानी चाहिए। प्रबंध न किए जाने योग्य इस प्रकार के अपशिष्ट पर घरेलू उद्योग पर बहुत अधिक दुलाई लागत हुआ है जिससे इसके औद्योगिक कार्य निष्पादन पर नकारात्मक रूप से प्रभाव पड़ा है।
- vi. भारतीय उपभोक्ता की अधिमान्यता पर भी विचार किया जाना चाहिए जिसके फलस्वरूप अंतिम प्रयोक्ताओं को इन वस्तुओं का अयात करना पड़ा।
- vii. जांच की अवधि में इण्डोनेशिया से आयात की कीमत में सच्चरिन की घटती हुई वैश्विक कीमत के कारण गिरावट आई। सच्चरिन की अपेक्षाकृत कम निर्यात कीमत विदेश में चीन के उत्पादकों के बाजार विस्तार के कारण है।
- viii. इण्डोनेशिया की आयात कीमत चीन की आयात कीमत की तुलना में अधिक थी।
- ix. घरेलू उद्योग कानूनी मामलों के कारण अनुचित राशि खर्च कर रही है।
- x. पीटी. बटांग एल्म इंडस्ट्री इण्डोनेशिया में सोडियम सैकरिन का निर्माता है जिसकी 480 मी. ट. प्रतिवर्ष अथवा 40 मी. ट. प्रति महीना उत्पादन क्षमता है। इसके पास पाटित करने के लिए क्षमता नहीं है क्योंकि मुख्य ध्यान इण्डोनेशिया में हमारे घरेलू बाजार पर है।
- xi. मुख्य ग्राहक यूनिलिवर इण्डोनेशिया है। लगभग आधी उत्पादन क्षमता उनके द्वारा खपा दी जाती है। अन्य आधा हिस्सा इण्डोनेशिया के घरेलू बाजार में केन्द्रीत है।
- xii. इस उत्पादन सुविधा कच्चे माल के रूप में ओ टी एस (अर्थो टोलूइन सल्फोनामाइड) और न की सी वी एस का उपयोग करता है जिसका उल्लेख इस रिपोर्ट में किया गया है। सच्चरिन का उत्पादन करने के अनेक तरीकों को देखते हुए, सामान्य मूल्य का परिकलन करने में उन अंतरों विचार करना होता है।
- xiii. कंपनी ने भारत में तभी निर्यात किया जब कोई उपलब्ध भंडार अथवा इण्डोनेशिया के ग्राहकों से आर्डर को निरस्त किया गया था।
- xiv. जांच की अवधि में दर्शाये गये निर्यात संबंधी विक्री आंकड़ों, भारत में निर्यात की कुल मात्रा एक वर्ष में केवल 69 मी. ट. है।
- xv. सोडियम/ घुलनशील अथवा अघुलनशील की आकृति, गुणवत्ता, अंतिम उपयोग, रूप और कीमत में बहुत बड़ा अंतर जिसे विश्लेषण के प्रमाण पत्र से अलग किया जा सकता है।
- xvi. पीटी. बटांग अघुलनशील सैकरिन का उत्पादन/ निर्माण नहीं करता है।
- xvii. घरेलू बाजार और पीटी. गोल्डन सारी, सोडियम/ घुलनशील सच्चरिन के मेस आकार में अंतर। उसके साक्ष्य मौखिक बैठक के दौरान पीटी. गोल्डन साडी के सी ओ ए एवं ब्लू सर्कल के सी ओ ए एवं नमूने के संबंध में प्रस्तुत किया गया था।
- xviii. इण्डोनेशिया का सोडियम/ घुलनशील मैसर्स श्री वरदायनि केमिल इंडस्ट्री प्राईवेट लिमिटेड को बेची जाती है।
- xix. घरेलू उद्योग को आयातों की तुलना में अपने आप से प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है।
- xx. जांच की अवधि में सी आई एफ अंतर्राष्ट्रीय/ वैश्विक प्रवृत्तियों के अनुरूप थी। मुद्रा में उतार चढ़ाव भी एक कारक के रूप में लिया जाना चाहिए। इस अलावा, अन्य दरों में उतार चढ़ाव एवं कच्चे तेल की कीमतों के उतार चढ़ाव पर भी विचार किया जाना चाहिए।
- xxi. घरेलू उद्योग आई पी श्रेणी का उत्पादन कर रहा है जबकि इण्डोनेशिया के उत्पादक तकनीकी, बी पी और यू एस पी श्रेणी का उत्पादन करता है।

- xxii. कच्चे तेल की कीमतों में उतार चढ़ाव पर भी विचार किया जाना होता है। तदनुसार, पहुंच कीमत/ सी आई एफ और बिक्री की कीमत में उतार चढ़ाव हुआ।
- xxiii. इण्डोनेशिया के सी आई एफ जांच की अवधि में पूर्व की सामान्य सी आई एफ तक आ गए।
- xxiv. घरेलू उद्योग इस बात पर सहमत हुए कि यह उपयोग औद्योगिक और खाद्य/ पेय पदार्थ के उद्देश्य के अलग अलग हैं।
- xxv. अलग अलग मेस आकार के उत्पादन का प्रमाण घरेलू उद्योग द्वारा दिया जाना चाहिए।
- xxvi. अपेक्षाकृत कम आयात कीमत को इण्डोनेशिया के उत्पादकों द्वारा स्वीकार नहीं किया गया है।
- xxvii. इण्डोनेशिया से निर्यात बहुत कम है।
- xxviii. लेखांकन के उद्देश्य से एक्सेल के उपयोग का उत्पादक/ निर्यातक पर प्रतिकूल रूप से प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए। अनुच्छेद VI, जी ए टी टी के पुनरावृत्ति 2, अनुच्छेद 6. 8 अनुबंध-II की ओर ध्यान आकर्षित किया जाता है।
- xxix. ई एफ का पुनरावृत्ति 26 और प्रारूप जांच रिपोर्ट यह संकेत देता है कि डी जी टी आर एक्सेल के उपयोग के कारण इस सूचना को सत्यापित करने के लिए इच्छुक नहीं था। इसके अलावा, उन्होंने एक्सेल पर उपलब्ध कराई गई सूचना की प्रमाणिकता पर संदेह व्यक्त किया।
- xxx. ई एफ के पुनरावृत्ति 24 के संदर्भ में, विचाराधीन उत्पाद और गैर विचाराधीन उत्पाद के आवंटन के संबंध में संशोधन मौके पर सत्यापन के आरंभ में उपलब्ध कराया गया था और इसके साथ ही अंतर के बारे में स्पष्टीकरण दिया गया था। मूल प्रश्नावली के उत्तर में एक गलती हुई थी जिसे सत्यापन के लिए तैयारी में ही पाया गया था। इस संशोधित सूचना के प्राप्त होने पर, डी जी टी आर के दल ने इस तथ्य का उल्लेख किया कि सत्यापन के उद्देश्यों में से एक उद्देश्य इन अंतरों का मिलान करना था और संशोधित परिशिष्टों का उपयोग इस जांच के लिए किया गया था।
- xxxi. यह सही नहीं है कि लाभ और हानि का विवरण उपलब्ध नहीं कराया गया था। जांच की अवधि को शामिल करते हुए लाभ और हानि का विवरण इस जांच के पहले ही उपलब्ध कराया गया था। समर्थन करने वाले सभी दस्तावेजों (जो कि सत्यापन ई-मेल में है) नमूने के लिए अलग अलग खातों और सत्यापन के लिए निरीक्षण को शामिल करने के लिए तैयार किया गया था। प्राधिकारी ने खातों के नमूने लिए जिसमें भाड़े, ट्रकिंग, निर्यात बिक्री और घरेलू बिक्री के लिए समर्थन करने वाले दस्तावेज उपलब्ध कराये जा रहे हैं।
- xxxi. दिनांक 28 फरवरी, 2018 के ट्रेड नोटिस सं. 05/2018 के संदर्भ में, इस करार में प्रश्नावली के उत्तर को प्रमाणित करने के लिए पेशेवर लेखाकार की आवश्यकता नहीं होती है। यह प्रश्नावली लेखांकन दल के अध्यक्ष द्वारा तैयार किया गया था जो एक प्रमाणित पेशेवर लेखाकार है।
- xxxi. ई एफ के पुनरावृत्ति 28 संदर्भ में और दिनांक 26 जनवरी के पत्र में निर्धारित किए गए अनुसार, यह स्पष्ट किया गया था कि 620 मी. ट. की क्षमता सटीक है। इण्डोनेशिया की सरकार द्वारा इस प्रमाण पत्र में 800 मी. ट. का उल्लेख है जिसे अब संस्थापित मशीनों द्वारा प्राप्त नहीं किया जा सकता है।
- xxxi. कंपनी सोडियम साइक्लामेट प्रक्रिया से उप उत्पाद के रूप में अमोनिया का उपयोग कर रहा है और इण्डोनेशिया के लेखांकन के अनुसार इसका मूल्य शून्य है।
- xxxi. प्रकट किए गए आवश्यक तथ्यों ने ऐसे किसी मुद्दे को शामिल नहीं किया है जिसे हमने की गई सुनवाई के अवसर पर दिनांक 11 सितंबर को अपने अनुरोध में उठाया है।

- xxxvi. घरेलू उद्योग के कार्यक्षेत्र का सत्यापन जांच की प्रक्रिया के दौरान किया जाना चाहिए क्योंकि आवेदन दायर करते समय घरेलू उद्योग पर यह संदेह रहता है और वह जो जांच का विषय है। क्षति संबंधी जांच क्षति को दर्शाने के लिए सर्वोत्तम स्थापित उत्पादकों तक सीमित नहीं रहना चाहिए।
- xx xvii. सामान्य मूल्य के संबंध में, सामान्य मूल्य प्राप्त करने के लिए किए गए प्रयासों को दर्शाने में असफलता रही है। (अलिबाबा.कॉम पर उपलब्ध कीमतों का संदर्भ लिया गया है)। इस उत्पादक द्वारा दावा की गई घरेलू कीमतें उल्लिखित वेबसाइट पर उपलब्ध कीमतों के अनुरूप हैं और इस प्रकार की कीमतों के आधार पर पाटन नहीं होता है।
- xx xviii. आवेदक इस करार के अनुच्छेद 2.4 के अनुसार उचित तुलना सुनिश्चित करने के लिए सी एन वी समायोजित करने में असफल रहा क्योंकि सी एन वी में प्रत्यक्ष बिक्री खर्च को निवल के रूप में कारखानागत निर्यात कीमतों के साथ तुलना करने के लिए नहीं निकाला गया था।
- xx xix. प्राथमिक बाजार इण्डोनेशिया में अपना घरेलू बाजार है।
- xl. अंतिम निर्णायक समीक्षा जांच परिणामों, दायर किये गये आवेदन और प्रस्तुत किए गए विवरण में कमियां रही हैं। आवेदक ने इस जांच का परिणाम का उपयोग आवेदन में विसंगतियों का मिलान करने के लिए किया है। यह अनुरोध किया जाता है कि प्राधिकारी इस जांच को समाप्त करें।
- xli. इस जांच परिणाम में उत्पादन संबंधी आंकड़ों और आवेदन के बीच अंतरों का उत्तर नहीं दिया गया है।
- xl ii. अत्यधिक गोपनीयता का दावा आवेदक द्वारा किया गया है। इसके अलावा सी एन वी वास्तविक लागतों का 30 प्रतिशत से अधिक है और यही है कारण है कि दावा किया गया पाटन मार्जिन 40-50 प्रतिशत है।
- xl iii. घरेलू उद्योग को इस बात को भी दर्शाना चाहिए कि क्या यह सूचना विशिष्ट नहीं है जैसा कि आवेदन के पुनरावृत्ति 53 में दावा किया गया है।

ठ. 3. प्राधिकारी द्वारा जांच

87. जहां तक इण्डोनेशिया की सरकार के इस अनुरोध का प्रश्न है कि प्राधिकारी द्वारा घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन का वस्तुनिष्ठ तरीके से विश्लेषण नहीं किया गया है, प्राधिकारी यह मानते हैं कि वास्तविक क्षति का आकलन पाटनरोधी नियमावली और पाटनरोधी करार में यथाउल्लिखित सभी मानदंडों की जांच करने के बाद किया गया है। इस संबंध में प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि जबकि घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन में जांच की अवधि में मात्रा संबंधी कुछ मानदंडों में सुधार हुआ है, घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन में अन्य मानदंडों जैसे लाभ, नकद लाभ, निवेश पर आय और माल भंडार में तेजी से गिरावट आई है। इसके अलावा घरेलू उद्योग इण्डोनेशिया के पाटित आयातों के मौजूद रहने के कारण मांग में वृद्धि के बावजूद अपनी बड़ी हुई क्षमता का उपयोग करने की स्थिति में नहीं था। इसके अलावा, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग को संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण समग्र आधार पर वास्तविक क्षति हुई है।
88. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग ने संबद्ध वस्तुओं की मांग में वृद्धि को देखते हुए अपनी क्षमता का विस्तार किया है। हालांकि, यह संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण अपनी क्षमता का उपयोग नहीं कर सका। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि उपभोक्ताओं द्वारा संबद्ध वस्तुओं की आपूर्ति के स्रोत के बारे में निर्णय लेने के लिए सबसे महत्वपूर्ण कारक कीमत रह जाती है और रिकार्ड पर तथ्य घरेलू उद्योग द्वारा उठाई गई वास्तविक क्षति के कारण के रूप में अन्य कारकों को नहीं दर्शाते हैं।
89. प्राधिकारी यह मानते हैं कि वैश्विक कीमत में कमी संबद्ध वस्तुओं के पाटन को अपनाने के लिए संबद्ध देश से इन निर्यातकों के लिए वैध कारण नहीं हो सकता है। यह महत्वपूर्ण नहीं है कि क्या इण्डोनेशिया से संबद्ध वस्तुओं की आयात कीमत चीन से संबद्ध वस्तुओं की आयात कीमत की तुलना में अधिक है। पाटनरोधी जांचों में जो संगत है वह यह तथ्य है कि क्या संबद्ध वस्तुओं का पाटन संबद्ध देश से इन निर्यातकों द्वारा किया गया है और यह कि क्या उसके कारण घरेलू उद्योग को क्षति हुई है।

90. जहां तक पीटी. बटांग एलम इंडस्ट्री के इस अनुरोध का प्रश्न है कि उन्होंने भारत में संबद्ध वस्तुओं की कम मात्रा की ही आपूर्ति की है क्यों कि उनके पास भारत में निर्यात करने के लिए पर्याप्त अतिरिक्त वस्तु नहीं हैं, प्राधिकारी यह मानते हैं कि पाटनरोधी जांच में जो संगत है वह यह तथ्य है कि क्या निर्यातक ने पाटित कीमत पर संबद्ध वस्तुओं का निर्यात किया है और यह नहीं कि क्या इसने भारी मात्रा में अथवा कम मात्रा में निर्यात किया है। आयातों की मात्रा पर विचार इण्डोनेशिया से संपूर्ण आयातों के संबंध किया जाना अपेक्षित है जो स्पष्ट रूप से जांच की वर्तमान अवधि की तुलना में वृद्धि को दर्शाता है। इस कारण से, इसके संबंध में निर्यातक के अनुरोध में कोई दम नहीं है।
91. इस अनुरोध के संबंध में की इण्डोनेशिया की कीमत अंतर्राष्ट्रीय बाजार के अनुरूप थी, प्राधिकारी यह मानते हैं कि पाटनरोधी जांच में जो महत्वपूर्ण है वह यह तथ्य है कि क्या संबद्ध वस्तुओं का निर्यात पाटित कीमत पर किया गया है। इण्डोनेशिया निर्यात किये गये संबद्ध वस्तुओं के कीमत का परीक्षण यह दर्शाता है कि भारत में उनका निर्यात पाटित कीमतों पर किया गया है।
92. पीटी. गोल्डन सारी के इस तर्क के संबंध में की उन्होंने इस जांच में पूर्ण रूप से सहयोग किया है, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि उन्होंने उत्तर देने वाले उक्त निर्यातक को सभी संभव अवसर दिए हैं जिससे कि यह अनुरोध करना आसान बन सके जिसकी इस नियमावली के अनुसार जांच में अपेक्षा है। उक्त निर्यातक ने सत्यापन के दौरान उचित औचित्य दिए बिना उसी समयावधि के लिए प्रस्तुत किये गये आंकड़ों में अनेक बार परिवर्तन किया है। आंकड़ों में परिवर्तन मौके पर सत्यापन के बाद भी किया गया था और इस कारण से पीटी. गोल्डन सारी प्राधिकारी को पाटनरोधी शुल्क निमयावली के नियम 8 के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई सूचना की सटीकता के बारे में संतुष्ट नहीं कर पाया है।
93. प्राधिकारी यह प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग को कीमत में भारी कटौती से हानि हो रही थी जो यह दर्शाता है कि आयात किया गया संबद्ध वस्तु लाभ, नकद लाभ और निवेश पर लाभ के मामले में घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन में गिरावट का प्रमुख कारण था। यह सिद्ध नहीं किया गया है कि घरेलू उद्योग उठाई गई वास्तविक क्षति घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा के कारण हुई है जैसा कि पीटी. गोल्डन सारी द्वारा आरोप लगाया गया है।
94. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि इण्डोनेशिया से आयात किये गये संबद्ध वस्तुओं की मात्रा न्यूनतम स्तर से अधिक थी और स्थापित पाटन मार्जिन भी अधिक था। इस कारण से निर्यातक का यह तर्क कि इण्डोनेशिया से आयात किये गये संबद्ध वस्तुओं की मात्रा कम है, में कोई दम नहीं है।
95. प्रश्नावली के उत्तर को अस्वीकार करने के कारणों का उल्लेख पहले ही सामान्य मूल्य भाग के अंतर्गत इस जांच परिणाम में किया गया है। पेशेवर लेखाकारों (कर्मचारियों को छोड़कर) द्वारा विधिवत हस्ताक्षरित प्रमाणित किये गये विवरणों को उपलब्ध कराने के लिए आवश्यकता इस विवरण में प्रस्तुत किये गये आंकड़ों को स्वीकार करने के लिए और इन निर्यातकों द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना कि विश्वसनीयता को स्थापित करने के लिए आवश्यक है। इस अपेक्षा को दिनांक 28.02.208 के ट्रेड नोटिस 05/2018 के माध्यम से पूर्ण रूप से स्पष्ट किया गया है। इस संबंध में प्राधिकारी यह मानते हैं कि पेशेवर लेखाकारों द्वारा महत्वपूर्ण लागत और वित्तीय विवरणों को प्रस्तुत करने के लिए आवश्यकता के स्थान पर कंपनी के कर्मचारी के द्वारा प्रमाणित किए गए विवरणों को नहीं माना जा सकता है यद्यपि वे एक प्रमाणित लेखाकार हैं।
96. इस कंपनी ने यह दर्शाने के लिए तकनीकी विशेषज्ञों द्वारा विधिवत प्रमाणित कोई दस्तावेज प्रस्तुत नहीं किए हैं कि व्यापार लाइसेंस में यथाउल्लिखित संयंत्र और मशीनरी की क्षमता कुछ समय में 800 मी. ट. से घटर 620 मी. ट. हो गया है। इस कारण से, इस संबंध में पीटी. गोल्डन सारी के अनुरोध में कोई दम नहीं है।
97. पीटी. गोल्डन सारी के इस अनुरोध के संबंध में की एक उप उत्पाद के रूप में आने वाली मुख्य इनपुट अर्थात् अमोनिया का कोई मूल्य नहीं है, प्राधिकारी यह मानते हैं कि विचाराधीन उत्पाद में प्रयुक्त कोई प्रमुख इनपुट का मूल्यांकन और उसे उत्पादन की सही लागत का निर्धारण करने के उद्देश्य से माने जाने की आवश्यकता है। यदि इन इनपुट्स का मूल्यांकन सही रूप से और समुचित रूप से नहीं किया जाता है तब उत्पादन की परिणामी लागत का उल्लेख कम करके किया जायेगा और उस सीमा तक गैर विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन की लागत को बढ़ा चढ़ाकर पेश किया जायेगा जो न केवल सही नहीं है बल्कि पाटनरोधी नियमावली के अंतर्गत अनुमत्य भी नहीं है।

98. इस आरोप के संबंध में की प्रकट किये गये आवश्यक तथ्यों में ऐसे किसी मुद्दे को शामिल नहीं किया गया है जिसे पीटी. गोल्डन सारी ने आयोजित सुनवाई के अवसर पर दिनांक 11 सितंबर, 2018 के अनुरोध में उठाया गया है। यह नोट किया जाता है कि प्रकटन विवरण और अंतिम जांच परिणाम में उन सभी मुद्दों पर चर्चा की गई जिन्हें हितबद्ध पक्षकारों द्वारा अपने अनुरोध में उठाया गया था। इसके अलावा, इसे स्पष्ट रूप से समझा गया है कि मौखिक सुनवाई के समय उठाये गये किसी तर्क पर तब तक विचार नहीं किया जाता है जब तक उन्हें बाद में लिखित रूप में फिर से प्रस्तुत नहीं किया जाता है। यदि किसी पक्षकार ने सुनवाई के समय कुछ चिंताएं व्यक्त की हैं लेकिन उसे लिखित रूप में उपयुक्त तरीके से फिर से प्रस्तुत करने और उसकी पुष्टि करने में असफल रहा है, तब उस पर इस कारण से विचार नहीं किया जा सकता है कि ये पक्षकार सुनवाई के बाद और विरोधी पक्षकारों के दृष्टिकोण को सुनने के बाद और अपने निजी तर्कों की मजबूती और कमजोरी को समझने के बाद अपने तर्कों को छोड़ ही देंगे। किसी भी मामले में, सुनवाई के समय इन पक्षकारों द्वारा उठाये गये मुद्दों का समाधान इन जांच परिणामों समुचित रूप से किया गया है।
99. इन तर्क के संबंध में की घरेलू उद्योग के कार्यक्षेत्र का सत्यापन जांच की प्रक्रिया के दौरान किया जाना चाहिए। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि इस जांच में यह नहीं दर्शाया है कि क्षति का निर्धारण किसी भी तरीके से अन्य घरेलू उत्पादकों के भाग न लेने के कारण पक्षपात पूर्ण है और इस पर प्रभाव पड़ा है। कोई भी सूचना/ साक्ष्य किसी हितबद्ध पक्षकार द्वारा यह दर्शाते हुए उपलब्ध नहीं कराया गया है कि घरेलू उद्योग के कार्यक्षेत्र के निर्धारण ने क्षति के विश्लेषण पर प्रतिकूल रूप से प्रभाव डाला है। वास्तव में, रिकार्ड पर सूचना स्पष्ट रूप से यह दर्शाती है कि अन्य घरेलू उत्पादकों जो घरेलू उद्योग का हिस्सा नहीं बनते हैं, का कार्य निष्पादन वास्तविक रूप से उस अलग स्थिति को नहीं दर्शाता है जो वर्तमान जांच परिणाम में विचार किये गये घरेलू उद्योग की स्थिति है।
100. इस तर्क के संबंध में कि सामान्य मूल्य को प्राप्त करने के लिए किए गए प्रयास को दर्शाने में असफलता रही है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि सामान्य मूल्य का निर्धारण तब तक इन निर्यातकों द्वारा प्रस्तुत किये गये प्रश्नावली के उत्तर के आधार पर किया जाना अपेक्षित है जब तक प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर नहीं पहुंच जाते हैं कि उसे अपनाया नहीं जा सकता है। इसके अलावा, किसी वेबसाइट पर उपलब्ध कीमतों का संदर्भ मात्र यह संकुचित नहीं करता है कि उसे अंतिम जांच परिणाम के चरण में सामान्य मूल्य के निर्धारण के उद्देश्य से अपनाया जा सकता है। उस नियमावली के अंतर्गत निर्दिष्ट प्राधिकारी से यह अपेक्षित है कि वे व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में खपत कीमत के आधार पर और निर्यातक देश में खपत के उद्देश्य से समान वस्तु के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण करें। वेबसाइट पर कीमत को दर्शाना मात्र किसी उत्पाद के सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए पर्याप्त नहीं है। यदि वेबसाइट पर सूचना सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए पर्याप्त होती तब विस्तृत जांच करने और निर्धारित प्रपत्रों में सूचना मंगाने की कोई आवश्यकता नहीं हुई होती।
101. यह स्पष्ट किया जाता है कि निर्धारण किये गये सामान्य मूल्य का समायोजन सीधी बिक्री से संबंधित खर्चों के लिए किया गया है। सीधी बिक्री से संबंधित खर्चों को या तो सामान्य मूल्य में अथवा निर्यात कीमत की गणनाओं में शामिल नहीं किया गया है।
102. इस तर्क के संबंध में की निर्यातकों का प्राथमिक बाजार इण्डोनेशिया में उनका अपना घरेलू बाजार है, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि इण्डोनेशिया से 543 मी. ट. का आयात किया गया था जो दो ज्ञात निर्माताओं द्वारा इस उत्पाद के उत्पादन के संबंध में मामूल नहीं है। किसी भी स्थिति में केवल यह तथ्य कि घरेलू बाजार प्राथमिक बाजार है, यह संसूचित नहीं करता है कि इन वस्तुओं का निर्यात पाटित कीमतों पर नहीं किया गया है। पाटन के परीक्षण के लिए, संगत दृष्टिकोण/ मानदंड सामान्य मूल्य और इस उत्पाद की निर्यात कीमत है और न कि घरेलू बाजार में बेचे गए उत्पादन की मात्रा।
103. अंतिम निर्णायक जांच परिणाम में स्पष्ट कमियों की संबंध में, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि चीन के विरुद्ध उक्त अंतिम निर्णायक समीक्षा जांच में जांच की अवधि वर्तमान जांच में जांच की अवधि से अलग है। इस कारण से, दोनों के बीच किसी प्रकार की तुलना एक निष्फल प्रयास होगा। इसके अलावा, प्राधिकारी चीन से संबद्ध वस्तुओं के आयातों पर समान जांच कर रहे हैं। इस नियमावली के अंतर्गत प्राधिकारी को इन तथ्यों के अंतर्गत और उस मामले के गुणों के आधार पर प्रत्येक जांच करने का अधिकार प्राप्त है। किसी भी स्थिति में प्राधिकारी ने इन हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना पर केवल विश्वास करने के बजाय इसके अपने सत्यापित आंकड़ों को अपनाया है।

104. पूर्व की जांच में और इस आवेदन में खपत संबंधी आंकड़ों में अंतरों के संबंध में, यह स्पष्ट किया जाता है कि वर्तमान जांच परिणाम प्राधिकारी द्वारा किये गये जांच पर और वर्तमान जांच परिणाम के लिए अपनाई गई सत्यापित सूचना के आधार पर है जहां तक आवेदन में रिपोर्ट की गई खपत और पूर्व के जांच परिणामों में खपत के बीच अंतर का प्रश्न है, प्राधिकारी द्वारा उसका विधिवत परीक्षण किया गया था।
105. इस तर्क के संबंध में की घरेलू उद्योग को यह भी दर्शाना चाहिए कि कहां पर यह सूचना विशिष्ट नहीं है, यह स्पष्ट किया जाता है कि प्राधिकारी ने अपनाई गई सूचना के आधार पर उचित रूप से संतुष्ट होने के बाद वर्तमान जांच परिणाम को रिकार्ड किया है। वर्तमान जांच परिणामों में निहित सभी क्षति से संबंधित सूचना केवल विचाराधीन उत्पाद से संबंधित हैं।
106. इस तर्क के संबंध में की घरेलू उद्योग को क्षति क्षमता में वृद्धि जैसे अन्य कारकों के कारण हुई है। यह स्पष्ट किया जाता है कि घरेलू उद्योग के लिए क्षति रहित कीमत जैसे एन आई पी का निर्धारण क्षमताओं के विस्तार के पहले विगत में आदर्शतम क्षमता उपयोग पर विचार करते हुए किया गया है। इसके अलावा, एन एस आर के साथ एन आई पी की तुलना यह दर्शाती है कि निर्धारित की गई एन आई पी उसी तुलना में बहुत अधिक है जो एन एस आर का है और इस प्रकार से यह दर्शाया गया है कि घरेलू उद्योग उस कीमत को प्राप्त करने में सक्षम नहीं है जो इसने उस स्थिति के अंतर्गत भी आशा कर सकता था जहां संयंत्र का आदर्शतम उपयोग किया गया था। वास्तव में उत्पादन की सामान्य लागत भी बिक्री कीमत से अधिक है और इस प्रकार से यह दर्शाया गया है कि घरेलू उद्योग वह कीमत प्राप्त करने में सक्षम नहीं रहा है जो इसे कम से कम सामान्य लागत को प्राप्त करने के लिए सक्षम बनाया होता। इस प्रकार से यह स्पष्ट है कि घरेलू उद्योग को क्षति क्षमताओं में वृद्धि के कारण नहीं बल्कि पाटित आयातों के कारण हुई है।
107. मौके पर जांच दोनों विदेशी उत्पादकों के परिसरों में किया गया था। यह नोट किया जाता है कि जबकि मैसर्स पीटी. बटांग एल्म चीन से आई टी एस का आयात करता है और उसके बाद सैकरिन का उत्पादन करता है; पीटी. गोल्डन सारी चीन से सी बी एस का आयात करता है और सैकरिन का उत्पादन करता है। यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग भी दोनों मार्गों का उपयोग करते हुए सैकरिन का उत्पादन करता है। वास्तव में सामान्य मूल्य का निर्धारण उत्पादन की प्रक्रिया के आधार पर किया गया है जिसके फलस्वरूप दोनों प्रक्रियाओं अर्थात् ओ टी एस और सी बी एस के बीच कम से लागत आई है।
108. उत्पाद में अंतर के संबंध में, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि ये केवल सैकरिन के अलग अलग रूप हैं। इन दोनों रूपों का उत्पादन भारत में घरेलू उद्योग द्वारा किया जाता है और इनका आयात संबद्ध देशों से किया गया है। केवल यह तथ्य कि विदेशी उत्पादकों में से एक उत्पादक इस उत्पाद के सभी रूपों का उत्पादन नहीं करते हैं यह संसूचित नहीं करता है कि इस उत्पाद के रूप को विचाराधीन उत्पाद के कार्यक्षेत्र में शामिल नहीं किया जा सकता है। इन उत्पादों के दोनों रूपों का आयात संगत अवधि के दौरान इण्डोनेशिया से किया गया है और उसकी आपूर्ति घरेलू उद्योग द्वारा की गई है।
109. मेस के आकार में अंतर के संबंध में प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि निर्यातक ने मेस के आकार में अंतर के आधार पर सैकरिन की कीमत और लागत में एक सतत् अंतर सिद्ध नहीं किया है। केवल यह तथ्य कि घरेलू उद्योग और विदेशी उत्पादकों द्वारा उत्पादन किये गये उत्पाद के मेस का आकार अलग अलग है, अपने आप में पर्याप्त नहीं है। हितबद्ध पक्षकारों से यह अपेक्षित है कि वे प्राधिकारी द्वारा उस पर विचार किये जाने के पूर्व अपने प्रभावों की मात्रा का उल्लेख और इस अंतर की पहचान करें। हालांकि, निर्यातक ने इस अंतर की पहचान नहीं की है बल्कि प्रभाव की मात्रा का उल्लेख नहीं किया है और न ही इस उत्पाद के कीमत निर्धारण में सतत् आधार पर उसके मौजूद होने को दर्शाया है।
110. इस तर्क के संबंध में की इन कंपनियों में से एक कंपनी ने इन उत्पादों में एक उत्पाद की बिक्री मैसर्स श्री वरदायनि केमिल इंडस्ट्री प्राईवेट लिमिटेड को की है, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि वह परिभाषित घरेलू उद्योग को पाटन और क्षति के पहलू से पूर्ण रूप से असंगत है। पाटन को इस कंपनी द्वारा किये गये कुल निर्यातों और भारत में संबद्ध देश से सैकरिन के आयातों के प्रभाव के संबंध में स्थापित किया जाना अपेक्षित है। केवल यह तथ्य कि घरेलू उत्पादकों में से एक उत्पादक को कुछ बिक्री किया गया है पूर्णरूप से असंगत है, विशेषकर जब इस प्रकार की कंपनी घरेलू

- उद्योग का हिस्सा न हो। इसके अलावा यदि मैसर्स श्री वरदायनि केमिकल इंडस्ट्री प्रा. लिमि. को इसके आयातों के कारण अपात्र के रूप में माना जाता हो तब याचिकाकर्ता के स्थान में और अधिक वृद्धि होती है।
111. इस तर्क के संबंध में की घरेलू उद्योग आई पी श्रेणी है जबकि इण्डोनेशिया का उत्पाद तकनीकी, बी पी और यू एस पी श्रेणी है, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि उनके अपने दावे के अनुसार ये केवल अलग अलग श्रेणी है। हालांकि निर्यातक से यह अपेक्षित है कि वे अपने निर्यातों की पहचान करें और सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत, पाटन मार्जिन, पहुंच कीमत और क्षति मार्जिन पर अपने प्रभावा की मात्रा का उल्लेख करें। हालांकि, निर्यातक ने विभिन्न श्रेणियों के संभावित रूप से मौजूद होने की पहचान मात्र की है। यह भी नोट किया जाता है कि आयात से संबंधित आंकड़े सतत आधार पर उत्पाद की श्रेणी का संदर्भ नहीं लेते हैं। इसके अलावा, यह भी नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग ने भी इस उत्पाद की विभिन्न श्रेणियों का उत्पादन किया है।
112. अलग अलग मेस आकार के उत्पादन के प्रमाण के संबंध में, प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि इस संबंध में संगत साक्ष्य सत्यापन दौरे के समय देखे गये थे और यह देखा गया है कि वास्तव में घरेलू उद्योग अलग अलग मेस आकार का उत्पादन करता है और उसकी बिक्री करता है।
113. इस तर्क के संबंध में की अपेक्षाकृत कम आयात कीमत को इण्डोनेशिया के उत्पादकों द्वारा इनकार नहीं किया गया है जैसा कि ऊपर में दी गई तालिका से देखा जा सकता है, पूर्व के वर्ष की तुलना में जांच की वर्तमान अवधि में आयात की कीमत में बहुत अधिक गिरावट हुई है। इण्डोनेशिया के उत्पादकों ने आयात की कीमत में इस गिरावट को स्पष्ट नहीं किया है।
114. इस तर्क के संबंध में की लेखांकन के उद्देश्यों से एक्सेल के उपयोग को इस उत्पादक/ निर्यातक पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं डालना चाहिए, यह स्पष्ट किया जाता है कि वास्तव में एक्सेल के उपयोग से संबंधित विवरण प्रश्नावली के उत्तर को स्वीकार न किए जाने के लिए कारण नहीं रहा है। जैसा कि विस्तार से सत्यापन रिपोर्ट, प्रकटन विवरण में और इसके ऊपर स्पष्ट किया गया है, निर्यातक प्राधिकारी को निर्यातक द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना की विश्वसनीयता के संबंध में संतुष्ट नहीं कर पाये हैं। निर्यातक यह सिद्ध नहीं कर पाये हैं कि वास्तव में एक्सेल संबंधी विवरणों के माध्यम से उपलब्ध कराई गई सूचना कंपनी द्वारा रखे गये लेखा बुक की पुष्टि करता है। यदि निर्यातक यह नहीं दर्शाता है कि उपलब्ध कराई गई सूचना कंपनी के लेखा बुक के पूर्ण से अनुकूल है, तब प्राधिकारी प्रश्नावली के उत्तर को स्वीकार नहीं कर सकते हैं क्योंकि आय एवं व्यय, परिसंपत्ति और देयताओं की विश्वसनीयता और स्वीकार्यता इस प्रकार की स्थिति में बहुत अधिक संदिग्ध है। यह भी स्पष्ट किया जाता है कि जांच करने वाले दल ने कभी भी इस सूचना का सत्यापन करने के केवल इस कारण से इनकार नहीं किया है कि उसे एक्सेल प्रपत्रों में प्रस्तुत किया गया था। वास्तव में जांच करने वाले दल ने इस निर्यातक को स्पष्ट रूप से सूचित किया कि सत्यापन के उद्देश्य में इस कंपनी द्वारा रखे गये रिकार्डों से सूचना की सत्यता का पता लगाना शामिल था। जैसा कि सत्यापन रिपोर्ट में विस्तार से उल्लेख किया गया, निर्यातक ने इसका खंडन नहीं किया गया है और वास्तव में यह माना है कि इसने सत्यापन दौरे के समय आंकड़ों को संशोधित सेट प्रस्तुत किया था, जो स्पष्ट रूप से इस सूचना की विश्वसनीयता के बारे में बहुत अधिक चिंता को व्यक्त किया।
115. वास्तव में निर्यात ने यह स्वीकार किया है कि विचाराधीन उत्पाद और गैर विचाराधीन उत्पाद के बीच व्यय का संशोधित आवंटन सत्यापन दौरे के समय उपलब्ध कराया गया था। इसके अलावा, पूर्व के और संशोधित सूचना के अवलोकन ने इन आंकड़ों में किये गये बहुत अधिक अंतरों को दर्शाया। सबसे अधिक, निर्यातक ने सत्यापन पूरा किये जाने के बाद भी इन आंकड़ों में संशोधन किया और सत्यापन दौरे को पूरा किये जाने के बाद आगे संशोधित आंकड़े प्रस्तुत किए।
116. लाभ और हानि के विवरण के संबंध में, निर्यातक ने मौके पर सत्यापन के समय अत्यधिक सूचना दिये जाने के संबंध में स्वीकार किया है और वे सत्यापन के बाद तक लाभ और हानि के विवरण को अनुदित करने में सक्षम नहीं हो सके। केवल यह तथ्य की जांच करने वाले दल ने और अतिरिक्त सूचना संकलित की और साक्ष्य यह संसूचित नहीं करता है कि प्राधिकारी उसके बाद इस प्रकार की सूचना का उपयोग करने के लिए बाध्य हैं। जैसे ही जांच करने वाले दल ने

निर्यातक के परिसरों में सत्यापन शुरू किया है यह स्वाभाविक ही है कि प्राधिकारी ने सत्यापन के समय निर्यात द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना पर भी विचार किया है। हालांकि इसे स्वीकार किया जाना अथवा अन्य प्रकार से केवल इस तथ्य द्वारा गारंटी नहीं दी जाती है कि इस प्रकार की सूचना जांच करने वाले दल द्वारा रिकार्ड पर ली गई थी। इसके अलावा, जैसा कि सत्यापन रिपोर्ट, प्रकटन विवरण और इसमें ऊपर उल्लेख किया गया है, निर्यातक ने भौतिक सत्यापन समाप्त होने के बाद भी इन आंकड़ों में परिवर्तन किया।

ड. भारतीय उद्योग के हित एवं अन्य मुद्दे

117. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि सामान्य तौर पर पाटनरोधी शुल्कों का उद्देश्य पाटन की अनुचित व्यापार प्रथाओं द्वारा घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति को समाप्त करना है ताकि भारतीय बाजार में खुली और उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति फिर से स्थापित हो सके, जो देश के सामान्य हित में है।

ढ. निष्कर्ष

118. इन हितवद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों और उनमें उठाये गये मुद्दों की जांच करने और रिकार्ड में उपलब्ध तथ्यों पर विचार करने के बाद प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि विचाराधीन उत्पाद का निर्यात संबद्ध देश से भारत में उनके सामान्य मूल्य से कम मूल्य पर किया गया है और इसके फलस्वरूप घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है। जांच की अवधि दौरान संबद्ध देश के संबद्ध वस्तुओं के पाटित आयातों द्वारा वास्तविक क्षति हुई है।

ण. सिफारिश

119. यह जांच आरंभ की गई कि और इसे सभी हितवद्ध पक्षकारों को अधिसूचित किया गया था और घरेलू उद्योग, निर्यातकों, आयातकों और हितवद्ध पक्षकारों को पाटन, क्षति और कारणात्मक संबंध के पहलुओं पर सकारात्मक सूचना उपलब्ध कराने के लिए समुचित अवसर प्रदान किए गए थे।
120. इन हितवद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोधों तथा उनमें उठाये गये मुद्दों की जांच करने के बाद तथा रिकार्ड में उपलब्ध तथ्यों पर विचार करने के बाद और पाटनरोधी नियमावली के संबंध में पाटन, क्षति और उस पर कारणात्मक संबंध की जांच आरंभ करने और उसे किए जाने तथा इस प्रकार के पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति तथा सकारात्मक पाटन मार्जिन सिद्ध किए जाने के बाद, प्राधिकारी का यह मत है कि निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाना पाटन और परिणामी क्षति के प्रभाव को कम करने के लिए अपेक्षित है। इस कारण से प्राधिकारी नीचे दिए गए रूप में और तरीके से संबद्ध देश के संबद्ध वस्तुओं के आयातों पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क को लगाये जाने की सिफारिश करना आवश्यक मानते हैं।
121. प्राधिकारी द्वारा अपनाये गये कमतर शुल्क नियम के संबंध में, प्राधिकारी पाटन के मार्जिन और क्षति के मार्जिन में से कमतर के बराबर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाये जाने की सिफारिश करते हैं जिससे कि घरेलू उद्योग की क्षति को दूर किया जा सके। तदनुसार, नीचे दी गई तालिका में निर्दिष्ट राशि के अनुसार निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क संबद्ध देश के मूल के अथवा वहां से निर्यात किए गए संबद्ध वस्तुओं के सभी आयातों पर केंद्र सरकार द्वारा जारी की जाने वाली अधिसूचना की तिथि से लगाये जाने की सिफारिश की जाती है।

शुल्क तालिका

क्र. सं.	शीर्षक/ उप-शीर्षक	वस्तुओं का विवरण	उत्पत्ति के देश/ निर्यातक	उत्पादक	निर्यातक	राशि (अमरीकी डालर/ मी. ट.)
1	29251100	सैकरिन अपने सभी रूपों में	इंडोनेशिया	कोई भी	कोई भी	1633.17

* सीमा शुल्क वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और इस शुल्क का निर्धारण विचाराधीन उत्पाद के विवरण के अनुसार किया जायेगा। ऊपर में उल्लेख किए गए विचाराधीन उत्पाद उपर्युक्त पाटनरोधी शुल्क के अध्यक्षीन तब भी होना चाहिए जब इसका आयात किसी अन्य एच एस कोड के अंतर्गत किया गया हो।

122. इस अधिसूचना के उद्देश्य से आयातों का पहुंच मूल्य सीमा शुल्क अधिनियम 1962 (1962 का 52) के अंतर्गत निर्धारित किए गए अनुसार आकलन योग्य मूल्य होगा और इसमें उक्त अधिनियम की धारा 3, 3क, 8ख, 9 और 9क के अंतर्गत शुल्कों को छोड़कर सभी सीमा शुल्क शामिल हैं।
123. इस अंतिम जांच परिणाम के फलस्वरूप निकलने वाले केंद्र सरकार के आदेश के विरुद्ध अपील सीमा प्रशुल्क अधिनियम के अनुसार सीमा शुल्क, उत्पाद और सेवा कर अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष की जायेगी।

सुनील कुमार, अपर सचिव एवं निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF TRADE & REMEDIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 29th March, 2019

FINAL FINDINGS

Subject: Anti-Dumping Duty investigation concerning imports of “Saccharin” originating in or exported from Indonesia.

A . BACKGROUND OF THE CASE

1. **F. No. 6/13/2018- DGAD.**—Having regard to the Customs Tariff Act, 1975, as amended from time to time (hereinafter also referred to as the Act), and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, as amended from time to time, (hereinafter also referred to as the Rules) thereof: the Designated Authority (hereinafter also referred to as the Authority) had recommended imposition of anti-dumping duty on imports of “Saccharin” (hereinafter also referred to as the subject goods), originating in or exported from Indonesia (hereinafter referred to as the subject country).
2. Whereas, M/s Swati Petro Products Pvt. Ltd. (hereinafter also referred to as the “Petitioner” or “Applicant”) filed a petition before the Designated Authority (hereinafter also referred to as the Authority) seeking imposition of anti-dumping duties in accordance with the Customs Tariff Act, 1975 as amended from time to time (hereinafter also referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of injury) Rules, 1995 as amended from time to time (hereinafter also referred to as the Rules) for imposition of Anti-dumping duty on imports of “Saccharin” (hereinafter also referred to as subject goods) originating in or exported from Indonesia (hereinafter also referred to as the subject country).
3. And, whereas, the Authority, on the basis of sufficient evidence submitted by the Petitioner, issued a public notice vide Notification No. 6/13/2018 – DGAD dated 14th June, 2018, published in the Gazette of India, initiated the subject investigation in accordance with the Rule 5 of the above Rules to determine existence, degree and effect of the alleged dumping of the subject goods, originating in or exported from the subject country, and to recommend the amount of anti-dumping duty, which, if levied, would be adequate to remove the alleged injury to the domestic industry.

B. PROCEDURE

4. The procedure described herein below was followed by the Authority with regard to the subject investigation:-
 - (a) The Authority notified the Embassy of the Subject Country in India about the receipt of the present anti-dumping application before proceeding to initiate the investigation in accordance under Sub-Rule (5) of Rule 5 supra.
 - (b) The Authority issued a public notice dated 14th June, 2018 published in the Gazette of India Extraordinary, initiating anti-dumping investigation concerning imports of the subject goods.

- (c) The Authority sent a copy of the initiation notification to the Embassy of the Subject Country in India, known producers/exporters from the subject country, known importers/users and the domestic industry as well as other domestic producers as per the addresses made available by the applicant and requested them to make their views known in writing within 40 days of the initiation notification.
- (d) The Authority provided a copy of the non-confidential version of the application to the known producers/exporters and to the embassy of the subject country in India in accordance with Rule 6(3) of the Rules supra.
- (e) The Embassy of the subject country in India was also requested to advise the exporters/producers from their country to respond to the questionnaire within the prescribed time limit. A copy of the letter and questionnaire sent to the producers/exporters was also sent to Embassy along with the names and addresses of the known producers/exporters from the subject country.
- (f) The Authority sent Exporters questionnaires to elicit relevant information to the following known producers/exporters in the subject country in accordance with Rule 6(4) of the AD Rules:
 - i. PT. Golden Sari
 - b. PT. Batang Alum Industrie
- (g) In response, the following exporters/producers from the subject country filed exporter's questionnaire response in the prescribed format:
 - (i) PT. Golden Sari
 - (ii) PT. Batang Alum Industrie
- (h) The Authority sent Importer's Questionnaires to the following known importers/users of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4) of the Rules:
 - (i) Eagle Trading Company
 - (ii) Colgate Palmolive India Ltd.
 - (iii) General Import Co. India
 - (iv) Jagmohandas & sons.
 - (v) C J Shah & Co.
 - (vi) Nectar Drugs P Ltd.
 - (vii) Procter & Gamble Hygiene and Health
 - (viii) Neeru Marketing P Ltd.
 - (ix) Speciality Chemicals
 - (x) Nandlal Bankatlal Pvt. Ltd.
 - (xi) Sun Shine Cosmetics Ltd.
 - (xii) Grauer & Weil India Ltd.
- (i) In response, none of the importers/users have responded and filed importer's questionnaire response. However, legal submissions have been filed by M/s Sandeep Organics Ltd.
- (j) The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties.
- (k) Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) and DG, Systems to provide the transaction-wise details of imports of subject goods for the past three years, and the period of investigation, which was received by the Authority. The Authority relied upon the DGCI&S data for computation of the volume of imports and required analysis after due examination of the transactions.
- (l) The Non-Injurious Price (NIP) based on the cost of production and cost to make & sell the subject goods in India based on the information furnished by the domestic industry on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and Annexure III to the Anti-Dumping Rules has been worked out so as to ascertain whether Anti-Dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to the Domestic Industry.

- (m) Physical inspection through on-spot verification of the information provided by the applicant domestic industry, to the extent deemed necessary, was carried out by the Authority. Only such verified information with necessary rectification, wherever applicable, has been relied upon for the purpose of present investigation.
- (n) Verification of the information provided by the producers/exporters, to the extent deemed necessary, was carried out by the Authority.
- (o) The Period of Investigation for the purpose of the present anti-dumping investigation is from 1st April, 2017 to 31st March, 2018 (12 Months). The injury investigation period has, however, been considered as 2014-15, 2015-16, 2016-17 and the POI.
- (p) In accordance with Rule 6(6) of the AD Rules, the Authority also provided opportunity to all interested parties to present their views orally in a hearing held on 11th September, 2018. All the interested parties who had attended the oral hearing were advised to file written submissions of the views expressed orally. The interested parties were also provided an opportunity to file rejoinder submissions to the written submissions made by the opposing interested parties.
- (q) The submissions made by various interested parties during the course of this investigation, wherever found relevant, have been addressed by the Authority.
- (r) Information provided by the interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims wherever warranted and such information has been considered as confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non-confidential version of the information filed on confidential basis.
- (s) Wherever an interested party has refused access to, or has otherwise not provided necessary information during the course of the present investigation, or has significantly impeded the investigation, the Authority has considered such parties as non-cooperative and recorded the disclosure statement on the basis of the facts available.
- (t) The exchange rate adopted by the Authority for the subject investigation is US\$1 = Rs. 65.33

C. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND LIKE ARTICLE

C.1. Submissions made by the Domestic Industry

5. The submissions made by the domestic industry with regard to product under consideration and like article and considered relevant by the Authority are as follows:-
 - (a) Saccharin is a non-nutritive sweetener and considered to be a low calorie substitute for cane sugar. It is a white crystalline powder form and is odorless. Saccharin is more than 500 times sweeter than sugar. Saccharin can be divided into two types, i.e., Soluble and insoluble Saccharin.
 - (b) Saccharin is produced in two physical forms that is, granular and powder. Sodium Saccharin in granular form is used in situation where Saccharin will be dissolved, powder form which has been grounded and spray dried is used in dry mixes and pharmaceuticals.
 - (c) Saccharin can be used for a variety of industries such as food and beverages, personal care products, table top sweeteners, electroplating brighteners, etc. The difference in Saccharin used for industrial purposes and Saccharin for food and beverages is the purity of the Saccharin.
 - (d) Saccharin is classified under Chapter 29 of the Customs Tariff Act, 1975 under sub-headings No. 29251100.
 - (e) Even when the country concerned was different, the product description provided in the previous investigation remains relevant. Import volume or de-minimis level is seen for the product under consideration and not for specific types. In the present case, both the types, i.e., soluble and insoluble saccharin are part of PUC. Further, imports to India as well as production of the domestic industry, both, includes insoluble saccharin and thus there is no basis to seek exclusion.
 - (f) Domestic industry produces saccharin of all mesh size. No evidence has been brought forward that product produced by the domestic industry cannot be used by beverage industry. M/s Blue Circle Organics Pvt. Ltd. has been exporting subject goods to beverage industry in various countries.

- (g) It is not that the production process used by Indonesian producers is shorter but it is a case where Indonesia producers are de-facto not undertaking production of Saccharin and merely importing the product at penultimate stage, undertaking minor value addition and thereafter exporting it to India. This is evidenced by the value addition carried out by Indonesia producer.

C.2. Submissions made by the other interested parties

6. The submissions made by the exporters, importers, users and other interested parties with regard to product under consideration and like article, and considered relevant by the Authority, are as follows:-
- (a) There is a difference in appearance, quality, usage and price of sodium/soluble saccharin and insoluble saccharin as sodium soluble has 15% water and is cheaper by 15%. Imports of Insoluble saccharin from Indonesia are NIL in the POI. Thus, insoluble Saccharin should be excluded from the scope of the present investigation.
- (b) There is a difference in the Mesh size of PT Golden Sari and it is the mesh size produced by PT Golden Sari which is preferred by beverage industry.
- (c) Production process of Indonesian exporters is shorter since they use semi-finished raw material.

C.3. Examination by the Authority

7. The product under consideration in the present investigation is “Saccharin in all its form” originating in or exported from Indonesia. “Saccharin is a non-nutritive sweetener and considered to be low calorie substitute for cane sugar. Primarily there are two types of Saccharin i.e. soluble and insoluble. In market parlance soluble saccharin is called sodium saccharin whereas insoluble saccharin is called saccharin or saccharin acid. Apart from sodium saccharin, saccharin can have other variants such as calcium and zinc saccharin. Saccharin is produced in two physical forms, viz. granular and powder. Sodium saccharin in granular form is used in situations where saccharin will be dissolved, the powder form which has been grounded and spray dried is used in dry mixes and pharmaceuticals. It is slightly soluble in water. Insoluble form of saccharin is used in many pharmaceutical and medical applications. Saccharin is used in a variety of industry such as food and beverage, personal care products, table top sweeteners, electroplating brighteners, pharmaceuticals, etc. Saccharin is more than 500 times sweeter than sugar. All forms of Saccharin are within the scope of the present investigation.
8. It is noted by the Authority that the imports of the subject goods from China have been subject to anti-dumping duties in the past with the last SSR investigation being concluded in 2017. In the present investigation, the scope of product under consideration is kept as same as was done in the earlier concluded investigations. The Authority vide notification number 15/23/2016-DGAD dated 30th December, 2017 had noted as follows:-

“The product under consideration (PUC) in the present investigation is Saccharin originating in or exported from China PR. Saccharin is a nonnutritive sweetener and considered to be low calorie substitute for cane sugar. Primarily there are two types of Saccharin i.e. soluble and insoluble. In market parlance soluble saccharin is called sodium saccharin whereas insoluble sodium saccharin is called insoluble saccharin. Apart from sodium saccharin, saccharin can have other variants such as calcium and zinc saccharin. Saccharin is produced in two physical forms, viz. granular and powder. Sodium saccharin in granular form is used in situations where saccharin will be dissolved, the powder form which has been grounded and spray dried is used in dry mixes and pharmaceuticals. It is slightly soluble in water. Insoluble form of saccharin is used in many pharmaceutical and medical applications. Saccharin is used in a variety of industry such as food and beverage, personal care products, table top sweeteners, electroplating brighteners, pharmaceuticals, etc. Saccharin is more than 500 times sweeter than sugar. All forms of Saccharin are within the scope of the present investigation.”

Saccharin is classified under Chapter 29 of the Customs Tariff Act, 1975 under sub-headings No. 29251100. The domestic industry claimed imports of subject goods under several other tariff sub-headings as well, which has been examined below. However, the Customs classification is indicative only and not binding on the scope of the investigations.”

9. With regard to like article, Rule 2(d) of the Anti-Dumping Rules provides as under:-

“like article” means an article which is identical or alike in all respects to the article under investigation for being dumped in India or in the absence of such article, another article which although not alike in all respects, has characteristics closely resembling those of the articles under investigation;

10. With regard to the claim on exclusion of insoluble Saccharin from the scope of the PUC, the Authority notes that both products have ultimately the same end usage of being sweeteners. Thus, apart from the minor difference of one being soluble and the other insoluble, there is no other significant difference in both types. Further, the end users of the product concerned also do not differentiate between the two forms of saccharin. Thus, there is no merit in seeking exclusion of insoluble saccharin from the scope of product under consideration.
11. As regards the contention that mesh size produced by Pt. Golden Sari is different and is used by beverage industry, the Authority notes that the domestic industry produces subject goods of all mesh size. Further, the Domestic industry has provided evidence showing exports of subject goods to beverage industries the world over.
12. As regards the claim that the process used by the Indonesian producers is shorter from that of the Indian producers, the Authority verified that the production process followed by the Indonesian producers is shorter because they are importing intermediate products for producing saccharin.
13. After considering the information on record, the Authority holds that there is no known difference in product under consideration exported from the subject country and the subject goods produced by the domestic industry. The subject goods produced by the domestic industry are comparable to the subject goods exported from subject country in terms of characteristics such as physical & chemical characteristics, functions & uses, product specifications, distribution & marketing and tariff classification of the goods. The two are technically and commercially substitutable. The consumers are using the two interchangeably.
14. The Authority holds that the subject goods produced by the domestic industry are like articles to the product under consideration exported from the subject country, in accordance with the AD Rules.

D. SCOPE OF DOMESTIC INDUSTRY & STANDING

D.1. Submissions made by the Domestic Industry

15. The submissions made by the domestic industry during the course of the investigation with regard to scope of domestic industry & standing are as follows:-
 - (a) The application was filed by M/s Swati Petro Products Private Limited and supported by M/s Shree Vardayini Chemical Industries Private Limited, M/s Blue Circle Organics Pvt. Ltd. and M/s A.S. Chemopharma Private Limited. Further, vide letter dated 10th August, 2018, complete information of M/s Blue Circle Organics Pvt. Ltd. was also filed and thus it should be considered a part of the applicant domestic industry.
 - (b) Domestic producers have not imported the product under consideration nor are they related to an importer in India or to any exporter from the subject country. Production of the domestic producers providing information constitutes a major proportion of total Indian production. Thus, they constitute eligible domestic industry and fulfill the requirement of standing within the meaning of the Anti-Dumping Rules. Since the production of the domestic producers constitute as a major proportion of the total Indian production, they are eligible to be domestic industry.
 - (c) M/s Shree Vardayini Chemical Industries Private Limited is not a petitioner in the present investigation thus purchase, if any, made by the company are immaterial to the present investigation. No evidence has been put forward to show that M/s Shree Vardayini Chemical Industries Private Limited has purchased subject goods from the other interested parties.
 - (d) Petitioners command almost 80% of the total Indian production. M/s Shree Vardayini Chemical Industries Private Limited has supported the petition and has provided its sales and production details which shows that its production has declined. Reduction in production by M/s Shree Vardayini Chemical Industries Private Limited at least establishes injury.
 - (e) It is for M/s Vishnu Chemicals Limited to decide whether or not to support the petition. However, the fact that the company has not supported the petition does not imply that the petitioners should suffer injury.

D.2. Submission of other interested parties

16. Other interested parties have made the following submissions:-

- (a) M/s Shree Vardayini Chemical Industries Private Limited has bought soluble sodium from one of the interested parties. Out of 4 importers of saccharin from Indonesia, 1 of the importer has stopped importing.
- (b) Exporter/importer/Domestic industry verification has to be done as M/s Shree Vardayini Chemical Industries Private Limited does not produce and M/s Vishnu Chemicals Limited doesn't support the DI.

D.3. Examination by Authority

17. Rule 2(b) provides as follows:-

“domestic industry” means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in such case the term ‘domestic industry’ may be construed as referring to the rest of the producers”

18. The present application was filed by M/s Swati Petro Products Private Limited and supported by M/s Shree Vardayini Chemical Industries Private Limited, M/s Blue Circle Organics Pvt. Ltd. and M/s A.S. Chemopharma Private Limited. During the course of the investigation M/s Blue Circle Organics Pvt. Ltd vide letter dated 10th August, 2018 filed its complete information. The production by M/s Swati Petro Products Private Limited and M/s Blue Circle Organics Pvt. Ltd constitutes 75% of total Indian production and thus constitutes “a major proportion of total India Production. It is further noted that M/s Blue Circle Organics Pvt. Ltd has imported 23.65 MT of the subject goods which is less than 1% of the total Indian demand and that too under Advance Authorization Scheme, therefore, the Authority has decided to condone the same and consider them as part of domestic industry. None of the petitioner companies are related to an importer in India or to any exporter from the subject country. Thus, M/s Swati Petro Products Private Limited and M/s Blue Circle Organics Pvt. Ltd. constitute the domestic industry in terms of Rule 2(b) of the AD Rules.
19. As regards the claim raised on the issue of non-production by M/s Shree Vardayini Chemical Industries Pvt. Ltd., the Authority notes from the support letter filed by M/s Shree Vardayini Chemical Industries Pvt. Ltd., that it is still in production of the product under consideration however, the same has declined. As regards the claim raised on the absence of support of M/s Vishnu Chemicals Limited to the petition, Authority notes that information was called for from all known producers of the concerned product in the country, however, they have not submitted the information. Furthermore, the participating producers qualify the criteria of standing as per AD Rules.

E. ISSUES RELATING TO CONFIDENTIALITY

The submissions made by domestic industry are as follows:-

20. The non-confidential questionnaire responses of PT. Batang Alum Industrie & PT. Golden Sari has no summary of the confidential version in accordance with Rule 7.

The submissions made by other interested parties are as follows:-

21. The application submitted did not provide any non-confidential data on industry indicators and items used to compute the cost of production to complete the constructed value was kept confidential. There is balance disclosing information which is commercially sensitive and allowing for an interested party to understand the substance of the allegation made.

Examination by the Authority

22. With regard to confidentiality of information, Rule 7 of Anti-dumping Rules provides as follows:-

Confidential information:-

(1) Notwithstanding anything contained in sub rules (2), (3) and (7) of rule 6, sub-rule (2) of rule 12, sub-rule (4) of rule 15 and sub-rule (4) of rule 17, the copies of applications received under sub-rule (1) of rule 5, or any other information provided to the designated authority on a confidential basis by any party in the course of investigation, shall, upon the designated authority being satisfied as to its confidentiality, be treated as such by it and no such information shall be disclosed to any other party without specific authorization of the party providing such information.

(2) *The designated authority may require the parties providing information on confidential basis to furnish non-confidential summary thereof and if, in the opinion of a party providing such information, such information is not susceptible of summary, such party may submit to the designated authority a statement of reasons why summarization is not possible.*

(3) *Notwithstanding anything contained in sub-rule (2), if the designated authority is satisfied that the request for confidentiality is not warranted or the supplier of the information is either unwilling to make the information public or to authorize its disclosure in a generalized or summary form, it may disregard such information."*

23. Submissions made by the interested parties with regard to confidentiality and considered relevant by the Authority are examined and addressed accordingly. Information provided by the interested parties on confidential basis was examined with regard to the need for treating them as confidential. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims of all the parties and accordingly not disclosed such information to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide non-confidential summary of the information filed on confidential basis. The Authority made available the non-confidential version of the evidence submitted by various interested parties in the form of public file.

F. DETERMINATION OF NORMAL VALUE, EXPORT PRICE & DUMPING MARGIN

24. Under Section 9A(1)(c), normal value in relation to an article means:-

- (i) *the comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or*
- (ii) *When there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either*
 - (a) *Comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or*
 - (b) *the cost of production of the said article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6):*

Provided that in the case of import of the article from a country other than the country of origin and where the article has been merely transshipped through the country of export or such article is not produced in the country of export or there is no comparable price in the country of export, the normal value shall be determined with reference to its price in the country of origin.

F.1. Submissions by the Domestic Industry

25. The following submissions have been made by the domestic industry:-

- (a) The domestic industry has not been able to get any information or evidence of price of subject goods in the subject country and has determined the normal value in the subject country on the basis of best estimates of cost of production in subject country, consumption norms and raw material prices of the domestic industry. The power cost is based on the power rates in the subject country.
- (b) Questionnaire responses filed by producers/exporters are grossly deficient and the responding exporters have misrepresented various facts and have claimed excessive confidentiality.
- (c) CBS is the major raw material for the production of saccharin, however China being a non-market economy, imports made from China by the producers needs to be adequately examined by the Authority. The prices are not fair market prices. In a situation where the key raw material is not at fair price, the Authority rejects such prices for the determination of normal value.
- (d) Cost of Indonesian producers should be modified as the raw material is available from China at unreasonably low prices. The Authority is also requested to examine if the producer has procured CBS from China as this would evidence that this is a proxy production facility of Chinese exporters.

- (e) Petitioners have relied upon import data provided by DGCI&S for determining export price. Petitioners have adjusted export price for ocean freight, marine insurance, commission, inland freight expenses, port expenses and bank charges to arrive at ex-factory export price.

F.2. Submissions by the other interested parties

26. No submissions have been made by other interested parties.

F3. Examination by Authority

27. Under section 9A (1) (c) normal value in relation to an article means:-
- a) The comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article, when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6), or
 - b) When there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either:
 - (i) *comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or*
 - (ii) *the cost of production of the said article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6);*
 - c) The Authority sent questionnaires to the known exporters from the subject country, advising them to provide information in the form and manner prescribed. However, barring the following producers and exporters, none of the other producers/ exporters from subject country cooperated in this investigation by filing the prescribed questionnaire responses:-
 - (i) PT. Golden Sari
 - (ii) PT. Batang Alum Industrie
28. PT. Batang Alum Industrie has not provided Audited Accounts for any of the Financial Year. The revised Appendices 7 & 8 submitted at the time of verification were not certified by the Practicing Accountant as required in terms of Trade Notice No. 05/2018 dated 28th February, 2018, therefore, the Exporters Questionnaire Response submitted by PT. Batang Alum Industrie has been rejected for the calculation of Normal Value and Export Price.
29. PT. Golden Sari gave the Revised Appendices at the time of verification with the major changes in the allocation of expenses between PUC & Non PUC. Even after verification they made some changes in the allocation of expenses between PUC & Non PUC. The revised Appendices were signed by Head of Accounting Department who is an employee of the company but not certified by the Practicing Accountant as required in terms of Trade Notice No. 05/2018 dated 28th February, 2018.
30. Further, PT. Golden Sari has only provided the summary of Profit & Loss Account for the POI at the time of verification. English translated version of Audited Accounts were not provided by PT. Golden Sari at the time of verification stating that this could not be translated due to lack of human resources. Now after verification they have submitted the English translated Audited Accounts for the calendar year 2017 and from January to March 2018. However, the complete data for the POI duly reconciled with the Audited Accounts of the company has not been provided by the company and hence the data given in Appendices could not be authenticated/verified. Further, such Appendices have also not been certified by a practicing Accountant.
31. Moreover, the PT. Golden Sari has admitted that they are only using MS Excel for Accounting and to work out the product wise cost, no other Accounting Software/System is being used by them.
32. PT. Golden Sari is using Ammonia, which is a by-product of Sodium Cyclamate (Non-PUC) to produce Saccharin, though the company has shown Ammonia quantity as RM consumption but not considered its value for raw material consumption. Further, the Appendix – 11 related to related party transaction for production and sales of PUC or any of its inputs has to be certified by the practicing Accountant in terms of Trade Notice No. 05/2018 dated 28th February, 2018, however in this case Appendix-11 has also not been certified by a practicing Accountant.

33. During the verification the PT. Golden Sari has given a capacity certificate issued by the government of Indonesia showing installed capacity as under-
- 1) Sodium Cyclamate - 4000 MT
 - 2) Sodium Saccharin - 800 MT,
34. While the production capacity of saccharin has been shown has 620 MT in the Exporters Questionnaire Response.
35. During verification PT. Golden Sari stated that the capacity reported in the business license and current capacity can change over time. The Government does not sanction any reduction or increase in the capacity. The capacity provided in the questionnaire is accurate. Therefore, even the capacity given in the Exporter Questionnaire Response cannot be relied upon. Therefore, the Exporters Questionnaire Response submitted by the PT. Golden Sari has been rejected for the calculation of Normal Value and Export Price.

G. Determination of Dumping Margin

Normal Value and Export Price for all non-cooperating producers/exporters

36. In the absence of any information or evidence of price of subject goods in the subject country the Authority has determined the normal value in the subject country on the basis of best available information i.e. international raw material prices of major items, raw material consumption norms and conversion cost of the efficient domestic producer. For all the non-cooperative producers/exporters in Indonesia, the Authority has constructed the Normal Value as *** US\$/MT
37. The Authority has determined the export price for producers/exporters of Indonesia on the basis of the DGCI&S transaction wise data. The said price is the CIF import price. Accordingly, the weighted average net export price at ex-factory level, in respect of all exporters from Indonesia has been determined after making due adjustments for Ocean Freight, Marine Insurance, Port Expenses, Bank charges, Commission and Inland freight on the basis of best available information. The Authority has determined the Net Export Price as *** US\$/MT

G.1. Dumping Margin Table

38. The dumping margin during the POI for all exporters/producers from the respective subject country have been determined as provided in the table below:

S. No	Producer Country	Producer	Normal Value US\$/MT	Export Price US\$/MT	Dumping Margin US\$/MT	Dumping Margin %	Dumping Margin Range %
1.	Indonesia	Any	***	***	***	***	20-30

H. INJURY ASSESSMENT AND CAUSAL LINK

H.1. Submission made by the Domestic Industry

39. The submissions made by domestic industry are as follows:-
- i. Demand for the PUC has increased over the injury period.
 - ii. Imports from the subject country have increased in absolute terms. Imports in relation to production and consumption have increased significantly in the POI. While there was a decline in imports from subject country during 2015-2016 as compared to base year; the imports increased thereafter, with a sharp surge in the POI.
 - iii. Import price from subject country declined significantly in the POI without corresponding decline in the raw material costs. This has been the primary reason for the injury caused to the domestic industry. The lowering in import price has also been admitted by M/s Sandeep Organics Private Limited
 - iv. It is immaterial whether the supplier from Indonesia reduced the price because of decline in price by China or otherwise. The fact that the import price from China and Indonesia both steeply declined itself clearly shows that the producer in Indonesia has resorted to steep decline in import price.
 - v. The imports have been undercutting the prices of the domestic industry which has increased significantly in the POI.

- vi. The declining prices of the imports have resulted in depression of the prices of the domestic industry.
- vii. The capacity, production and sales of the domestic industry have increased over the injury period. However, such improvements have come at the cost of lowered selling prices to the extent that such lowered selling prices were much below the cost of the sales of the domestic industry.
- viii. Despite the rising demand a proportionate increase in production and sales was not witnessed by the domestic industry leading to higher inventories.
- ix. The market share of the subject imports increased declined till 2015-16 but increased significantly in the POI. The market share of the domestic industry increased till 2015-16 but declined significantly in the POI.
- x. Profits improved marginally in 2016-17 but turned negative in the POI. Cash profits and the ROCE also show the same trend as the profits.
- xi. Inventory levels have increased significantly in the POI showing the inability of the domestic industry to sell their produce despite sufficient demand.
- xii. Employment levels and wages paid have increased over the injury period; however, such parameters are not reflective of the impact of dumping on the domestic industry.
- xiii. The existing capacity with the petitioner is largely unutilized. With current capacity being unutilized and losses being incurred by the domestic industry, the ability of the petitioner to raise capital has weakened.
- xiv. Impact of dumped goods on the domestic industry has been adverse.
- xv. There are no self-inflicting factors responsible for the injury. There is no change in pattern of consumption, in fact there has been an increase in demand. The competition in the market, if at all affected, is due to the low priced imports from Indonesia.
- xvi. There was ADD in place on imports from China till January 2018. The landed price of import from China after adding ADD was materially higher than the import price from Indonesia. Thus, till December 2017, import price from Indonesia declined despite being the lowest.
- xvii. Allegations made in context to the waste management of the domestic industry relates to Green Acid. Green acid is being sold too by the domestic industry.
- xviii. Import price from subject country declined significantly and sharply in the POI without corresponding decline in the raw material costs. The effect of no custom duty is not significant as compared to the effect of actual export price. This has been the primary reason for the injury caused to the domestic industry.
- xix. The fact that PT. Golden Sari exports to other countries and has various certifications is irrelevant. However, its majority exports are to India.
- xx. The fact that petitioners had complained before DRI in fact had a merit get established by their own statements now before the Authority that the exporter is producing the product from CBS (raw material). Indonesian production is nothing but a proxy production of Chinese producers. The value addition from the stage of CBS is grossly low as compared to the full production process undertaken by M/s Blue Circle Organics Pvt. Ltd.
- xxi. Imports from country other than the subject counties are either negligible or the import prices are higher, and are hence not causing injury to the domestic industry.
- xxii. The performance of the domestic industry and injury thereto has been examined with respect to the domestic sales operations to the extent possible. Possible deterioration in the export performance of the domestic industry is, therefore, not a possible cause of injury to the domestic industry.

- xxiii. The technology and production process for producing product under consideration has not undergone any significant development. Possible development in technology is not a cause of injury to the domestic industry.
- xxiv. Performance of other products being produced and sold by the Petitioner is not a possible cause of injury to the domestic industry. In any event, the Petitioner consider that information relating to the product under consideration is the only relevant information for the present purpose and the Petitioner has provided this information as the domestic industry.
- xxv. There is no trade restrictive practice, which could have contributed to the injury to the domestic industry.
- xxvi. There has been no material change in the pattern of consumption of the product under consideration.
- xxvii. The producers from the subject country offered low prices in the Indian market. Resultantly, the volume of imports which was decreasing till 2016-17 increased significantly in the POI.
- xxviii. Faced with significant reduction in import prices, the domestic industry was also forced to reduce the prices. The reduction in the prices by the domestic industry is due to low price offered by the exporters from subject country.
- xxix. The price undercutting has thus led to price depression and resultantly underselling in the market.
- xxx. The imports are priced below the level of cost of production of the domestic industry.
- xxxi. As a result of price reduction, the performance of the domestic industry has deteriorated in terms of profits, cash profits (cash flows) and return on investments. Thus, the deterioration in performance of the domestic industry is due to dumping of the subject goods in the country.
- xxxii. Inventories with the domestic industry have increased very significantly and at all-time high levels.

H.2. Submission by other interested parties

40. The submissions made by other interested parties are as follows:-

- i. The Petitioner's performance has improved in terms of quantity, sales value, market share, production and productivity. Domestic Industry is perfectly healthy and DGTR has failed to examine the overall economic parameters.
- ii. The price effect mentioned in the petition is mainly due to China's export price. Even at global level, lower export prices are due to China's market expansion.
- iii. Imports of PUC did not impact the performance of Petitioner but other self-inflicting factors are responsible for injury. China's import of Saccharin is the major factor attributable to injury claimed. DGTR should also examine factors like production facility of petitioner, state of competition in market and change in pattern of consumption etc.
- iv. Effects of removal of ADD on China also have to be considered.
- v. Indonesia does not have the capacity to dump goods.
- vi. Domestic industry faces problem of pollution and waste management, the expenses of which should also be factored in.
- vii. There is no import duty in the POI, which was earlier to be paid by the importers. This helped in the reduction of the prices. Other taxes were also abolished in the POI.
- viii. PT. Golden Sari exports to other third countries too and has various certifications.
- ix. DI earlier made false complaints to Directorate of Revenue Intelligence regarding imports of saccharin from Indonesia. Global/China prices of saccharin and raw material prices also need to be factored in.

- x. Indonesian CIF prices have been higher than that of Chinese CIF prices when there is no duty on imports from China. So logically there should be no duty on Indonesian imports too. Indonesian CIF prices remained normal in the POI when in fact they had increased much above the normal prices before the POI.

H.3. Examination of Authority

41. The Authority has taken note of the submissions made by the interested parties and has examined the various parameters in accordance with the Anti-Dumping Rules after duly considering the submissions made by the interested parties.
42. Rule 11 of Antidumping Rules read with Annexure II provides that an injury determination shall involve examination of factors that may indicate injury to the domestic industry, “taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles....”. In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree. For the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry in India, indices having a bearing on the state of the industry such as production, capacity utilization, sales volume, stock, profitability, net sales realization, the magnitude and margin of dumping, etc. have been considered in accordance with Annexure II of the Anti-Dumping Rules.
43. The submissions made by the domestic industry and other interested parties during the course of investigations with regard to injury and causal link and considered relevant by the Authority are examined and addressed as below.

H.4. Volume Effect of Dumped Imports on the Domestic Industry

- (a) Assessment of Demand/Apparent Consumption
44. The Authority has taken into consideration, for the purpose of the present investigation, demand or apparent consumption of the product in India as the sum of domestic sales of the Indian Producers and imports from all sources. The demand so assessed shows that demand has increased during the injury investigation period. Demand showed a marginal decline in the year 2016-17 as compared to 2015-16 but increased in the POI.

Particulars	Units	2014-15	2015-16	2016-17	POI
Sales of Domestic Industry	MT	***	***	***	***
Sales of Other Indian Producers	MT	***	***	***	***
Imports from Subject Country	MT	421	213	262	543
Imports from Other Countries	MT	501	675	323	610
Total Demand/Consumption	MT	***	***	***	***

(b) Import Volumes from subject country & other countries

45. With regard to the volume of the imports, the Authority is required to consider whether there has been a significant increase in imports from subject country, either in absolute terms or relative to production or consumption in India.

Particulars	Units	2014-15	2015-16	2016-17	POI
Subject Country	MT	421	213	262	543
Other Countries	MT	501	675	323	610
Total imports	MT	922	888	585	1153

46. It is seen that imports of the subject goods from the subject country declined in the year 2015-16. Thereafter, they showed a slight increase in the year 2016-17. However, in the POI, the imports from the subject country have increased significantly in absolute terms.

(c) **Subject Country Imports in relative terms**

Import in relation to	Unit	2014-15	2015-16	2016-17	POI
Indian Production	%	***	***	***	***
Indian Demand	%	***	***	***	***

47. It is seen that the subject imports in relation to Indian production declined till 2015-16 but have more than doubled from then till the POI. Imports in relation to the prevailing demand declined in the year 2015-16 but have shown a significant increase thereafter. Imports in relative terms have, thus, shown significant increase in the POI.

H. 5. Price Effect of Dumped Imports on the Domestic Industry

48. With regard to the effect of the dumped imports on prices, it is required to be analyzed whether there has been a significant price undercutting by the alleged dumped imports as compared to the price of the like products in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices or prevent price increases, which otherwise would have occurred in the normal course. The impact on the prices of the domestic industry on account of the dumped imports from subject country has been examined with reference to the price undercutting, price underselling, price suppression and price depression, if any. For the purpose of this analysis, the cost of production, net sales realization (NSR) and the non-injurious price (NIP) of the domestic industry have been compared with weighted average landed price of imports of the subject goods from the subject country.

a) Price Undercutting

49. For the purpose of price undercutting analysis, the net selling price of the domestic industry has been compared with the landed value of imports from the subject country. While computing the net selling price of the domestic industry all taxes, rebates, discounts and commissions have been deducted and sales realization at ex works level is determined for comparison with the landed value of the dumped imports.

Accordingly, the undercutting effects of the dumped imports from the subject country works out as follows:-

Particulars	Unit	2014-15	2015-16	2016-17	POI
Landed price of imports	Rs/MT	4,90,936	5,78,365	6,53,472	4,75,374
Net Selling Price	Rs/MT	***	***	***	***
Price Undercutting	Rs/MT	***	***	***	***
Price Undercutting	%	***	***	***	***
Range (Price Undercutting)	%	10-20	5-15	Negative	15-25

50. From the aforesaid table, it is noted that imports from subject country are undercutting the prices of the domestic industry and the level of price undercutting is significant. The landed price of imports have shown significant decline in the POI.

b) Price Suppression and Depression

51. In order to determine whether the dumped imports are depressing the domestic prices and whether the effect of such imports is to suppress prices to a significant degree or prevent price increases which otherwise would have occurred in normal course, the changes in the costs and prices over the injury period, were compared as below:-

Particulars	Unit	2014-15	2015-16	2016-17	POI
Landed price of imports	Rs/MT	4,90,936	5,78,365	6,53,472	4,75,374
Index		100	118	133	97
Cost of Sales	Rs/MT	***	***	***	***

Index		100	112	108	111
Selling Price	Rs/MT	***	***	***	***
Index		100	113	116	104

52. From the above table, it is seen that cost of sales has increased in 2015-16, decreased in 2016-17 and then increased in POI. The selling price of the domestic industry has increased up to 2016-17 but reduced significantly during POI however, the increase in selling price up to 2016-17 is below the level of cost of sales. Further, whereas cost of sales increased in the POI, the selling price has declined in the POI. Landed price of imports have remained below the level of cost and selling price of the domestic industry barring 2016-17. Thus imports have had depressing effect on the domestic industry prices.

c) Price Underselling

53. The non-injurious price (NIP) of the domestic industry has been determined and compared with the landed value of the subject goods to arrive at the extent of price underselling. The NIP of the product under consideration has been determined by adopting the verified information/data relating to the cost of production for the period of investigation on the basis of principles mentioned in Annexure III of the Rules. The analysis shows that during the period of investigation, the landed value of subject imports was below the non-injurious price of the domestic industry, as can be seen from the table below, demonstrating positive price underselling effect:-

Particulars	Rs/MT	USD/MT
Non injurious price	***	***
Landed value	4,75,374	7,276.44
Price Underselling	***	***
Price Underselling %	***	***
Range %	20-30	20-30

H.6. Economic Parameters of the Domestic Industry

54. Annexure II to the Anti-Dumping Rules requires that the determination of injury shall involve an objective examination of the consequent impact of these imports on domestic producers of such products. With regard to consequent impact of these imports on domestic producers of such products, the Anti-dumping Rules further provide that the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry should include an objective and unbiased evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including actual and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments.
55. Authority has examined the injury parameters objectively taking into account various facts and arguments made by the interested parties in their submissions.

(a) Production, Capacity, Capacity Utilization and Sales

56. Capacity, production, capacity utilization and sales of the domestic industry over the injury period is given in the following table: -

Particulars	Unit	2014-15	2015-16	2016-17	POI
Installed Capacity	MT	1920	1920	1920	2820
Indexed		100	100	100	147
Production	MT	***	***	***	***
Indexed		100	173	230	241
Capacity Utilisation	%	***	***	***	***
Indexed		100	173	230	165

Domestic Sales	MT	***	***	***	***
Indexed		100	156	160	196

57. From the above table, it is noted that:

- Domestic industry has enhanced its capacity keeping in view the growing demand of subject goods.
- Production of the domestic industry increased over the injury period. However, the same is much below the levels of capacity established and the demand in the domestic market. The capacity utilization of the domestic industry has declined and is much below the optimum level.
- Domestic sales have increased over the injury period. However, in view of the prevailing demand and the capacity with the domestic industry, it is observed that the existing sales figures are still low.

(b) Profitability, return on investment and cash profits

58. Profitability, return on investment and cash profits of the domestic industry over the injury period is given in the table below: -

Particulars	Unit	2014-15	2015-16	2016-17	POI
Total PBIT	Rs. Lacs.	***	***	***	***
Indexed		(100)	(160)	121	(443)
Cash Profits	Rs. Lacs.	***	***	***	***
Indexed		(100)	(170)	201	(208)
PBIT as % of Avg. Capital Employed	%	***	***	***	***
Indexed		(100)	(107)	114	(121)

59. From the above table, it is noted that:-

- The domestic industry was incurring losses in the base year and in 2015-16 and thereafter earned profit in 2016-17. However, the domestic industry again incurred significant losses in the POI. It has been noted earlier that the subject imports were undercutting the selling prices of the domestic industry except in 2016-17. It is only during the same period that the domestic industry was marginally profitable.
- ROCE and cash profit shows the same trend as that of profits. ROI is significantly negative in the POI,
- Employment, productivity and wages**

60. Employment, productivity and wages over the injury period is given in the table below.

Particulars	Unit	2014-15	2015-16	2016-17	POI
No. of Employees	Nos.	***	***	***	***
Indexed		100	113	133	164
Productivity Per Day	MT/Day	***	***	***	***
Indexed		100	172	229	241

61. It is noted that the Productivity per day and employees have increased over the injury period in consonance with the increase in production.

(d) Inventories

62. Inventory position with the domestic industry over the injury period is given in the table below:-

Particulars	Unit	2014-15	2015-16	2016-17	POI
Opening	MT	***	***	***	***

Closing	MT	***	***	***	***
Average	MT	***	***	***	***
Indexed		100	141	220	325

63. It is noted that the inventories with the domestic industry have increased significantly despite increase in production.

(e) Growth

64. Growth of the domestic industry with regard to production and domestic sales has been positive. However, it is seen that growth in terms of cost of sales, selling price, Profit/loss, cash profit and ROI turned positive only in 2016-17 but turned significantly negative in the POI. It is seen that the unfairly priced imports have caused an adverse impact on the domestic industry in the POI.

Particulars	UOM	2014-15	2015-16	2016-17	POI
Growth (year to year)					
Production	%	-	73	33	5
Domestic Sales	%	-	56	2	23
Cost of Sales	%	-	12	(4)	3
Selling Price	%	-	13	3	(11)
Return on investment	%	-	(8)	112	(1013)

(f) Ability to Raise Capital Investments

65. The Authority notes that in view of the largely unutilized capacities available with the domestic industry and the losses being suffered by the domestic industry, their ability to raise any further capital for investments has been compromised.

(g) Factors affecting domestic prices

66. The examination of the import prices from the subject country, change in the cost structure, competition in the domestic market, factors other than dumped imports that might be affecting the prices of the domestic industry in the domestic market has been undertaken. The data shows that the landed value of imported subject goods from the subject country is below the selling price and the non-injurious price of the domestic industry, causing price undercutting and price underselling in the Indian market. The Authority notes that the prices of the product under consideration in general should move in tandem with the prices of key raw materials. Domestic industry has claimed that they are forced to align its prices to the market prices, which are dictated by the prices offered by the foreign producers/exporters from the subject country. Thus, the landed value of subject goods from the subject country is an important factor for determination of domestic prices. The Authority notes that the Domestic Industry is getting affected by the import of subject goods at dumped prices.

I. Threat of Material Injury

I.1. Submissions made by Domestic Industry

67. Following submissions were made by the domestic industry in this regard -
- There is threat of material injury to the domestic industry due to significant increase in imports from the subject country.
 - The producers in subject countries have huge freely disposable capacities. Indonesian producers should be considered as de-facto extensions of Chinese producers. Furthermore, Indonesia is also importing significant quantities of the PUC from China too which clearly evidences that the capacities have only been set up for export markets.
 - Exporters have significant capacity as has been established by their responses and in the hearing. The total demand in India is around 2000 MT. Further exports from Indonesia to world shows that exporters in Indonesia are export oriented.

- iv. The price undercutting from subject countries is significant and the Indian market is attractive which is likely to further increase in imports and cause suppressing/depressing effects.
- v. Inventories could not be ascertained but in view of the significant capacities available with the subject country it can be assumed that the producers can scale up production in a short span of time.

I.1. Submissions of other interested parties

68 The other interested parties made the following submission in this regard :-

- i. Indonesia does not have the capacity to dump goods.

I.3. Examination by the Authority

69. The provisions relating to threat of material injury are as under:-

(vi) *A determination of a threat of material injury shall be based on facts and not merely on allegation, conjecture or remote possibility. The change in circumstances which would create a situation in which the dumping would cause injury must be clearly foreseen and imminent. In making a determination regarding the existence of a threat of material injury, the designated Authority shall consider, inter alia, such factors as:*

- (a) *a significant rate of increase of dumped imports into India indicating the likelihood of substantially increased importation;*
- (b) *sufficient freely disposable, or an imminent, substantial increase in, capacity of the exporter indicating the likelihood of substantially increased dumped exports to Indian markets, taking into account the availability of other export markets to absorb any additional exports;*
- (c) *whether imports are entering at prices that will have a significant depressing or suppressing effect on domestic prices, and would likely increase demand for further imports; and*
- (d) *Inventories of the article being investigated.*

70. A threat of material injury is a situation where the domestic industry has not suffered over the injury period but injury to the domestic industry is imminent if the present circumstances continue. A 'threat of material injury' means clear and imminent danger of injury. The determination of threat of material injury should be based on facts, and not merely on allegation, conjectures, imagination, or remote possibilities.

71. With respect to Threat of Material injury, the Authority notes as under:-

- a) There is substantial increase in imports of subject goods from subject country in absolute terms as well as in relation to production & consumption in India in the POI.
- b) Responses filed by the producers shows significant capacity with these producers. It is further seen that the capacity is being largely utilized for exports. Thus the producers have high export orientation.
- c) The landed price of imports from subject country is significantly lower than the cost and selling price of the domestic industry and is thus likely to cause further price suppression/depression in the domestic market.

J. Magnitude of Injury and Injury Margin

72. The Authority has determined Non-Injurious Price for the domestic industry on the basis of principles laid down in anti-dumping Rules read with Annexure III, as amended. The NIP of the product under consideration has been determined by adopting the verified information/data relating to the cost of production for the period of investigation. The NIP of the domestic industry has been worked out and it has been considered for comparing the landed price from each of the subject countries for calculating injury margin. For determining NIP, the best utilization of the raw materials by the domestic industry over the injury period has been considered. The same treatment has been done with the utilities. The best utilization of production capacity over the injury period has been considered. The production in POI has been calculated considering the best capacity utilization and the same production has been considered for arriving per unit fixed cost. It is ensured that no extraordinary or non-recurring expenses were charged to the cost of production. A reasonable return (pre-tax @ 22%) on average capital employed (i.e. Average Net Fixed Assets plus Average Working Capital) for the product under consideration was allowed as pre-tax profit to arrive at the NIP as prescribed in Annexure-III and being followed. The non-injurious price so determined has been compared with the landed prices of imports from the subject countries to determine the injury margin as follows;

S. No.	Producer Country	Producer	Landed Value (USD/MT)	NIP (USD/MT)	Injury Margin (USD/MT)	Injury Margin %	Range
1.	Indonesia	Any	***	***	***	***	20-30

K. Examination by the Authority

73. As per the AD Rules, the Authority, inter alia, is required to examine any known factors other than the dumped imports which at the same time are injuring the domestic industry, so that the injury caused by these other factors may not be attributed to the dumped imports. Factors which may be relevant in this respect include, inter alia, the volume and prices of imports not sold at dumped prices, contraction in demand or changes in the patterns of consumption, trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers, developments in technology and the export performance and the productivity of the domestic industry. It was examined whether these listed known other factors other than parameters listed under the AD Rules could have contributed to injury to the domestic industry.

a) Volume and price of imports from third countries

74. The Authority notes that imports from other countries, except China, is negligible. Further, the Authority is undertaking a parallel investigation on imports of subject goods from China.

b) Export Performance

75. The injury analysis has been done by the Authority taking into consideration their domestic operations only. Therefore, performance in the export market has not affected the present injury analysis.

c) Development of Technology

76. None of the interested party has raised any issue with regard to developments in technology as being the cause of injury to the domestic industry.

d) Performance of other products of the company

77. The Authority notes that the performance of other products being produced and sold by the Petitioners does not appear to be a possible cause of injury to the domestic industry.

e) Trade Restrictive Practices and Competition between the Foreign and Domestic producers

78. The import of the subject goods is not restricted in any manner and the same are freely importable in the country. The domestic producers compete with the landed prices of the subject goods. The price of the domestic industry is influenced substantially by the landed price of subject goods. Moreover, no evidence has been submitted by any interested party to suggest that the conditions of competition between the foreign and the domestic producers have undergone any change.

f) Contraction in Demand and Changes in pattern of consumption

79. It is noted that the demand of the subject goods has increased significantly in the period of investigation as compared to the base year. Further there is no change in the pattern of consumption.

K.1. Factors relevant for causal link:

80. The Authority notes as under:-

- There is substantial increase in imports of subject goods from subject country in absolute terms as well as in relation to production & consumption in India.
- Landed price of imports have declined significantly in the POI. The price undercutting and underselling from the subject country in POI is positive.
- The dumped imports are depressing the prices of the domestic industry.
- Capacity utilization of domestic industry increased till 2016-17 but showed a decline in the POI and is below optimum level during the entire injury period.

- e) Profitability of domestic industry has declined significantly during the POI. Similarly, PBIT, cash profits and ROCE has also declined during the POI.

K.2. Indian Industry's interest & other issues

81. The Authority notes that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the domestic industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the Country.
82. The essential facts of the investigation gathered by the Designated Authority during the course of the investigations and analyzed by the Authority in the present disclosure statement are being disclosed to the interested parties in order to enable the interested parties to offer their comments on these facts.
83. The Authority would conclude on the matter after receiving the comments of the interested parties on this disclosure statement.

L. POST-DISCLOSURE COMMENTS BY INTERESTED PARTIES

84. The post disclosure submissions have been received from the interested parties. The issues raised therein have already been raised earlier during the course of the investigation and also addressed appropriately. However, for the sake of clarity, the submissions by the interested parties to the extent deemed relevant are being examined as below:-

L.1. Submissions by Domestic Industry

85. Following were the views expressed by the domestic industry in the post disclosure comments-
- i. The product under consideration is saccharin "Saccharin in all its form" originating in or exported from Indonesia. It is a non-nutritive sweetener and considered to be low calorie substitute for cane sugar. It is classified under Chapter 29 of the Customs Tariff Act, 1975 under sub-headings No. 29251100 and the same is indicative only and not binding on the scope of this investigation.
 - ii. There is no known difference between the subject goods exported from the subject country and the goods produced in India. Mere forms or the mesh size of the subject goods does not imply that they be excluded from the scope of the investigation as the ultimate end usage of the different forms of the product under consideration is the same. The Indian product as like article to the subject goods exported by the subject country.
 - iii. The process employed by the Indonesian producers is shorter because they are importing intermediate products for producing saccharin. While PT. Golden Sari produces the product from Chinese CBS, PT. Batang Alum Industrie produces the product from Chinese OTS. Thus, both Indonesian producers are nothing but a proxy production of Chinese producers. The value addition from the stage of CBS or OTS is grossly low as compared to the full production process required to be undertaken.
 - iv. The petition was filed by M/s Swati Petro Products Private Limited and supported by M/s Shree Vardayini Chemical Industries Private Limited, M/s Blue Circle Organics Pvt. Ltd. and M/s A.S. Chemopharma Private Limited. During the course of the investigation complete information by M/s Blue Circle Organics Pvt. Ltd. was filed and thus the same has been considered a part of the domestic industry by the Authority. The applicants have not imported the subject goods from the subject country and are not related any exporter from the subject country or to any importer of the subject goods in India. The applicants constitute domestic industry within the AD Rules.
 - v. On account of discrepancies and the non-disclosure of information the two responding exporters have been held non-cooperative by the Authority and hence the Authority has proceeded with construction of the normal value in the subject country. Reference has also been laid down instances wherein the Authority has in the past rejected responses on account of non-disclosure of true information.
 - vi. The imports have had an adverse impact on the domestic industry in the country.
 - vii. The demand has increased over the injury period in the country. There was marginal decline in 2016-17 as compared to 2015-16 but increased in the POI.
 - viii. Imports declined in 2015-16 but since then they have only increased and have recorded the maximum growth in the POI. Imports in relative terms have, thus, shown significant increase in the POI.
 - ix. Landed price of the subject goods declined significantly in the POI. This lead to significant undercutting margins. Cost of sales increased in 2015-16, decreased in 2016-17 and then increased back again in the POI. The selling price of the domestic industry increased up to 2016-17 but reduced significantly during POI to counter the low priced imports. Landed price of imports remained below the level of cost of sales and the selling price of the domestic industry barring 2016-17. Thus the imports have had a depressing effect on the domestic industry's prices.

- x. The landed prices of the subject imports was much below the non-injurious price of the domestic industry and thereby have led to significant underselling margins.
- xi. In view of the increasing demand the capacity with the domestic industry increased in the POI which resulted in increased production. Further, the sales of the domestic industry increased but the utilization declined and is much below optimum levels.
- xii. Market share of the domestic industry increased till 2016-17 and remained the same in the POI while the market share of the subject imports declined till 2015-16 but increased thereafter and occupied a significant share of the total Indian demand in the POI.
- xiii. Despite increased sales, the inventories with the domestic industry have also increased over the injury period.
- xiv. The domestic industry has been suffering losses. Cash flow and ROI have been showing negative growth. The domestic industry remained profitable only in 2016-17 when the undercutting margins were negative.
- xv. Employment has increased as a result of the enhancement of capacity and the increased production by the domestic industry. This resulted in increased productivity. However, the growth of the domestic industry as a whole has been negative affecting the domestic industry's ability to raise any further capital for fresh investments.
- xvi. Dumping margins and injury margins have been significant and positive.
- xvii. The threat of material injury also exists as – imports have increased significantly both in terms of absolute figures and in relative figures; responses filed show significant capacities available with the subject producers/exporters; the capacity available is being largely utilized for exports and they have a high export orientation; landed price of imports is significantly lower than the cost and selling price and is likely to cause further price suppression/depression.
- xviii. It is only the prices of the subject goods that is negatively affecting the prices of the domestic industry and no other factors, apart from the dumped imports, have affected the domestic industry and caused any injury to the domestic industry.

L.2 Views of the other interested parties

86. Following views were expressed by the other interested parties in the post disclosure comments-

- i. Indian domestic industry experienced positive growth on its most parameters and that the DGTR failed to examine the overall performance of the industries. There was a sharp improvement on production by 141% on POI compared to the base year. The petitioner was also able to expand its installed capacity.
- ii. Economic parameters of the domestic industry have shown growth. Production improved by 141% in the POI as compared to the base year. Parameters like capacity, productivity, domestic sales and employment have increased while capacity utilization declined.
- iii. The DGTR's finding failed to comply with Article 3.1 of the ADA and the objective examination shows that the petitioner did well.
- iv. Injury to the domestic industry is caused by other factors. The reduction in utilization was because of the increase in capacity which clearly shows that the increase in capacity was ineffective; further, it also raised costs for the domestic industry.
- v. Other factors such as absence of pollution and waste facility be also examined. Such unmanageable waste has incurred high transportation cost on the domestic industry negatively impacting its industrial performance.
- vi. Indian consumer preference should also be considered which resulted in end users importing the goods.
- vii. Import price from Indonesia in the POI declined because of decreasing global price of saccharin. The lower export price of saccharin is due to China's producers' market expansion abroad.
- viii. Import price of Indonesia was higher than the import price from China.
- ix. Domestic Industry is spending unreasonable amount on Legal.
- x. PT. Batang Alum Industrie is manufacture of Sodium Saccharin in Indonesia with a production capacity 480 MT per annum or 40 MT per month. It does not have the capacity to dump as the primary focus is on our domestic market in Indonesia.
- xi. Main customer is Unilever Indonesia. Almost half of the production capacity is absorbed by them. The other half is focussed in Indonesian domestic market.
- xii. The production facility uses OTS (Ortho Toluene Sulfonamide) as Raw Material, and not CBS as is mentioned in the report. In view of the several ways of producing Saccharin, calculation of the Normal Values have to take into consideration of those differences
- xiii. The company exported to India only when there were any available stocks or cancelled order from Indonesian customers.

- xiv. The Sales export data shown in POI, the total quantity of export to India is only 69 MT in a year.
- xv. Major difference in appearance, quality, end usage, form & price of sodium/soluble & insoluble which can be distinguished from certificate of analysis.
- xvi. PT. Batang Alum Industrie doesn't produce/manufacture insoluble saccharin.
- xvii. Difference in mesh size of domestic industry & PT. Golden sari sodium/soluble saccharin. Evidence of the same was submitted in terms of COA & sample of Blue Circle & COA of PT. Golden Sari during the oral meeting.
- xviii. Indonesian sodium/soluble is sold to M/s Shree Vardayini Chemical Industries Private Limited.
- xix. The domestic industry faces competition among themselves rather than from imports.
- xx. In POI, CIF was in line with international/global trends. Currency fluctuation should also be factored. Further, fluctuation of other rates and crude oil prices should also be factored in.
- xxi. Domestic industry is producing IP grade while Indonesian producers produce technical, BP & USP grade.
- xxii. Fluctuation of crude oil to be considered. Landing cost/CIF & selling price fluctuated accordingly.
- xxiii. Indonesian CIF came back to earlier normal CIF in POI.
- xxiv. Domestic industry agreed that usage is different for industrial & food/beverage purpose.
- xxv. Proof of production of different mesh size should be given by the domestic industry.
- xxvi. Lower import price has not been admitted by Indonesian producers.
- xxvii. Export from Indonesia is very low.
- xxviii. Usage of excel for accounting purposes should not prejudice the producer/exporter. Attention is drawn on article 6. 8 Annex-II, recital 2 of Article VI, GATT.
- xxix. Recital 26 of the EF as well as draft investigation report indicates that DGTR was unwilling to verify the information because of usage of Excel. Further, they expressed doubts on the authenticity of the information provided on excel.
- xxx. With reference recital 24 of the EF, revision regarding the allocation of PUC and Non-PUC was provided at the outset of the on-site-verification with the difference being explained. An error was made in the original questionnaire response which was only found out in preparation for verification. On receipt of this revised information, the DGTR team mentioned that one of the purposes of the verification was to reconcile these differences and the revised appendices were used for the investigation.
- xxxi. It is incorrect that profit and loss statement was not provided. Profit and loss statement covering the POI was provided prior to the investigation. All supporting documents (as in the verification email) were prepared to include individual ledgers for sampling and inspection for verification. Authority undertook sampling of ledgers with supporting documents being provided for freight, trucking, export sales and domestic sales.
- xxxii. With reference to Trade Notice No. 05/2018 dated 28th February 2018, the Agreement does not require a Practicing Accountant to certify a questionnaire response. The questionnaire was prepared by the Head of accounting team who is a certified practicing accountant.
- xxxiii. With reference to recital 28 of the EF, and as laid out in letter dated 26th February, it was explained that the capacity of 620 MT is accurate. The certificate by Government of Indonesia mentions 800 MT which can no longer be achieved by the machines installed.
- xxxiv. Company is using ammonia as by product from the sodium cyclamate process and according to Indonesian accounting it is of zero value.
- xxxv. Essential facts disclosed have not covered any issue that we have raised in our submission dated 11th September on the occasion of the hearing held.
- xxxvi. Scope of the domestic industry should be verified during the course of the investigation as there remains a doubt on the domestic industry filing an application and that which is the subject of an investigation. The injury investigation should not be limited to producers best placed for demonstrating injury.
- xxxvii. As regards normal value there has been a failure to show efforts made for obtaining a normal value. (Reference laid on the prices available on alibaba.com). Domestic prices claimed by the producer corroborate with those available on the website mentioned and on the basis of such prices dumping does not exist.
- xxxviii. Applicant failed to adjust CNV to ensure a fair comparison in accordance to Article 2.4 of the Agreement as direct selling expense in CNV were not netted out to compare with ex-factory export prices.
- xxxix. Primary market is the own domestic market in Indonesia.

- xl. There have been discrepancies in the SSR findings, application filed and the statement filed. Applicant has used finding to reconcile the anomalies in the application. It is requested that the Authority terminate the investigation.
- xli. Differences between the consumption figures in the finding and the application have not been answered.
- xl.ii. Excessive confidentiality has been claimed by the applicant. Further the CNV is in excess of 30% of the actual costs and that is the reason the claimed dumping margin is 40-50%
- xl.iii. The domestic industry should also indicate where the information is not specific as has been claimed in recital 53 of the application.

L.3 Examination by the Authority

87. As regards the submission of Government of Indonesia that the performance of domestic industry has not been objectively analyzed by the Authority, the Authority holds that the material injury has been assessed after objectively examining all the parameters as specified in the AD Rules and AD Agreement. In this regard, the Authority notes that while the performance of the domestic industry has improved in some of the volume parameters in POI, the performance of domestic industry has steeply declined in other parameters like profits, cash profits, return on investment and inventory. Further, the domestic industry was not in a position to utilize its enhanced capacity despite increase in demand due to presence of dumped imports from Indonesia. The Authority further notes that the domestic industry has suffered material injury on overall basis on account of dumped imports from the subject country.
88. The Authority notes that the domestic industry had enhanced its capacity keeping in view the increase in demand for the subject goods. However, it could not utilize its capacity due to dumped imports from subject country. The Authority notes that price remains the most important factor for deciding the source of supply of subject goods by the consumers and the material on record do not show other factors being the cause of the material injury suffered by the domestic industry.
89. The Authority holds that decrease in global price cannot be the valid reason for the exporters from the subject country to resort to dumping of subject goods. It is immaterial whether the import price of subject goods from Indonesia is higher as compared to the import price of subject goods from China. What is relevant in AD investigations is whether the subject goods have been dumped by the exporters from the subject country and whether the same has caused injury to the domestic industry.
90. As regards the submission of PT. Batang Alum Industrie that they have supplied only a small volume of subject goods to India as they do not have enough surplus goods to export to India, the Authority holds that what is relevant in AD investigation is whether the exporter has exported the subject goods at dumped price and not whether it has exported a huge volume or small volume. The volume of imports is required to be considered in respect of gross imports from Indonesia, which clearly shows an increase over the present injury period. The submission of the exporter in this regard is therefore devoid of merit.
91. As regards the submission that the Indonesian price was in line with the international price the Authority holds that in antidumping investigation what is relevant is whether the subject goods have been exported at dumped price. The examination of the price of the subject goods exported from Indonesia shows that they have been exported to India at dumped prices.
92. As regards the contention of PT. Golden Sari that they have fully cooperated with this investigation the Authority notes that it gave all possible opportunities to the said responding exporter so as to facilitate the submission which is required in the investigation as per the Rules. The said exporter has changed the data submitted multiple times for the same time period without giving a reasonable justification during the verification. The modification in the data was also resorted even after onsite verification and therefore PT. Golden Sari has failed to satisfy the Authority as to accuracy of information provided under Rule 8 of ADD Rules.
93. The Authority notes that the domestic industry was suffering from huge price undercutting which shows that the imported subject goods were the main cause of the deterioration in performance of the domestic industry in respect of profits, cash profits and return on investment. It is not established that material injury suffered by domestic industry is due to competition among domestic producers, as alleged by PT. Golden Sari.
94. The Authority notes that the volume of subject goods imported from Indonesia was more than de minimis level and the dumping margin established was also significant. Therefore, the contention of the exporter that the volume of subject goods imported from Indonesia is low has no merit.

95. The reasons for rejection of the questionnaire response have already been mentioned in this finding under the normal value section. The requirement for providing certified statements duly signed by practicing accountants (other than employees) is essential for accepting the data submitted in the statement and to establish reliability of the information provided by the exporters. This requirement has been made amply clear through the Trade Notice 05/2018 dated 28.2.2018. In this connection the Authority holds that the requirement for submission of important cost and financial statements by the practicing accountants cannot be substituted by the statements certified by the employee of the company, even though he may be a certified accountant.
96. The company has not produced any duly certified documents by technical experts to show that the capacity of the plant and machinery as specified in the business license has declined from 800 Mt to 620 Mt over a period of time. Therefore, the submission of PT. Golden Sari in this regard is devoid of any merit.
97. As regards the contention of PT. Golden Sari that the main input i.e. Ammonia coming as a by-product has no value, the Authority holds that any major input used in PUC needs to be evaluated and valued in order to determine correct cost of production. If inputs are not correctly, and adequately valued, then the resultant cost of production will be understated and to that extent the cost of production of non-PUC will be overstated, which is not only incorrect, but also not admissible under AD Rules.
98. As regards the allegation that essential facts disclosed have not covered any issue that PT. Golden Sari have raised in submission dated 11th September, 2018 on the occasion of the hearing held, it is noted that the disclosure statement and final findings deal with all the issues raised by interested parties in their submission. Further, it is expressly understood that no contentions raised at the time of oral hearing are taken into account unless the same are reproduced subsequently in writing. If a party has raised certain concerns at the time of hearing but has failed to appropriately reproduce the same in writing and substantiate the same, the same cannot be considered for the reason that the parties do drop their arguments after the hearing and after hearing views of opposing parties and appreciating the strengths & weaknesses of their own arguments. In any case, the issues raised by the parties at the time of hearing have been adequately addressed in these findings.
99. As regards the contention that the scope of the domestic industry should be verified during the course of the investigation, the Authority notes that the investigation has not shown that injury determination is in any way biased and impacted due to non-participation of other domestic producers. No information/evidence has been provided by any interested party demonstrating that the fixation of the scope of domestic industry has adversely impacted the injury analysis. In fact, information on record clearly demonstrates that the performance of other domestic producers not forming part of domestic industry does not show materially different position as that of the domestic industry considered in the present findings.
100. As regards the contention that there has been a failure to show efforts made for obtaining a normal value, Authority notes that the normal value is required to be determined on the basis of questionnaire response filed by the exporters unless the Authority comes to a conclusion that the same cannot be adopted. Further, mere reference to prices available on a website does not imply that the same can be adopted for the purpose of determination of normal value at the stage of final findings. Under the rules, the DA is required to determine normal value on the basis of consumption price in the ordinary course of trade and for the like article when meant for consumption in the exporting country. Mere displaying of a price on a website is insufficient to determine normal value of a product. If information on website were sufficient enough for determination of normal value, there would have been no necessity for undertaking elaborate investigations and calling information in prescribed formats.
101. It is clarified that the normal value determined has been adjusted for direct selling expenses. Direct selling expenses are not included either in normal value or export price calculations.
102. As regards the argument that primary market of exporters is their own domestic market in Indonesia, the Authority notes that 543 MT was imported from Indonesia, which is not insignificant having regard to production of the product by the two known manufacturers. In any case, the mere fact that domestic market is the primary market does not imply that the goods have not been exported at dumped prices. For examination of dumping, the relevant consideration/criteria is normal value and export price of the product and not the volume of production sold in domestic market.
103. As regards apparent discrepancies with the SSR findings, the Authority notes that the period of investigation in case of the said Sunset Review Investigation against China is different from POI in the present investigation. Hence, any comparison between the two would tantamount to an exercise in futility. Further, the Authority is undertaking a parallel investigation on imports of subject goods from China. The Authority under Rules is

- obligated to conduct every investigation under the facts and merits of that case. In any case, the Authority has adopted its own verified data instead of solely relying on the information provided by the interested parties.
104. As regards differences in consumption figures in the previous finding and the application, it is clarified that the present final findings are based on investigation conducted by Authority and verified information adopted for the present findings. As far as difference between consumption reported in application and previous findings are concerned, the same were duly examined by the Authority.
 105. As regards the contention that domestic industry should also indicate where the information is not specific, it is clarified that the Authority has recorded the present findings after due satisfaction on the basis of information adopted. All injury information contained in the present findings pertain only to the PUC.
 106. As regards the contention that injury to the domestic industry is due to other factors such as increase in capacity, it is clarified that the Non-Injurious Price (NIP) for the domestic industry has been determined considering the optimum capacity utilization in the past before enhancement of capacities. Further, comparison of NIP with NSR shows that the NIP determined is significantly higher than NSR, thus, showing that the domestic industry is unable to achieve a price which it could have expected even under a condition where plant was optimally utilized. In fact, even the normated cost of production is above the selling price thus showing that the domestic industry has not been able to get a price which would have enabled it to recover at least normated cost. It is thus evident that the injury to the domestic industry is not due to increase in capacities but the dumped imports.
 107. On the spot investigations were conducted at the premises of both the foreign producers. It is noted that whereas PT. Batang Alum Industrie imports OTS from China and thereafter produces Saccharin; PT. Golden Sari imports CBS from China and produces Saccharin. It is noted that even the domestic industry produces Saccharin using both the routes. The normal value in fact has been determined on the basis of the production process leading to lowest cost between the two processes i.e. OTS and CBS.
 108. As regards difference in product, the Authority notes that these are merely different forms of Saccharin. Both the forms are produced in India by the domestic industry and have been imported from subject countries. The mere fact that one of the foreign producers does not produce all the forms of a product does not imply that form of the product cannot be included within the scope of the PUC. Both the forms of the products have been imported from Indonesia during relevant period and have been supplied by the domestic industry.
 109. As regards difference in mesh size, the Authority notes that the exporter has not established a consistent difference in the price and cost of Saccharin based on difference in mesh size. The mere fact that mesh size of the product produced by the domestic industry and foreign producers differs in itself is insufficient. The interested parties are required to identify the difference and quantify its impact before the Authority can take into account the same. The exporter has however identified the difference but has not quantified impact nor demonstrated the existence of the same on a consistent basis in pricing of the product.
 110. As regards the contention that one of the companies has sold one of the products to M/s Shree Vardayini Chemical Industries Private Limited, Authority notes that the same is entirely irrelevant to the aspect of dumping and injury to the defined domestic industry. Dumping is required to be established in respect of total exports made by the company and impact of imports of Saccharin from subject country to India. The mere fact that some sales have been made to one of the domestic producers is entirely irrelevant, particularly when such company is not a part of domestic industry. Further, if M/s Shree Vardayini Chemical Industries Private Limited, is treated as ineligible because of its imports, standing of the petitioner further increases.
 111. As regards the contention that Domestic industry is IP grade while Indonesian produce is technical, BP & USP grade, the Authority notes that by their own claim, these are mere different grades. The exporter is however required to identify its exports, and quantify its impact on normal value, export price, dumping margin, landed price and injury margin. However, the exporter has merely identified possible existence of different grades. It is also noted that the import data does not refer to the grade of a product on a consistent basis. Further, it is also noted that the domestic industry has also produced different grades of the product.
 112. As regards proof of production of different mesh size, Authority notes that relevant evidence in this regard was seen at the time of verification visit and it is seen that the domestic industry in fact produces and sells in different mesh size.
 113. As regards the contention that lower import price has not been admitted by Indonesian producers, as would be seen from the table hereinabove, there is significant decline in import price in the present POI as compared to preceding year. The Indonesian producers have not explained this decline in the import price.

114. As regards the contention that usage of excel for accounting purposes should not prejudice the producer/exporter, it is clarified that use of excel statement per-se has not been the reason for non-acceptance of questionnaire response. As elaborately clarified in the verification report, disclosure statement and hereinabove, the exporter has not been able to satisfy the Authority on reliability of the information provided by the exporter. The exporter has failed to establish that the information provided through excel statements in fact corroborates with books of accounts maintained by the company. Unless the exporter demonstrates that the information provided reconciles fully to books of accounts of the company, the Authority cannot accept the questionnaire response, as, reliability and admissibility of income & expense, assets & liabilities is highly doubtful in such a situation. It is also clarified that the investigating team never refused to verify the information merely because the same was presented in excel formats. In fact, the investigating team clearly informed the exporter that the purpose of verification included ascertaining correctness of information from the records maintained by the company. As stated in the verification report in detail, the exporter has not disputed and has in fact admitted having filed revised set of data at the time of verification visit, which clearly raised significant concerns about reliability of the information.
115. The exporter in fact has admitted that revised allocation of the expenses between PUC and non-PUC was provided at the time of verification visit. Further, perusal of the previous and revised information showed significant variations made in the data. Above all, the exporter modified the data even after verification was completed and filed further revised data after verification visit was completed.
116. As regards Profit and Loss statement, the exporter has admitted having provided significant information at the time of spot verification and they were unable to translate the Profit and Loss statement until after the verification. The mere fact that investigating team collected further information and evidence does not imply that the Authority is bound to use such information thereafter. Once the investigating team has commenced verification at the premises of the exporter, it is quite natural that the Authority has also taken into account the information provided by the exporter at the time of verification. Its acceptance or otherwise however is not guaranteed by the mere fact that such information was taken by the investigating team on record. Further, as stated in verification report, disclosure statement and hereinabove, the exporter made changes in the data even after the physical verification was over.

M. INDIAN INDUSTRY'S INTEREST & OTHER ISSUES

117. The Authority notes that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the DI by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the Country.

N. CONCLUSION

118. After examining the submissions made by the interested parties and issues raised therein; and considering the facts available on record, the Authority concludes that the product under consideration has been exported to India from subject country below their normal values and consequently, the DI has suffered material injury. Material injury has been caused by the dumped imports of subject goods from the subject country during the POI.

O. RECOMMENDATION

119. The investigation was initiated and notified to all interested parties and adequate opportunity was given to the domestic industry, exporters, importers and other interested parties to provide positive information on the aspects of dumping, injury and the causal link.
120. After examining the submissions made by the interested parties and issues raised therein; and considering the facts available on record and having initiated and conducted investigation into dumping, injury and the causal link thereof in terms of the AD Rules and having established positive dumping margin as well as material injury to the domestic industry caused by such dumped imports, the Authority is of the view that imposition of definitive antidumping duty is required to offset dumping and consequent injury. Therefore, the Authority considers it necessary to recommend imposition of definitive anti-dumping duty on imports of the subject goods from subject country in the form and manner described hereunder.
121. Having regard to the lesser duty rule followed by the Authority, the Authority recommends imposition of definitive anti-dumping duty equal to the lesser of the margin of dumping and the margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. Accordingly, definitive antidumping duty as per amount specified in the table below is recommended to be imposed from the date of the Notification to be issued by the Central Government, on all imports of the subject goods originating in or exported from subject country.

Duty Table

S. No.	Heading/ Subheading	Description of goods	Country of Origin/Export	Producer	Exporter	Amount (USD/MT)
1	29251100	Saccharin in all its form	Indonesia	Any	Any	1633.17

** Custom classification is only indicative and the determination of the duty shall be made as per the description of PUC.
The PUC mentioned above should be subject to above ADD even when it is imported under any other HS code.*

122. Landed value of imports for the purpose of this Notification shall be the assessable value as determined by the Customs under the Customs Act, 1962 (52 of 1962) and includes all duties of customs except duties under sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the said Act.
123. An appeal against the order of the Central Government arising out of this finding shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Customs Tariff Act.

SUNIL KUMAR, Addl. Secy. & Director General